

Official Periodical of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA

श्री साई लीला

* Year 18 * Issue 5 * September-October 2018 * ₹ 15/-

* वर्ष १८ * अंक ५ * सितम्बर-अक्टूबर २०१८ * ₹ १५/-



... 100 ...

श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव - २०१८ प्रारम्भ दिन (गुरुवार, दिनांक २६.७.२०१८)



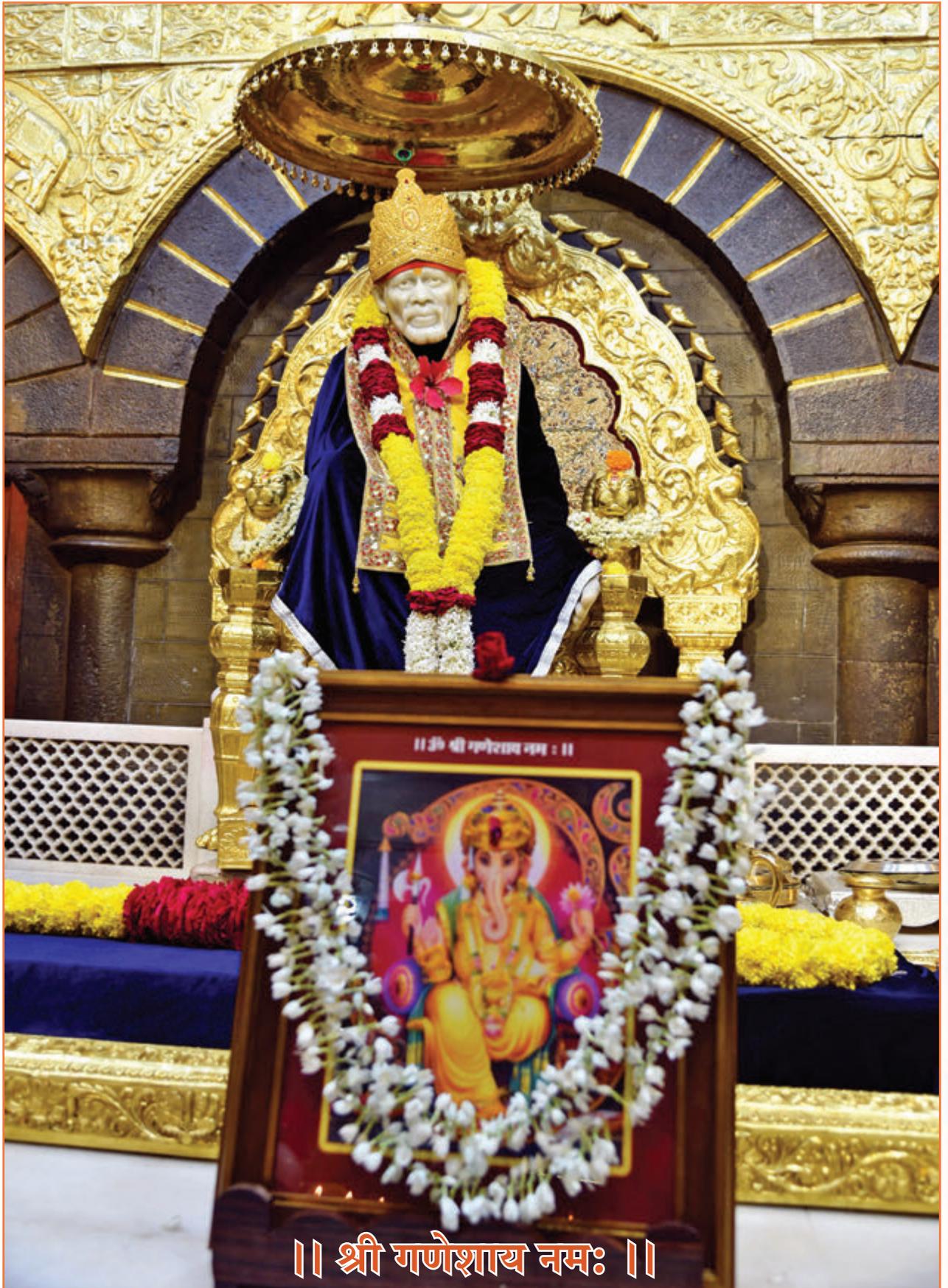
प्रारम्भ दिन वीणा (संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम), 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (संस्थान के विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाक्चौरे), श्री साईं की तस्वीर (विश्वस्त अॅड. मोहन जयकर व उप जिलाधिकारी श्री धनंजय निकम) की शोभायात्रा समाधि मंदिर से द्वारकामाई की ओर; साथ में संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, उप जिलाधिकारी श्री मनोज घोडे पाटिल, सौ. प्रिया कदम, सौ. सरस्वती वाक्चौरे, सौ. स्मित जयकर, ग्रामवासी और साईं भक्त...



'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ के अखण्ड पारायण का शुभारम्भ - संस्थान के विश्वस्त अॅड. मोहन जयकर...



पत्नी सहित संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम के हाथों श्री साईं बाबा की विधिवत् पादपूजा...



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



श्री साईं पुण्यतिथि २०१८ के समापन दिन मा. प्रधान मंत्री श्री. नरेंद्र मोदी जी श्री साईं समाधि के दर्शन करते हुए; साथ में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी. विद्यासागर राव, मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस व अहमदनगर ज़िला के अभिभावक मंत्री प्रा. राम शिंदे...



श्री साईं समाधि दर्शन के बाद मा. प्रधान मंत्री श्री. नरेंद्र मोदी जी का संस्थान की ओर से हार्दिक सत्कार करते हुए संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाक्चौरे, श्री बिपीनदादा कोल्हे, अँड. मोहन जयकर, श्री राजेन्द्र सिंग व विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा श्रीमती योगिताताई शेलके आदि मान्यवर...

SHREE SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

Management Committee

Dr. Suresh Kashinath Haware (Chairman)	Sri Chandrashekhar Laxmanrao Kadam
Smt. Rubal Prakher Agarwal, I.A.S. (C.E.O.) (Vice Chairman)	
Dr. Manisha Shamsunder Kayande (Member)	Sri Pratap Sakhahari Bhosle (Member)
Adv. Mohan Motiram Jaykar (Member)	Sri Bhausahab Rajaram Wakchaure (Member)
Dr. Rajendra Rajabali Singh (Member)	Sri Ravindra Gajanan Mirlekar (Member)
Sri Bipindada Shankarrao Kolhe (Member)	Sri Amol Gajanan Kirtikar (Member)
Sou. Yogitatai Shelke (Member)	

Sri Dhananjay Nikam (Deputy Collector)	Sri Manoj Ghode Patil (Deputy Collector)
Sri Babasaheb Ghorpade (Deputy Executive Officer - in charge)	

Internet Edition - URL:<http://www.shrisaibabasansthan.org>

श्री साई लीला

वर्ष १८ अंक ५

सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी
श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी

कार्यकारी सम्पादक : विद्याधर ताठे

SHRI SAI LEELA

Year 18 Issue 5

Editor : Chief Executive Officer
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

Executive Editor : Vidyadhar Tathe

अंतरंग

❖ सम्पादकीय	६
❖ On the occasion of the Centenary Year of Sai Baba's Samadhi : Dr. Subodh Agarwal	9
❖ "Establishing Educational Complex is my Dream..." : Chandrashekhar Kadam	20
❖ Musings of Sri D. M. Sukthankar, Former Chairman of the Sansthan (1994-2004)...	23
❖ साई भक्तों की सम्पूर्ण संतुष्टि, यही लक्ष्य : श्रीमती रुबल अग्रवाल	२६
❖ अनादि... अनंत... सर्वव्याप्त... श्री साई नाथ : सुरेश चन्द्र	३०
❖ साई लीला : कल, आज और कल भी... : दास कुम्भेश	४५
❖ बेरंग जीवन चित्र... साई के रंगों से हुआ रोशन! : सुनील शेगाँवकर	५७
❖ जासु नाम सुमिरत एक बारा उतरहिं नर भवसिंधु अपारा : मदन गोपाल गोयल	६१
❖ त्रिकालदर्शी श्री साई... : राजेन्द्र जसूजा * संजय तिवारी	६३
❖ कई रूप समाये हैं साई रूप में! : श्रीमती अरुणा वि. नायक	६८
❖ साई! एक भी तू, अनेक भी तू... मेरे जीवन का आधार भी तू!! : विनय घासवाला	७१
❖ साई का एक पंछी, मैं : दीपक दुबे 'दानिश'	७२
❖ Shirdi News	75

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● Computerised Typesetting: Computer Section, Mumbai Office, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● Office : 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24166556 Fax : (022) 24150798 E-mail : saidadar@sai.org.in ● Shirdi Office : At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● Annual Subscription: ₹ 50/- ● Subscription for Life : ₹ 1000/- ● Annual Subscription for Foreign Subscribers : ₹ 1000/- (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● General Issue : ₹ 8/- ● Shri Sai Punyatithi Annual Special Issue : ₹ 15/- ● Published and printed by the Chief Executive Officer, on behalf of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at SAP Print Solutions Pvt. Ltd., 28 Lakshmi Industrial Estate, S. N. Path, Lower Parel (W), Mumbai - 400 013 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

सम्पादकीय



सन् १९१८ में, मंगलवार, दिनांक १५ अक्टूबर को, दशहरा-विजयादशमी के दिन दोपहर २.३० बजे श्री साई बाबा ने देह छोड़ कर समाधि ली। इसलिए इस दिन का महत्त्व साई भक्तों के लिए असाधारण है। इस साल के दशहरा-विजयादशमी का दिन खास मायने रखता है। इस दिन, गुरुवार, दिनांक १८ अक्टूबर, २०१८ को श्री साई समाधि को १०० साल पूरे हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में शिर्डी साई बाबा संस्थान की ओर से रविवार, दिनांक १ अक्टूबर, २०१७ से गुरुवार, दिनांक १८ अक्टूबर, २०१८ तक इस कालावधि में श्री साई बाबा समाधि शताब्दी वर्ष के रूप में बड़े पैमाने पर मनाया जा रहा है।...

शिर्डी में धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रबोधनात्मक आदि कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी तरह देश के मुख्य शहरों में साई पादुका दर्शन कार्यक्रम आयोजित किये गये। हज़ारों की तादाद में भक्त इन कार्यक्रमों में शामिल हुए तथा पादुकाओं के दर्शन से लाभान्वित हुए। “शिर्डी में चींटियों की क़तारें लगेंगी,” यह साई वचन सच होता दिखाई दे रहा है। शिर्डी में साई स्मरण हो रहा है। साई नाम का जयघोष गूँज रहा है। देश भर में, विदेशों में साई प्रेरणा से कई धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रबोधनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।...

यह श्री साई समाधि शताब्दी वर्ष संस्थान की ओर से किस तरह मनाया गया इसका संस्थान के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप में वर्णन इस अंक में प्रकाशित किया गया है।...

इसी प्रकार श्री साई समाधि शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा शिर्डी में और अन्यत्र सम्पन्न हुए कार्यक्रमों का सचित्र ब्यौरा संस्थान द्वारा प्रकाशित श्री साई लीला द्वैमासिक पत्रिका के अंकों में समय-समय पर दिया गया। इसके लिए, शिर्डी वृत्त के लिए अधिकाधिक पृष्ठ दिये गये। इन अंकों को पाठकों ने बहुत ही सराहा।...

संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे व उनके सहयोगी सदस्यों का मार्गदर्शन और साई भक्त व ग्रामवासियों के योगदान के कारण ही संस्थान प्रगति-पथ पर चल रहा है।...

साई जीवन में घटित साई के निरंतर और सर्वत्र व्याप्त अस्तित्व की विलक्षण प्रतीति देने वाली घटनाओं को उजागर करने वाला यह श्री साई समाधि शताब्दी विशेषांक प्रेषित करते हुए विशेष आनंद हो रहा है। आशा है कि पाठकों के लिए यह अंक ज़रूर संग्राह्य होगा।...

विद्याधर ताठे

कार्यकारी सम्पादक

संचार ध्वनि : (०)९८८१९०९७६५

vidyadhartathe@gmail.com

तिरुपति में केशदान... शिर्डी में रक्तदान

प्रिय साई भक्त,

प्यार भरा नमस्कार!

श्री साई बाबा समाधि शताब्दी महोत्सव के उत्तरार्ध में आपसे संवाद करते हुए विशेष आनंद हो रहा है। क्योंकि रविवार, दिनांक १ अक्टूबर, २०१७ से गुरुवार, दिनांक १८ अक्टूबर, २०१८ तक यह साल श्री साई बाबा समाधि शताब्दी वर्ष के रूप में सर्वत्र उत्साह भरे, मंगलमय वातावरण में मनाया जा रहा है। पूरे देश में जगह-जगह पर आयोजित किये गए साई पादुका दर्शन समारोह कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुए। शताब्दी महोत्सव अवधि में लगभग ३ करोड़ से भी अधिक साई भक्तों ने शिर्डी में आकर साई समाधि दर्शन का लाभ उठाया।

श्री साई बाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी का कारोबार हाथ में लेने के बाद संस्थान की वर्तमान व्यवस्थापन समिति ने साई भक्त को केन्द्रस्थान में रख कर काम की शुरुआत की; और साई भक्तों के लिए कई प्रकार की अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध कराने को प्राधान्य दिया।

सभी साई भक्तों को श्री साई बाबा का दर्शन सुखदायी व आनंददायी हो, इसलिए इलेक्ट्रॉनिक टाइम दर्शन सुविधा, बिना सिफ़ारिश वी.आई.पी. दर्शन पास सुविधा, बाल-माता, गर्भवती महिला, वृद्ध, दिव्यांग और रुग्णों के लिए निःशुल्क सीधा दर्शन आदि सुविधाएँ शुरू की गई हैं। दर्शन क्रतार वातानुकूलित की गई है। दर्शन क्रतार में से श्री साई बाबा के दर्शन करने आने वाले साई भक्तों का तिलक लगा कर स्वागत किया जाता है। साई भक्तों को दर्शन क्रतार में निःशुल्क चाय, कॉफी, दूध व आर.ओ. वॉटर और दर्शन कर बाहर निकलते समय प्रसाद स्वरूप बूँदी व उदी पैकेट देने की व्यवस्था की गई है।

संस्थान की ओर से प्रकाशित की जाने वाली सभी किताबों पर सहूलियत दी जा रही है। शिर्डी एफ.एम. १०३.०७ यह बहुप्रतीक्षित केन्द्र शुरू किया गया है। इसी प्रकार शिर्डी में आने वाले श्रद्धालुओं को विविध ऑनलाइन सुविधाओं की जानकारी तत्काल मिलने के लिए मंदिर परिसर में मुफ्त वाय-फाय सुविधा शुरू की गई है।

ऐतिहासिक बने जैसी रक्तदान प्रतिष्ठित योजना क्रियान्वित की गई है। शिर्डी में आने वाले भक्तों को रक्तदान करने का आवाहन संस्थान की ओर से किया जा रहा है। रक्तदान करने वाले भक्तों को दर्शन में प्राधान्य देने की व्यवस्था की गई है। इसलिए तिरुपति में जैसे केशदान, उसी प्रकार शिर्डी में रक्तदान की प्रथा शुरू हो गई है। कई रक्त संग्रह केन्द्रों को इस काम में जोड़ लिया गया है। इकट्ठा हुआ रक्त महाराष्ट्र भर में जरूरतमंदों को उपलब्ध कराया जा रहा है। हर रोज १०० से १५० भक्त रक्तदान कर रहे हैं, यह खुशी की बात है।

शेगाँव की तरह शिर्डी में भी साई सेवक योजना चलाई जा रही है। २१ व्यक्तियों का एक समूह ऐसे १० समूह हर सप्ताह में शिर्डी में मुकाम कर सेवा दे रहे हैं।

साई बाबा के मंदिर में प्रति दिन जमा हो रहे दो टन फूलों से अगरबत्तियाँ बनाने की परियोजना क्रियान्वित हो गई है। इन अगरबत्तियों से साई भक्ति का सुगंध जगह-जगह महक रहा है। इससे २०० महिलाओं को रोजगार मिला है।

आत्महत्या किये किसानों के परिवार सदस्यों को रोजगार हेतु छोटे उद्योग चलाने के लिए आर्थिक मदद करने की योजना महाराष्ट्र में शुरू है। इस योजना के अंतर्गत कई लोगों ने छोटे उद्योग शुरू किये हैं।

अनेक वर्षों से बहुप्रतीक्षित कला, वाणिज्य व शास्त्र विभागों का महाविद्यालय शिर्डी में साई संस्थान द्वारा शुरू किया गया है।

श्री साई बाबा संस्थान के दो अस्पताल शिर्डी में हैं। शिर्डी परिसर और राज्य से आये गरीब और जरूरतमंद रुग्णों

पर श्री साई नाथ अस्पताल में निःशुल्क वैद्यकीय उपचार किये जाते हैं। श्री साई बाबा सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में दिल, पृष्ठवंश, घुटने की बीमारियों की शल्य चिकित्साएँ निःशुल्क या अल्प दरों में की जाती हैं। इसी अस्पताल में गुर्दे की बीमारी से त्रस्त रुग्णों के लिए निःशुल्क डायलिसिस सेवा शुरू की गई है।

बाबा की कृपा से संस्थान द्वारा चलाये जा रहे उपक्रमों की जानकारी भक्तों को देने के लिए 'साई अर्पण सेवा' द्वैमासिक पत्रिका शुरू की गई है। इसी तरह मोबाइल पर चलने वाला 'साई ऐप' भी शुरू किया गया है।

रु. २५,०००/- व उससे अधिक दान देने वाले साई भक्तों को साई पादुका अंकित चाँदी का सिक्का भेंट स्वरूप दिया जा रहा है।

मंदिर परिसर और प्रसादालय में ग्रेनाइट्स लगाये गये हैं। १० मेगावैट क्षमता की सोलर परियोजना का निर्माण किया गया है। ऐसे कई काम हो गये हैं, कुछ बाकी हैं। आने वाले दिनों में वे पूर्ण करने के लिए हमारे प्रयास जारी रहेंगे।...

कतार का बड़ा संकुल, साई सृष्टि, सायन्स पार्क, वैक्स म्यूज़ियम, लेज़र शो, होलीग्राफ़िक शो, हरित शिर्डी परियोजना, घन कचरा प्रबंधन परियोजना, कला दालन, पुस्तकालय, आय.ए.एस. अकादमी, मंदिर परिसर और शिर्डी परिसर में एल.ई.डी. स्क्रीन व सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाना, मुम्बई-शिर्डी मार्ग पर हर ३० कि.मी. के बाद पालकी आराम स्थलों का निर्माण, निलवंडे बाँध पाइप लाइन द्वारा पानी आपूर्ति योजना को कार्यान्वित करना, ऐसी कई परियोजनाओं पर अमल करना है। सभी सुविधाओं से युक्त ऐसे एक अत्याधुनिक शैक्षणिक संकुल का सुसज्जित ऑडिटोरियम सहित निर्माण करना, इसके साथ ही सर्वसाधारण रुग्णालय, सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, मेडिकल व नर्सिंग कॉलेज आदि मिला कर एक भव्य वैद्यकीय संकुल का निर्माण करना है। १०० कॉट्स का कैंसर अस्पताल का निर्माण करना है। बाबा के कृपाशीर्वाद से और भक्त तथा ग्रामवासियों के सहयोग से यह सब हो जायेगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है। विनती है कि संस्थान की योजनाओं में भक्त तथा ग्रामवासी सहयोग दें।



रुबल अग्रवाल (भा.प्र.से.)
मुख्य कार्यकारी अधिकारी



चन्द्रशेखर लक्ष्मणराव कदम
उपाध्यक्ष



सुरेश काशिनाथ हावरे
अध्यक्ष

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी

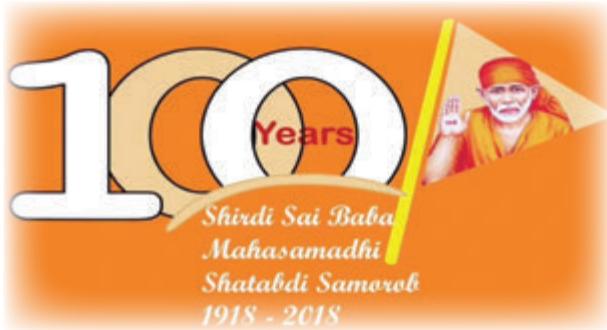
श्री साई का स्वरूप आँखों के सम्मुख लाओ, जो वैराग्य की प्रत्यक्ष मूर्ति और अनन्य शरणागत भक्तों के आश्रयदाता हैं। उनके शब्दों में विश्वास लाना ही आसन और उनके पूजन का संकल्प करना ही समस्त इच्छाओं का त्याग है। हमारे लिए वे ईश्वरावतार हैं। वे अत्यन्त क्षमाशील, शांत, सरल और संतुष्ट थे। यद्यपि वे शरीरधारी थे, पर यथार्थ में निर्गुण, निराकार, अनन्त और नित्यमुक्त थे। गंगा नदी समुद्र की ओर जाती हुई मार्ग में ग्रीष्म से व्यथित अनेकों प्राणियों को शीतलता पहुँचा कर आनंदित करती है, फसलों और वृक्षों को जीवन-दान देती है और जिस प्रकार प्राणियों की क्षुधा शांत करती है, उसी प्रकार श्री साई संत-जीवन व्यतीत करते हुए भी दूसरों को सान्त्वना और सुख पहुँचाते हैं।

- श्री साई सत् चरित -

On the occasion of the Centenary Year of Shri Sai Baba's Samadhi :

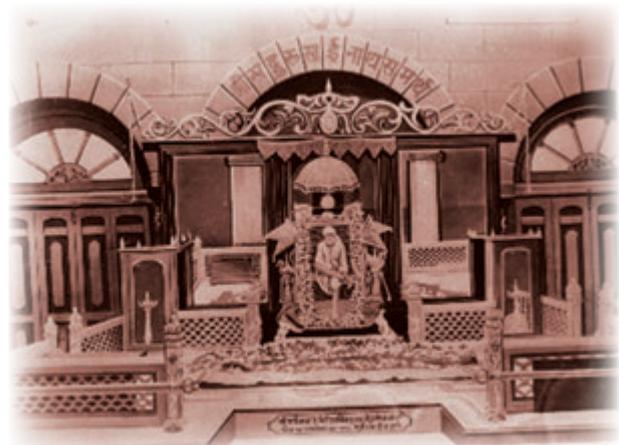
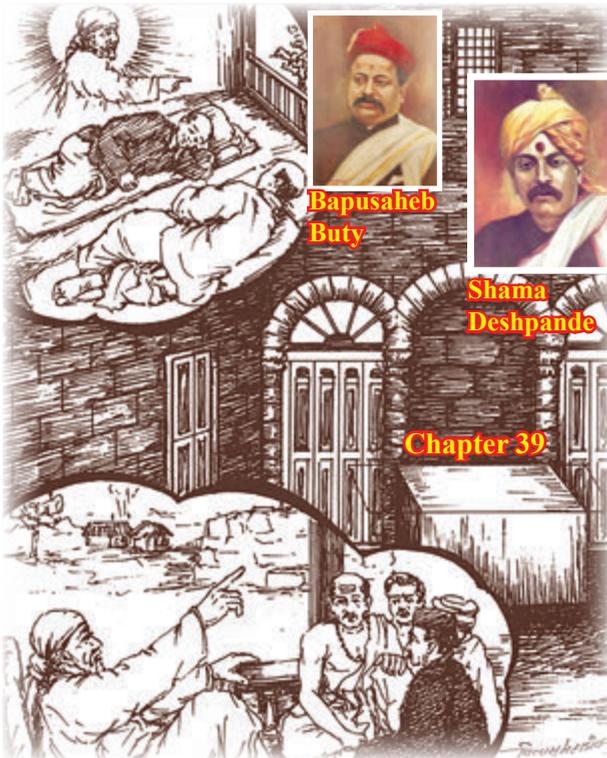
O Sai! You suffered for me, giving me life again;
Forever I'll cherish; forever my chant roars, only for You.
O Sai! You bled for me, giving me life again;
Forever I'll cherish; forever my chant roars, only for You.

The land on which the Samadhi Mandir in Shirdi stands was actually a neglected piece of



ground which was tended by Baba as a garden. It was in fact constructed as a wada (a large private house) during the final years of Baba's life on

the earth by Shriman Gopalrao Mukund alias Bapusaheb Buty, a multi-millionaire devotee of Baba, who was a resident of Nagpur. He came into Baba's divine fold just ten years before Baba's Mahasamadhi. Originally, the wada was constructed here with the intention of having a rest house with a temple for Murlidhar (Lord Krishna). Once, when Bapusaheb Buty was sleeping beside Shama, they shared the same dream. Baba appeared and said, "Let there be a wada with a temple so that I can satisfy the desires of all." Both of them sketched a plan and through Kakasaheb Dixit got instant approval of Baba. Buty asked Baba, whether a statue of Murlidhar (Lord Krishna) could be installed there. Baba approved it and replied, "When the temple is built, we shall inhabit it and ever afterwards live in joy." The temple construction started in 1915. Since the temple was built in stone, it was called dagadi (stone) wada. When the temple construction was in progress, Baba's health was deteriorating. On the day of Mahasamadhi on Tuesday, 15th October 1918, the last words of Baba were, "I



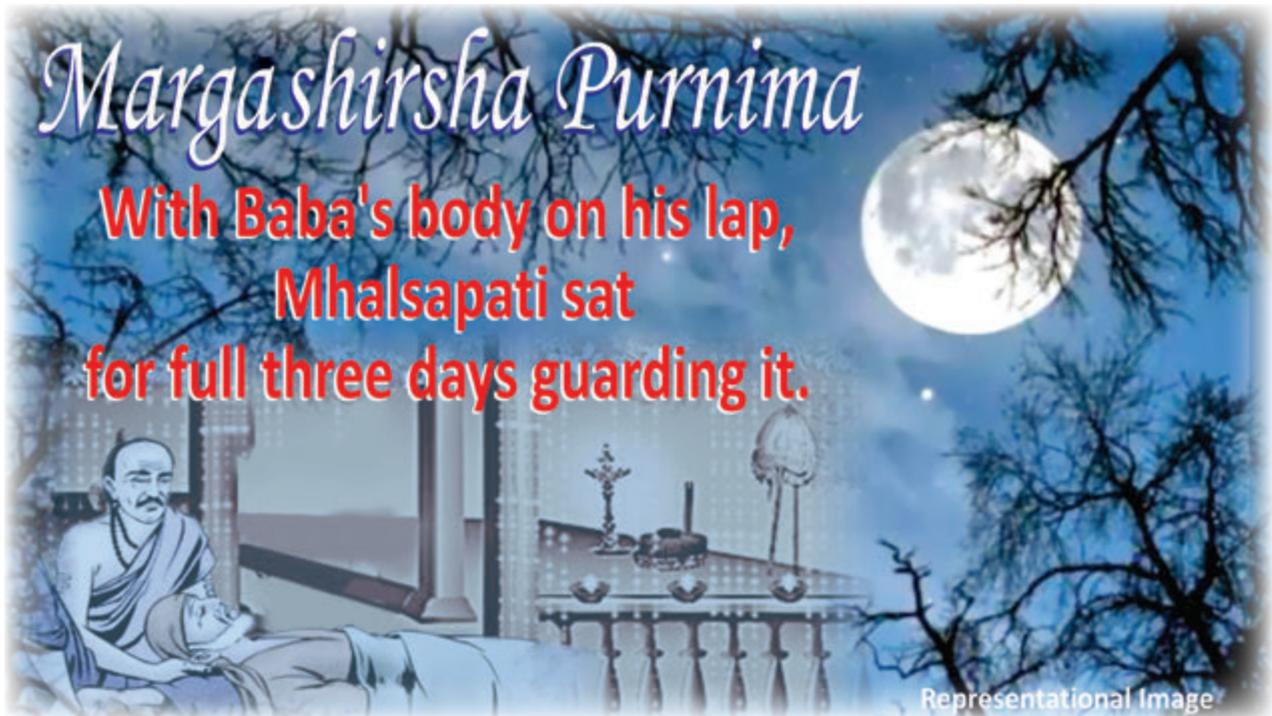


am not feeling well in the Masjid. Carry me to the dagadi wada". Baba's divine mortal body was buried 36 hours after His Mahasamadhi. Following the burial, a photograph of Baba was placed on a throne on the tomb which remained there until the present

active and vigorous even from the tomb."

Echoing these divine words and attracting millions from all over the world, the Shirdi Sai Baba temple in the village of Shirdi in the Maharashtra state of India houses the tomb of the God Who once walked the earth.

As described in the chapters 43 and 44 of Shri Sai Sat Charita, Sai Baba attained the Mahasamadhi and left His mortal coil on the day of Vijayadashami, also known as Dussehra, dated 15th October 1918. Thirty-two years before that, i.e. in 1886 Baba had made an attempt to cross the border line by attaining Samadhi for three



statue was installed in 1954. Installed thirty six years after His Mahasamadhi on the 7th October 1954, on Vijayadashami day, the statue has an interesting history. Once, a high quality Italian marble arrived at Mumbai dock, which no one claimed as theirs. Therefore, it was auctioned and the buyer donated it to Baba's temple. The temple authorities commissioned the task of carving Baba's statue to a sculptor from Mumbai, named Balaji Vasant Talim. When he was struggling to grasp the face of Baba from an old ruined picture of Baba, Baba appeared in his dream and showed His face from multiple angles enabling the sculptor make the statue meticulously. Baba promised before His Mahasamadhi, "I shall be

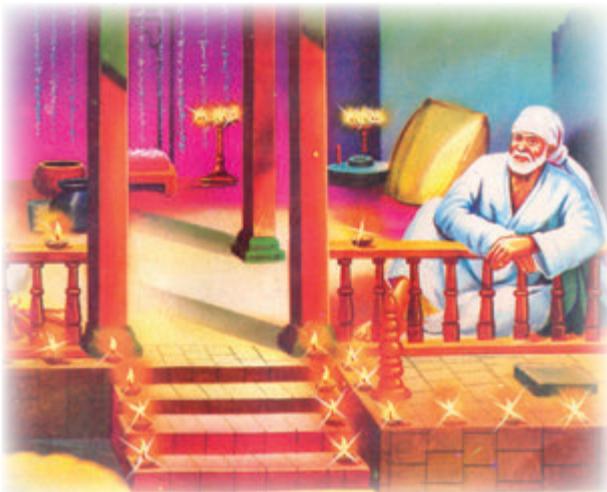
days. On a Margashirsha Purnima (*The full moon day in the auspicious month of Margashirsha of the traditional Hindu calendar, is celebrated as 'Margashirsha Purnima'. Hindu devotees worship the Moon God as it is believed that on this day, Moon was blessed with 'Amrit'.*), Baba suffered from a severe asthma attack. To do away with it, Sai decided to take His Prana (life force) high up and go into the Samadhi. He said to Mhalsapati, "Protect my body for three days! If I return, it will be all right; if I do not, bury my body in that open land (pointing to it) and fix two flags there as a mark!" After saying this, Baba rested His head on the lap of Mhalsapati at about 10 p.m. It seemed as if He was lying there, living



and yet lifeless and immovable. He quit breathing and didn't even maintain a pulse. All the people, including the villagers came there and wanted to hold an inquest and bury the body in the place, pointed by Baba. But, Mhalsapati sternly resisted all such suggestions. With Baba's body on his lap, he sat vigil. After being flat for three days, Baba finally showed signs of life at 3 a.m.... His involuntary nerves became refreshed and started working with newly replenished life. Rolling His eyes and stretching His limbs, Baba regained consciousness.

After this, Baba kept His physical seat in the Dwarkamai Masjid intact for another thirty-two years!

This piece of writing would be lamentably incomplete without offering my reverential thanks and gratitude to Mhalsapati whose astonishing role in maintaining the course of Divine decree and destiny stands unforgettable, and also remains



ever vivid and heartwarming. And, I, even at the risk of repetition, cannot refrain from availing myself of this opportunity of paying a sincere tribute of my personal love and respect to him. But, for his purity, patience and perseverance, as well as his dedicated belief in the truth of Sai Baba's words, the year of the Centenary celebrations of Sai Baba's Samadhi would certainly have been different.

Mhalsapati had a unique relationship with Sai, and enjoyed the benefit of forty to fifty uninterrupted years with Him. He may be considered among the foremost of His devotees. He was the first to greet him saying, "Aao Sai" on His second arrival in Shirdi. Only Mhalsapati and one other devotee, named Tatyia Kote Patil were allowed to stay with Baba in the mosque at night. The three of them would lie like spokes on a wheel, with their feet touching and their heads facing north, east and west respectively.

As I mentioned earlier, an idea had initially struck Bapusaheb Buty's mind that in the center of the wada - which is now known as Samadhi Mandir - an idol of Murlidhar (Lord Krishna with the flute) be installed.

The name of Murlidhar (Lord Krishna with the flute) just flows into my mind reminding me of the following story :-

Once, Lord Krishna - the Supreme Personality of God head - met Draupadi, and told her, "With the powers of Hari, Brahma and Indra, a mighty person has taken birth on the earth. He is the third Pandava, Arjun, son of my father's sister. He is one year younger than me. *It is from a part of me, Arjun has taken birth. We are the same soul residing in the different bodies.*"



It is mentioned in the Bhagvad Gita itself that, Lord Krishna did reveal the Karma Yoga to the Sun God and then the Sun God to His son Vaivasvata Manu and so on; but it got lost in course of time [BG : 4.1, 2]. So, He again told that secret Yoga only to Arjun, because *Arjun was all - a trusted and intimate friend, relative, devotee and alter ego - of Him.*

I can honestly think of myself being less qualified and less deserving than Arjun to have



received the Shrimad Bhagvad Gita Upadesh. Nevertheless, intoxicated with the delight of true devotion mingled with deep affection, and having a heart totally surrendered to Him, I endlessly commit the impertinent mistake of calling Shirdi Sai Baba as my friend, Who is, in reality, my Eternal Lord. Nonetheless, it's a universal truth that all His devotees are as dear to Him as Madhavrao Deshpande, whom He called as 'Shama'; and if Baba - in the Samadhi Mandir - is considered as an alter ego of Lord Krishna, then Shama must be viewed as Arjun. And, consequently, I have no qualms about placing myself on a par with Arjun and Shama.

I evidently started feeling a real sense of kinship with Sai Baba since the year 1985. It just so happened that my parents had gone on a pilgrimage to Shirdi that year and, on return, my father wished me to go there to have Sai's Darshan. His wish was naturally a command for me. I came to Shirdi with my family the same year.

The moment I entered the divine sanctum sanatorium of the Samadhi Mandir, I heard this voice buzzing into my ears :-

"Achchha, to tum aa gaye ho, maine hi tumhare pita se kahakar tumhe yahan bulaya hai."... (So, you have come. I had asked your father to send you to me!)

I was completely bewildered and looked hurriedly in all directions to identify the speaker in the awful crowd of devotees all around, but could find none. The Sai Baba's Madhyan Aarati (Afternoon Aarati) had just started... But, the same 'voice' was speaking to me constantly, ***"Achchha, to tum aa gaye ho, maine hi tumhare pita se kahakar tumhe yahan bulaya hai."...*** ***"Achchha, to tum aa gaye ho, maine hi tumhare pita se kahakar tumhe yahan bulaya hai."...***

Finally, after struggling with all my failed attempts to recognize the caller, I made obeisance, and bowed down humbly to the Samadhi of the crowned Maharaj, Who was seated there on His throne for the protection and well-being of all His devotees. And, as my forehead touched His Samadhi, my ears heard the same 'voice'- ***"Achchha, to tum aa gaye ho, maine hi tumhare pita se kahakar tumhe yahan bulaya hai."...***



While I was still holding on to Baba's blessed Feet and concentrating on His Samadhi, the truth quickly dawned upon me and I could in an instant recognize unmistakably that this 'voice' was originating from the Samadhi of the Absolute Reality which is immortal and intransient rather than from the mouth of any mortal being.

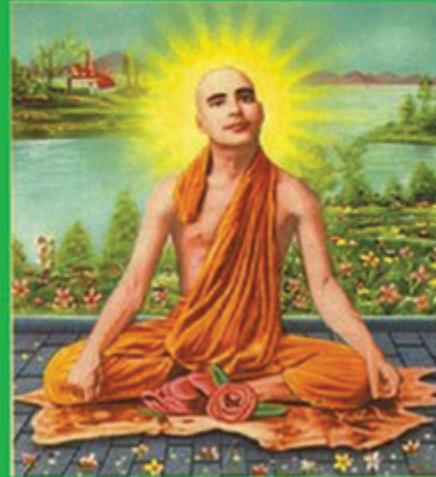
*"Before Sai created the stars
He knew me by name, counted my days
He had a plan from the start
To turn me around, winning my heart"*

Here, I am feeling an irresistible desire to reveal the true character of this 'voice' and the truth of it through my own experiences.

The epiphany of this 'voice' helps me to revive the picture of Swami Ram Tirtha to my mind. Swami Ram Tirtha, a direct descendant of Goswami Tulsidas, the immortal author of the widely read Ramcharitmanas, is one of the brightest jewels of India's genius. Born in 1873, at Muraliwala, in the district of Gujranwala, Punjab (now in Pakistan), he belongs to that prophetic group of inspired seers, who rang up the curtain of Indian Renaissance and ushered in the era of a strongly positive, aggressive and all-

The Story of Swami Rama Tirtha

The Poetic Monk Of Punjab



Puran Singh

conquering spirituality. He was a great ascetic and an enlightened mystic. He practiced Yoga on the banks of the river Ravi. Later he lived in the forests of Brahmपुरi, on the banks of the river Ganga, five miles away from Rishikesh (in Uttarakhand - a state in the northern part of India) and attained Self-realization. From him India has inherited the dual gems of Vedantic boldness and spiritual patriotism. His spiritual patriotism is something unique and grand. He is ever alive as a dynamic soul-force, ever shedding the spiritual effulgence in the heart of every seeker after the Truth. His teachings are inspiring, elevating and illuminating - a fountain of his intuitive experiences.

Two of Swami Ram Tirtha's closest disciples, Narayan Swami and Puran Singh were privileged to write biographies of their Guru. Puran Singh's 'The Story of Swami Ram : The Poet Monk of Punjab' appeared in 1924, wherein he writes : One night, after dinner, when Swami Ram went to sleep, around 12.30 at night, he (Puran Singh) heard a feeble sound as though someone is saying "Ram... Ram... Ram..." Puran Singh got up and opened the door - but no one was

there in the corridor. After an interval of about half an hour, he again heard the same sound. This time he entered the room of Swami Ram. To his utter surprise, he discovered that though Swami Ram Tirtha was fast asleep, the room was reverberating with Ram Nam which was coming from his body rather than from his mouth.

There's nothing more satisfying than finding the perfect analogy to explain the 'voice' that I heard in the Samadhi Mandir!

The 'voice' emanating from the Samadhi still speaks, and the whole world listens :-

1. Whoever puts his feet on Shirdi soil, his sufferings would come to an end.

2. The wretched and miserable would rise into plenty of joy and happiness, as soon as they climb steps of my Samadhi.

3. I shall be ever active and vigorous even after leaving this earthly body.

4. My tomb shall bless and speak to the needs of my devotees.

5. I shall be active and vigorous even from the tomb.

6. My mortal remains would speak from the tomb.

7. I am ever living to help and guide all, who come to Me, who surrender to me and who seek refuge in Me.

8. If you look to me, I look to you.

9. If you cast your burden on me, I shall surely bear it.

10. If you seek my advice and help, it shall be given to you at once.

11. There shall be no want in the house of my devotees.

These are the eleven assurances that Sai Baba disseminated to the world!

In my pursuit to meditate my mind and intellect on Sai Baba, I make many a reading of the Shri Sai Sat Charita.

The Parayan of the Shri Sai Sat Charita not only enlightens the unawareness in me, but also gives me strength and understanding to justify the ways of Sai to devotees.

Once, it so happened that when one of His devotees Damu Anna asked Baba two questions,

Damu Anna



He replied with a grim smile :

1. **Damu Anna** : O Deva! There is always an awful crowd of devotees all around You. Do all these devotees get benefit from their Shirdi pilgrimage?

Baba (Pointing to a tree) : Damu! Look at that mango tree, bloomed with some small, innocuous looking flowers. Do you think all these blossoms will turn into fruits? What a splendid crop it would be, if all the florets stay to convert into fruits. But, no, certainly not, by no means... Winds pick up some of them and make their fall. Winds tear off some of the fruits which are still in their infancy and let them drop. Only a very few survive and ripen into fruits.

2. **Damu Anna** : O Deva! How hopelessly adrift I would feel in a sea of chaos and meaninglessness after You leave Your mortal coil!

Baba : Damu! Don't worry. I shall be ever active and vigorous even after leaving this earthly body. You just call out my name, and you know wherever I am I'll come running.

(Shri Sai Sat Charita, Chapter XXV)

That promise Baba kept up not to Damu Anna alone, but to all His devotees before 1918 and has been keeping up after 1918. He is still with all His devotees. He is still guiding all of us.

Sai Baba is always - true to His words - active and vigorous even from His Samadhi.

I am surprised to find that the stories narrated in the Shri Sai Sat Charita have an astonishing verisimilitude with the frequent happenings in my own life.

On the occasion of the Centenary Year of Sai Baba's Samadhi, I recapitulate the hair-raising event that happened at the Dwarkamai Masjid on the Diwali day in the year 1910 A.D. Sai was sitting near the wall of the Masjid facing south and warming Himself against the brightly burning Dhuni. Suddenly, He pushed His arm into the Dhuni; the arm was scorched and burnt badly. None of His devotees, including Shama, present there, could understand the reason of Baba doing so; and nobody had the cheek to ask Him to unfold this mystery. Ultimately, Shama who was quite free with Him because of his '72 generations' old association, mustered courage and asked, "O Deva, for what have You done this?" Then, Sai revealed the vital truth :- "The wife of a blacksmith at some distant place was working the bellows of a furnace; her husband called her. Forgetting that her child was on her waist, she ran hastily and the child slipped into the furnace. I

immediately thrust my hand into the furnace and saved the child. I do not mind my arm being burnt; but I am glad that the life of the child is saved." (Shri Sai Sat Charita, Chapter VII)

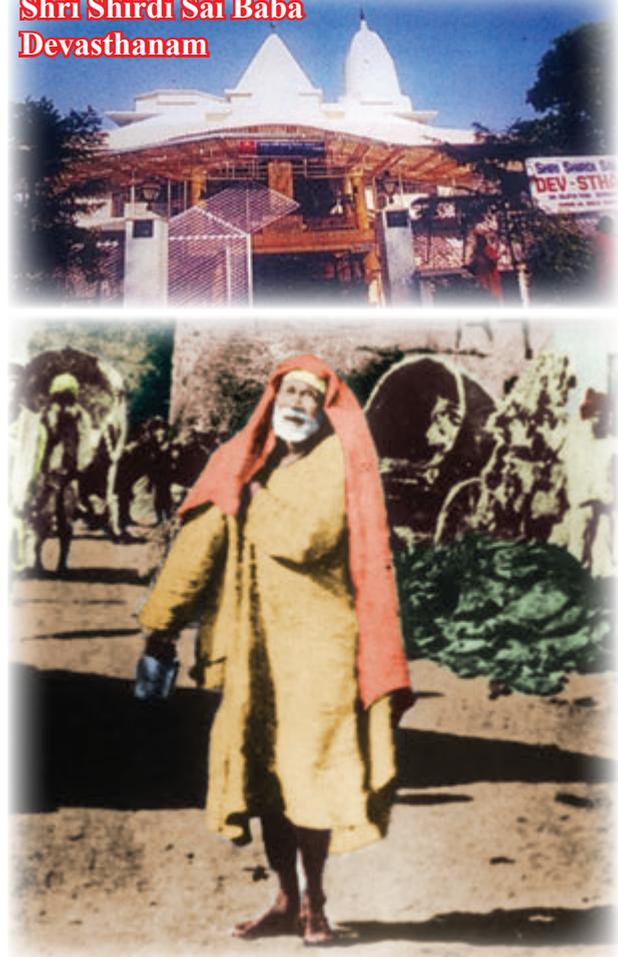
Lo! The blacksmith and his wife had cast their burden on Sai, and He surely bore the brunt.

Like the blacksmith and his better half, I, too, have my own best story to tell :-

I live in Dehra Dun in the state of Uttarakhand. The residents of this city are blessed with a magnificent temple, located at about 10 kilometers away from my house, called the Shri Shirdi Sai Baba Devasthanam. It attracts thousands of devotees of all religions, castes and creed every day, and creates the Sai awareness among the people in Uttarakhand, which is often called as the Land of the Gods. Before I resume my narration, I experience a flashback of the days, as narrated in the Shri Sai Sat Charita, when Baba



Shri Shirdi Sai Baba Devasthanam



used to beg food from door to door in Shirdi, albeit He could turn a beggar into a king just by putting single glance upon him. And truly, to a beggar like me, He enabled, against all hopes, to buy a brand new Esteem Maruti car.

There shall, undoubtedly, be no want in the house of His devotees.

Now resuming my tale, I remember the day, when Sai saved me and my family from the clutches of death. It happened on Thursday, 19th February 1998. The afternoon sky was cloudy, and there was also a drizzle. I, accompanied by my family, drove to the Shri Shirdi Sai Baba Devasthanam to have His Darshan; and after paying obeisance at His Lotus Feet, turned towards Mussoorie by-pass road. From there it is a ten minute drive to the famous Lord Shiva temple (known as Shri Prakasheshwar Mahadev Mandir), near Kuthal gate along the way to Mussoorie. Since Sai is the Incarnation of Lord Dattatreya, we desired to visit that temple, and seek His blessings.

Now I, after the Darshan, was driving downhill; and wasn't going that fast at the time when the brakes failed to work properly. I immediately broke into a cold sweat, and frantically tried to control driving by pumping the brakes. But, all in vain, and the car took a turn towards a 40-metre-deep gorge. Anticipating our imminent death, we started crying and calling, "O Sai! Save us... O Sai! Save us... O Sai! Save us..." And soon the car started rolling down the deep gorge. The new car was totaled in the accident. But soon, I heard a 'voice' answering my cries for help :-

*"If the sky above you
should turn dark and full of clouds
and that old north wind*



Shri Prakasheshwar Mahadev Mandir

*should begin to blow
Keep your head together and
call my name out loud
I'll come running, oh yeah baby
to save you again and again."*

And, lo! We were resting on the 'large and invisible hands' even without any scratch and bruise. But, while thus keeping us unhurt and unharmed, Sai would certainly have wounded Himself beyond healing. Here, I awfully recall the incident already mentioned, when Sai had thrust His hand into the furnace to save the child of the blacksmith, and consequently suffered burns up till His arm. Those burns stayed until His Mahasamadhi.

*"O Sai! You suffered for me,
giving me life again;
Forever I'll cherish;
forever my chant roars, only for You.
O Sai! You bled for me, giving me life again;
Forever I'll cherish;
forever my chant roars, only for You."*

And, when I raised my tiny hands to thank those massive hands, a sound greeted my ears :-

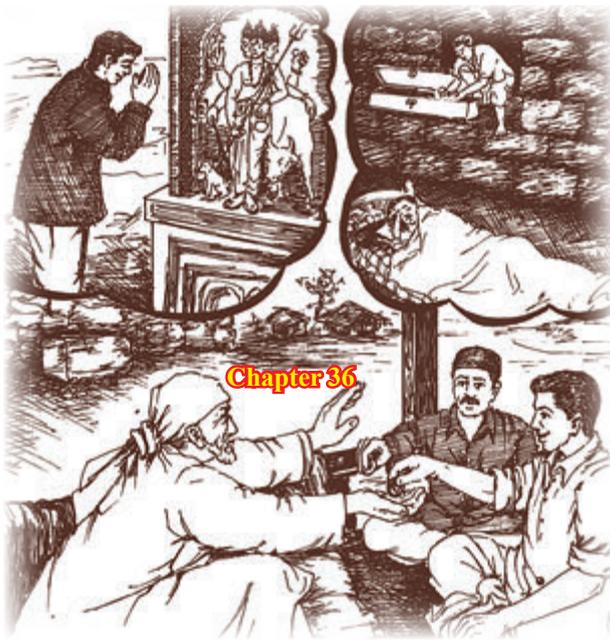
*"I fell in love with this world
Went my own way, trusting in me
I made a plan on my own
Trying to hide away from the light"*

To render instant help, Baba rushes to His devotees, unmindful of His personal hardship.

Now I, prostrating myself at His Lotus Feet, narrate the story of that gentleman who had come all the way from Goa to Shirdi to have Baba's Darshan. (Shri Sai Sat Charita, Chapter XXXVI) This devotee had employed a chef who unerringly kept managing his master's kitchen for nearly 30 years; but afterwards he was held in the grip of bad habits, which made him rob his master of a sum of Rs. 30,000. The master was greatly distressed and sat for a fortnight on the verandah of his house, bemoaning his loss. He lost his appetite too as the cook himself deprived his employer of bread.

Sai is ever active and vigorous even after leaving His earthly body.

After a fortnight, Sai visited his house in the guise of a fakir, and prescribed :- "If you act according to my bidding, you'll recover your



money; I furnish you with the whereabouts of a fakir. You please go there, and surrender yourself to him, after you get your money back. Till the culprit returns the cash, you must give up your preferred food.” He followed His advice and got his wealth back.

If one seeks help and listens to Baba’s advice, it is given at once.

Once again, I return to my story... I hear people saying that both man and God are helpless to make any change in the design of destiny. But, Baba isn’t... He can...! A few days after the awful accident, I went to the Shri Shirdi Sai Baba Devasthanam to thank Sai for changing the coding system of my destiny. There I sat quietly in front of His statue; and though gratitude was rendering me mute in His presence, that sobbing voice of thankfulness still wept in my heart. However, I didn’t mourn the loss of my car with Him, which was given to a kabari (scrap-merchant) at almost no price, as it was purchased without insurance backup due to lack of required money.

Sai is ever living to help and guide all who come to Him, who surrender to Him and who seek refuge in Him.

Once again, the range of my memory takes me back to that startling event of my life. I ever think of that dreadful car-accident, and always realize that Sai spared me a terrible fate! I really do not know, how I should write my

innermost feelings, my state of mind. Baba knows everything; nothing is hidden from Him. I have to say though, something inside of me was very sad; and something inside of me magically changed; and one day I, sitting on the verandah step of my cottage, started mindfulness meditation on Sai Nam with faithful faith. The strength of Sai Nam made me forget my surroundings, and the exigencies of my worldly life. That day, while I was thus sitting unaware of my setting and unable even to hear anyone speaking to me, I heard a ‘voice’. I turned my attention towards the direction the ‘voice’ was coming from. I found a fakir standing at my cottage door with the words - “May I come in...”

Since I knew that Baba used to wander from door to door in Shirdi with a jhola (bag) hung on His shoulder, the ‘exterior semblance’ of this fakir mesmerized me. At that moment, I thought he was He... I bowed to him my welcome. I offered my guest a cup of tea. Now the beggar seemed to be in a great hurry to leave, and begged my leave. I



“May I come in...”



walked with him to my cottage door...; and, on return, found that he forgot to take his jhola with him. I, in my frantic haste and eagerness to chase after him, overstepped a step near the top of the verandah's staircase. His magical jhola plucked from my hands, and showed its magic... The next day a brand new Esteem Maruti car adorned our cottage again.

No doubt, if His devotee looks to Him, He too looks to him [remaining unmindful of the fact whether he is from Goa or Dehra Dun].

The wretched and miserable would naturally rise into plenty of joy and happiness, as soon as one climbs steps of His Samadhi, before or after rolling down into a deep gorge or tumbling down from the top of one's own verandah!

*"My heart is filled with thankfulness
To Sai Who bore my pain;
Who plumbed the depths of my disgrace
And gave me life again.
Who crushed my curse of sinfulness,
And clothed me with His light,
And wrote His law of righteousness*

"With power upon my heart."

In another incident in the sequence of innumerable occurrences, Baba shared His Prana (life force) with me when I had once become completely lifeless.

It was the year 1996. I was working as an Associate Professor of English at the DAV PG College, Dehra Dun. That year our college was celebrating its Golden Jubilee. To celebrate the glorious five decades of the existence of our prestigious institution, we had drawn an elaborate programme of activities throughout the year. One of the activities of the jubilee festivities was the organization of a function to felicitate the student toppers of the college by awarding them gold medal. I felt truly honoured that the Principal entrusted me with the responsibility for organizing the function. We chose the Madhuban Hotel at the Rajpur Road as the venue with a view to create a superb backdrop and the wow factor needed to make our event stand out from the crowd.

It was the 1st of June. The Conference Hall of the hotel was witnessing an impressive gathering of intellectuals, writers, distinguished citizens and media persons. And, as I came to the podium to welcome all dignitaries, guests and delegates, I suddenly started feeling a stabbing, sharp and shooting type of pain around my left shoulder. I rushed back to a seat in the front row, and within no time I lost consciousness. Dr. Arun Kumar, the renowned pulmonologist of the city, was already occupying his seat beside me. He examined me and found me breathless. He checked my pulse and diagnosed that the heart has stopped. "He is no more," the doctor finally declared.

Then, they carried the body out to take it to the neighbouring hospital for a doctor's 'final declaration'.

Lo! I suddenly regained complete consciousness. The full activity of the mind and senses started working, as in waking life. Dr. Gilhotra, at the hospital, examined me thoroughly and found everything normal. He couldn't understand what had happened, and why. Baba alone knew it all...

*"Now I'm a child of the King
Righteous, restored, hidden in Him*

*Chosen to stand in His grace
Chains all undone, abandoned in praise”*

Then came the year 2017. I underwent parotid gland surgery at the Dr. B. L. Kapoor Hospital, New Delhi.

Postoperative care begins immediately after surgery. After my surgery, they shifted me to the Post-Anesthetic Care Unit (PACU). It is also called the Recovery Room. Suddenly, to my great bewilderment I saw a silhouette making a hasty exit through the door. I had a feeling it was Sai by the shadow He was forming.

After leaving hospital and returning home, I realized that

*His love chased after me!
‘That’ silhouette brought me home!!
His mercy made a way for me!
‘That’ silhouette brought me home!!*

O Baba! Thou art the one spirit of all existence, which is God in all the forms of God, in all the saints, in all the men and in all the creatures. The most prominent feature of Your spiritual perfection is that even when You were in Your body, You were not really in Your body, nor You Your body in the sense in which we are our bodies. He who thinks that You are only at Shirdi has totally failed to see you. “I am with you wherever you be,” You exhorted. Thus, if the



separation of body and soul alone be the essence of death, we have to admit that You never lived, even when You moved amidst us and acted. If we also add that absence of awareness and the power to speak, act, appear and move about are the real attributes to death, then You were alive, but in a quite different way from us. And, You are so even now, as is amply proved by my own experiences and the experiences of innumerable other devotees.

O Sai, it is Death that’s dead, not You!

*O Sai! You suffered for me,
giving me life again;
Forever I’ll cherish;
forever my chant roars, only for You.
O Sai! You bled for me, giving me life again;
Forever I’ll cherish;
forever my chant roars, only for You.*

**O Deva, let Your Lotus Feet ever be my
Sole Refuge!**

– Dr. Subodh Agarwal

‘Shirdi Sai Dham’,
29, Tilak Road, Dehra Dun - 248 001,
Uttarakhand.

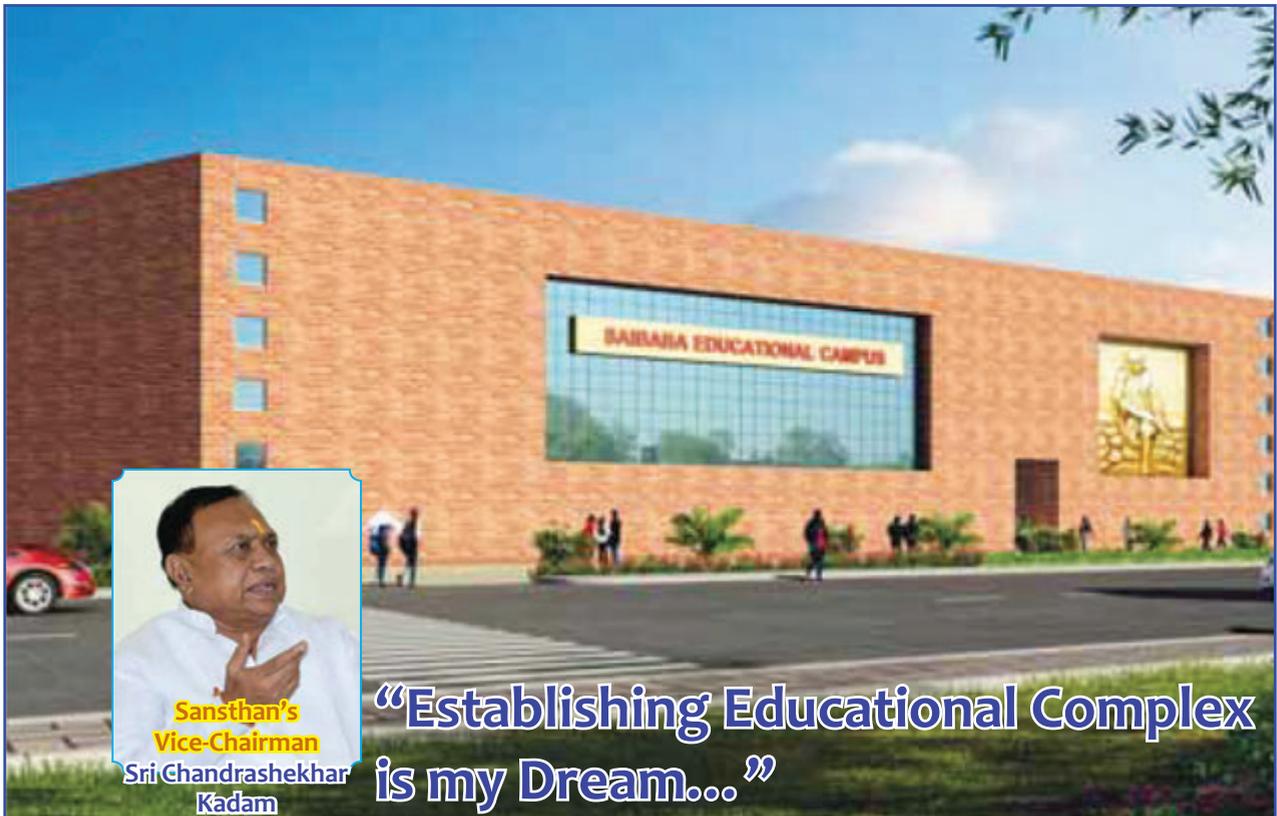
Mobile : **09897202810**

E-mail : **subodhagarwal27@gmail.com**

“It is my special characteristic to free any person, who surrenders completely to me, and who does worship me faithfully, and who remembers me, and meditates on me constantly. How such persons can be conscious of worldly objects and sensations, who utter my name, who worship me, who think of my stories and my life and who thus always remember me! I shall pull my devotees out from the jaws of death.”

- Shri Sai Baba

- Shri Sai Sat Charita Chapter 3 -



“Along with senior college, it is my long cherished dream to establish an educational complex that will govern all the educational institutions of the Sansthan,” said the Vice Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam. For the last few days, he has been focusing on this venture. “When these two tasks are achieved, I will be immensely satisfied and would feel that I have done justice to the duty assigned to me,” said Sri Kadam.

“Rural areas still lack the educational

facilities and Infrastructure. The issue of girl child education is still not resolved. Considering these issues, the Shirdi Sai Sansthan has a lot of plans to overcome them. Each step taken to eradicate the obstacles leads me to feel satisfied. The efforts taken for establishing a senior college would now bear fruits. In the coming academic year, I am hopeful that the senior college would be established for all three core faculties, Arts, Commerce and Science.” He expressed his thoughts in the following words... “It would





Addressing the Sansthan's teachers and students...

be the best moment of contentment in my service towards Shri Sai Baba.” Indeed, no small amount of satisfaction did reflect in his eyes. He shared his views, in an interview, on his role and responsibilities as the Vice Chairman of the Shirdi Sai Sansthan. His views apparently reflected his firm commitment to be brutally honest to himself to accomplish the mission.

Sri Kadam has always shied away from the publicity. Being a farmer, he is always busy in one task or the other. Even for this interview, he had to manage time and other activities and meetings. Once he has been assigned a duty, he gets fully engrossed in completing it. He's very humble about his success. And, in him, one meets a really humble man.

To provide best services to the devotees, to ensure smooth *Darshan*, to manage the



Reading the Shri Sai Sat Charita (the holy Book on Shri Sai Baba)...

queue for *Darshan*, to check the food services offered by the Sansthan as *Prasad*, to make the first-aid services available in the temple premises, to ensure the devotees get the *Prasad* after visiting the shrine and paying obeisance are the tasks that he supervises keenly. In fact, he always gets absorbed in these activities.

Besides, these involvements, his dream is to provide the best and modern education to students as well as to update the educational facilities; for this, in his opinion, it is necessary to set up an educational complex that will be a widespread governing body under which all the educational institutions can function smoothly. He elaborated that all round efforts are being taken, and he would give his best to fulfil this dream.

Sri Kadam has been twice elected as a Member of Legislative Assembly (MLA), from Devlali Pravara - a village near Shirdi. His father Annasaheb Kadam was a well-known personality of this hamlet. The family involved to work with people from all strata of the society through the organization known as Rashtriya Swayam Sevak Sangh (RSS). Thus, he has inherited the passion to work for the society. After remaining an MLA for two terms, Sri Kadam opted not to contest any further election. Instead, he resolved to serve the society. Coincidentally, the Hon'ble Chief Minister of Maharashtra assigned him the responsibility of being the Vice Chairman of the Shirdi Sai Sansthan.

He expressed his happiness for getting this new job... "I wished to do something for the society. This assignment is a boon in disguise, and affords me an opportunity to serve people/devotees through this new role. Moreover, the Shirdi Sai Sansthan is headed by the Chairman Dr. Suresh Haware. He is a nuclear scientist par excellence. I am fortunate enough to have got an opportunity to work under his guidance. His vision and dedication to work is worth it. I have accepted this responsibility in order to live out my dream of serving the society. This can be best achieved by working under Dr. Suresh Haware's supervision whole heartedly."

On the connection of his family with Sai and the services that the family did, Sri Kadam said, "My great grandmother was lucky to have seen Sai Baba. All family members had immense faith in Him. The family was involved in charity and other such activities to serve the society. Hence, whenever I get an opportunity to work with the activities of the Sansthan, I consider it as His will, and endeavour to comply with it to the best of my energies. Our family has always been into social service. Sai Baba has always been and is still very caring of His devotees. That is why our priority is to take utmost care of the devotees and take optimum efforts to provide them with the best facilities."

Sri Kadam shared one of his experiences when he was the MLA. He visited a village, where an old woman pleaded, "O brother! We

"Sai Baba has always been and is still very caring of His devotees. That is why our priority is to take utmost care of the devotees and take optimum efforts to provide them with the best facilities."

face a lot of hardships due to the scarcity of water. Please do something to solve this problem." "Her plea was very genuine and heart-touching. It made me restless. I solved this problem of the villagers by arranging sufficient water to fulfil their requirement through water-tankers. The entire supply was free of any charge."

"Like the water problem, the lack of educational facilities for girls in villages also disturbed me. Consequently, as a Vice Chairman, I also focused on this issue along with other issues. To establish a senior college, I decided to undertake all measures with whole heartedly. In this regard, the letter of our recommendations is now with the Shirdi Sai Sansthan, awaiting its approval. We are hopefully believe that the academic session of this proposed college will start next year. The Sansthan also wishes to club all its educational establishments with the aim of creating an all-inclusive, resourceful and well-equipped educational complex. If both these tasks are completed, I would be happy with a feeling of contentment that I have done justice to the responsibility bestowed on me by Baba's blessings.

Courtesy :

Sri Bhagwan Datar

July-August 2018 issue of Sai Arpan Seva, Sansthan's Bi-monthly Marathi Periodical

Translated from Marathi into English by
Sou. Meenal Tushar Deshpande Dalvi



After hearing her (Mrs. Savitri Raghunath Tendulkar), Baba said, "Tell him to listen to me. Roll up the horoscope and sit for the examination, without any anxiety. Do not follow anyone else's advice. Do not look at the horoscope. Do not believe in astrology. Study with concentration. Tell your son that he will be successful. He should sit for the examination without anxiety. Let him not lose hope. Have full faith in me."

- SHRI SAI SAT CHARITA -



Musings of Sri D. M. Sukthankar, Former Chairman of the Sansthan (1994-2004)...

The Centenary of Shri Sai Baba's Samadhi is being celebrated everywhere with great fervour and deep devotion. It is only apt that Shirdi Sai Sansthan has planned and arranged several programmes throughout the Centenary Year to fittingly commemorate this landmark event.

I deem it a rare privilege that I got the opportunity to serve as the Chairman of the erstwhile Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi (SSS) for two successive terms of 5 years each - September 1994 to August 1999 and September 1999 to August 2004 - a long enough total span of 10 years!

May be that, due to good deeds done by my parents, topped with Baba's blessings, I got this unique opportunity to work in a field that was totally different from the field of my theretofore professional knowledge and experience. I will say with firm conviction that it is only owing to Baba's paternal grace that I could discharge my responsibilities as Chairman with a degree of success.

I will not ever claim that during this longish tenure of ten years, the Board of Management of SSS, of which I was at the helm, did any absolutely outstanding work, deserving of being described as 'phenomenal'. We did focus on Baba's devotees who trooped to Shirdi, day in and day out in huge numbers, and their felt

needs and expectations. Barring extremely few exceptions, we, as the Board of Management comprising 22 members, took all our decisions unanimously and cohesively. Devotees at large are well aware of what we did and truly accomplished.

Only to illustrate, we changed for the convenience of devotees the working hours of the SHRI SAI PRASADALAYA, from 10.00 a.m. to 2.00 p.m. followed by 7.00 p.m. to 10.00 p.m. (with an intervening break of five hours), which were previously in vogue, to from 10.00 a.m. to 10.00 p.m., without any intervening break what-so-ever. Further, realising that affordable rooms for devotees' lodging were falling short of demand, we put up a large complex of buildings for their comfortable stay, with all essential amenities and conveniences, at an affordable price. Such service-oriented steps that we took, without any fanfare, were spontaneously and immensely appreciated by devotees.

It is another matter that, with the inflow of devotees always on the rise year after year, even these augmented facilities and services are proving to be insufficient in the present times, particularly during the festival periods of great rush.

One memorable thing that we did during my first term as Chairman, and which I will always like to proudly recall, is that we

announced and efficiently conducted a national (pan-India) level Competition of Architects to select the best layout-cum-design for the integrated redevelopment-cum-renovation of the entire Temple Complex. The response was very heartening. A competent Jury, comprising a carefully identified panel of three very renowned and experienced Architects and one heritage conservationist selected the three prize-winning entries after a meticulous and absolutely thorough assessment of all entries duly received. Based entirely on the layout-cum-design that won the coveted First Prize of Rs.1,50,000/- in the Competition, a full-fledged reconstruction-cum-renovation of the entire Temple Complex was thereafter carried out in record time, with due regard to ensuring the proper conservation of the extant old and venerable heritage structures (e.g. 'Butti Wada' and 'Deekshit Wada'). As a result, the entire Temple Complex got transformed into a well-renewed and impressive Complex, having an aesthetic and elegant look, with sufficiently wide and open internal spaces and corridors for easy circulation of devotees thronging the Complex.

I really do not wish to continue in this vein any further, as doing so will be tantamount to bragging about what all we did. Moreover, I earnestly believe that whatever we could accomplish during our tenure was essentially owing to Baba's munificent blessings. As the Chairman, I always consciously tried to take into account the views expressed by one and all and to arrive at decisions in an absolutely open and transparent manner, by taking the entire Board of Management into confidence. What could not secure the approval of all was put off. It is only after effective communication and evolving of a consensus about the schemes and tasks to be taken up that I decided to go ahead with their implementation, after due adjustment and modification, wherever necessary, to enable garnering of broad-based support. We did meet with some dissent off and on. But when what we had set about to do progressively started taking concrete shape in reality and on the ground, everyone started realising that our decisions and plans were right and in the interests of devotees as well as for the wellbeing of the local residents of Shirdi.

I still wonder and feel amazed how I became the Chairman of the Board of Management of

Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi and why and how I got this unique opportunity to serve Sai Baba. In fact, I had never coveted this august office. If I recall correctly now, it was some time in July or August of 1994 that, out of the blue, the then Chief Minister of Maharashtra, Sri Sharad Pawar, telephoned to me and asked me to accept the responsibility of this office, sought by so many aspirants. For a retired and disciplined civil servant like me, his wish was as good as a command! Besides, I had no plausible reason to refuse his offer. Yet I did express my genuine reservation to him by saying, "Sir, but this is not my cup of tea", thereby trying to convey that what he had offered to me was quite outside the scope of my past experience and chosen field of work. But the lesson, which I thereafter learnt there and then, was that no one should ever aspire to easily outwit Sri Pawar! His immediate very clever yet equally mature response so typical of him, to what I had mumbled, was to tell me that the basic principles underlying the theory and practice of administration, whether while functioning in a Government set-up or while working in a Temple Trust, are essentially the same; the difference, if any, was only minor and superficial! Needless to say, on hearing that, I was left totally speechless for a few moments, till I gathered my wits and told him, as I had hardly any other option, that I was accepting with gratitude the kind offer which he had made! No wonder that within 48 hours thereafter, as soon as certain essential formalities were duly completed, I received the order of the Charity Commissioner, Maharashtra formally installing me as the Chairman of Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi, which was then a registered public charitable trust.

I hail from a family from Konkan, the coastal tract of Maharashtra. By tradition and culture, Konkani (people from Konkan), in general, are God-fearing and quite religious. My parents were from the same mould. My father was deeply religious and a devout worshipper of 'Dattaguru' (Lord Dattatreya). On every Thursday, unfailingly, he used to sing in his sonorous voice 'Bhajans' (devotional songs) composed by 'Haribhakta Parayan' (Inveterate Devotee) Sri Pangarkar, from his popular book 'Bhaktimarga Pradeep' (a bright light illumining the path of Bhakti or Devotion). Listening to these Bhajans had a profound effect on all of us in the family. My



mother was a devotee of Shri Sai Baba and regularly read 'Adhyayas' (Chapters) from Shri Sai Sat Charita, popularly called 'Pothi'. I do remember having gone during my childhood to Shirdi, with my parents. An upbringing of this nature had spontaneously inculcated in me a deep faith in God as the supernatural force or Supreme Being who exercised a profound influence in shaping one's destiny. But as I grew up and went through College and the University, skepticism and scientific temper gradually took deep roots in my psyche. I have always been, and am even today, a theist and a 'Believer', but I refuse to take anything for granted or accept anything blindly. During my long administrative career as a civil servant, discharging my duties and responsibilities in a diligent and faithful manner was itself, for me, like worshipping God. Whenever I had, in the course of my work and discharge of my official duties, an occasion to visit a place of pilgrimage, I did visit the main temple or shrine there to offer my prayers and pay my obeisance with devotion. But, may be because of preoccupation with my official duties and my routinely heavy work schedule, I did not daily or regularly offer any prayers or perform any rituals or chant any 'mantras' and 'stotras' or even do any 'Namasmaran'. In short, I sincerely believe that I was rewarded with the

august office of the Chairman of Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi not because I had consistently done something propitious but only because of the noble deeds and blessings of my parents, crowned by the divine grace of Baba; I cannot fathom any other plausible explanation for this virtual miracle.

I have always believed in doing my work, whatever it may be and in whatever capacity - low and humble or high and mighty - with utmost perfection and commitment and sincere devotion to duty. That is the way I have always experienced genuine job satisfaction and pristine joy of fulfilment. No wonder, therefore, that, even today, whenever I look in retrospect at my innings as the Chairman of Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi, I experience a feeling of true contentment, having given my best by way of my humble service to Baba and His numerous devotees.

Before I close, on the momentous occasion of the commemoration of the first Centenary of Shri Sai Baba's Samadhi, let me sincerely offer, with all humility, my Best Wishes to Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi for many more decades and centuries of charitable service for the upliftment of the underprivileged and the needy.

साई भक्तों की पूर्ण संतुष्टि, यही लक्ष्य!...

“सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश से महाराष्ट्र सरकार ने मेरी शिर्डी साई बाबा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पद पर नियुक्ति की। उस समय मैं महाराष्ट्र के जलगाँव ज़िले में ज़िलाधिकारी के रूप में कार्यरत थी। मैं मेरी इस नयी नियुक्ति का समाचार सुन कर दंग सी ही रह गई। क्योंकि इस बारे में मैंने सपने में भी कभी सोचा नहीं था।... और मेरे मनमस्तिष्क पर मेरी पहली शिर्डी यात्रा चलत चित्र हो गई। लगभग दस साल पहले उत्तराखंड में देहरादून से करीबन ३५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित मसूरी (जिसे ‘पर्वतों की रानी’ और ‘उत्तर भारतीय तीर्थस्थलों का प्रवेशद्वार’ भी कहा जाता है) इलाके में स्थापित लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में मैं भारतीय प्रशासनिक सेवाओं का प्रशिक्षण ले रही थी। उस दौरान हम प्रशिक्षणार्थियों का महाराष्ट्र दौरा हुआ। शिर्डी में साई के दर्शन किये। वह मेरा पहला साई दर्शन! साई की वह कृपालु, दयालु, प्यारभरी, मनलुभावनी मूरत देख कर मेरी नज़र उसी में खो गई।... आज जब मैं श्री साई सत् चरित में वर्णित बाबा के वचन, ‘तुम मेरी ओर जिस दृष्टि से देखोगे, मैं भी तुम्हारी ओर उसी दृष्टि से देखूँगा।’, ‘कहाँ भी रहो, कुछ भी करो; लेकिन यह पूरी तरह याद रखो कि तुम्हारी

सारी क्रियाएँ मुझे ज्ञात होती हैं।’ पढ़ती हूँ, तो मुझे वह घटना याद आती है और बाबा के ये वचन मेरे जीवन में चरितार्थ होते देख कर मैं गदगद हो जाती हूँ, खुद को खुशक्रिस्मत समझती हूँ। यही तो बाबा का करिश्मा है!... मैं समझती हूँ कि मेरी दस साल की प्रशासनिक सेवा का यह साई फल है।... जब मैं प्रथम बार और बाद में समय-समय पर शिर्डी आई तब एक दर्शनार्थी के रूप में मैंने दर्शनार्थियों की समस्याओं को देखा। इसलिए संस्थान की प्रशासन प्रमुख के नाते जब मैंने संस्थान का कारोबार सम्भाला तब इन समस्याओं का हल ढूँढ कर उस पर अमल करना यह मेरे कर्तव्य का अग्रक्रम हुआ। संस्थान का कामकाज पारदर्शी कर उसे गतिमान करना, यह संस्थान प्रशासन प्रमुख का आद्य कर्तव्य है; मैंने उस दिशा में कार्य करना शुरू किया। ऐसा करते समय कुछ बाधाएँ तो आती ही हैं; मैं अपने मकसद पर अडिग रही।’... संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल तहे दिल से, विशेष रूप से मराठी में बता रही थीं। दूसरी ओर सामने रखीं फ़ाइलों का निपटारा कर रही थीं, बीच-बीच में साई समाधि शताब्दी समारोह काम के बारे में आ रहे अधिकारी, कर्मचारी,





ग्रामवासियों से बात कर रही थीं।...

श्रीमती रुबल जी का जन्म राजस्थान में देवली स्थित टोंक गाँव में दिनांक २१ अगस्त १९८३ को हुआ। शिक्षा में वह शुरू से ही होशियार थीं। दिल लगा कर

पढ़ना उनका स्थायी स्वभाव बन गया था। परिवार सदस्यों में, शिक्षकों में, सहपाठियों में, रिश्तेदारों में, आसपास के लोगों में वह एक ज़िद्दी लड़की के रूप में जानी जाती थीं। अर्थशास्त्र में पदवी हासिल करने के बाद समाज सेवा के



नियोजित दर्शन दृष्टार परियोजना



नियोजित साई सृष्टि, नक्षत्र भवन (प्लैनेटोरियम),
मोम संग्रहालय (वैक्स म्युज़ियम) परियोजना

लिए उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा क्षेत्र चुना।... उनकी अधिकतर सेवा महाराष्ट्र में हुई।... उनके प्रशासनिक सेवा

कार्य का दौर महाराष्ट्र में अकोला ज़िले से शुरू हुआ। उसके बाद महाराष्ट्र के सोलापुर ज़िले में स्थित कुर्दुवाड़ी



नियोजित सीसी टीवी व सिक्युरिटी सर्वेलन्स यंत्रणा



में एस्.डी.एम, बाद में महाराष्ट्र में अहमदनगर ज़िले के ज़िला परिषद में मुख्य कार्यकारी अधिकारी, तत्पश्चात् ज़िलाधिकारी, अहमदनगर, तदुपरांत ज़िलाधिकारी, जलगाँव आदि पदों पर वह कार्यरत रहीं।... अब वह शिर्डी साई संस्थान के इतिहास में मील का पत्थर बन चुकी हैं। उनके रूप में प्रथम बार शिर्डी साई संस्थान को मुख्य कार्यकारी अधिकारी के तौर पर भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत अधिकारी मिल गया है; एक कर्तव्यपरायण, कुशल, प्रतिभाशाली, गतिशील गुणों से गठित!... और वह भी श्री साई समाधि शताब्दी वर्ष शुरू होने से साढ़े छः महीने पहले, गुरुवार, दिनांक ९ मार्च २०१७ को!!...

सौभाग्यशाली इस साई बेटे ने सन २०१६ में “बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ” के अभियान में किये सराहनीय कार्य के लिए उन्हें उत्कृष्ट ज़िलाधिकारी पुरस्कार से नवाज़ा गया। उनके इस कार्य की प्रधानमंत्री और अन्य कई गणमान्य व्यक्तियों ने काफ़ी तारीफ़ की। सन् २०१५-१६ में किये महात्मा गांधी विचारों से प्रेरित कार्य के लिए उन्हें महात्मा गांधी शांति पुरस्कार मिला। सन् २०१६-१७ में की उत्कृष्ट प्रशासनिक सेवा के लिए उन्हें महाराष्ट्र शासन द्वारा पुरस्कृत उत्कृष्ट ज़िलाधिकारी पुरस्कार से गौरवान्वित किया गया।... ऐसी पार्श्वभूमि रही श्रीमती रुबल अग्रवाल शिर्डी साई संस्थान को आदर्श देवस्थान बनाने के लिए भरसक प्रयास करेगी, यह निश्चित!...

उनके प्रशासनिक नेतृत्व में शिर्डी आने वाले हर एक दर्शनार्थी को पूर्ण समाधान मिले इस हेतु प्रवास, निवास, दर्शन, सुरक्षा, नाश्ता, प्रसाद-भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा आदी विषयों से संबंधित व्यवस्थाओं में सुधार

लाया जा रहा है।...

कई परियोजनाएँ क्रियान्वित हो गई हैं, तो साई सृष्टि, नक्षत्र भवन (प्लैनेटोरियम), मोम संग्रहालय (वैक्स म्यूज़ियम), साई ज्ञान केन्द्र (साई नॉलेज सेंटर), संस्थान अस्पतालों का अत्याधुनिक तरीके से विस्तार, प्रशासन अकादमी, संस्थान परिसर और शिर्डी शहर के लिए सीसी टीवी व सिक्युरिटी सर्वेलेन्स यंत्रणा की स्थापना, अद्वयवात शैक्षणिक संकुल, लगभग ११३ करोड़ की दर्शन क़तार परियोजना आदि कार्य प्रगति-पथ पर हैं।...

श्री साई बाबा समाधि शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में शिर्डी में कई धार्मिक, प्रबोधनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा देश के विभिन्न शहरों में साई पादुका दर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बड़ी तादाद में साई भक्त इन कार्यक्रमों में शामिल हुए और साई पादुका दर्शन से लाभान्वित हुए।...

संस्थान का कारोबार पारदर्शी करने के लिए ई-टेंडर्स निकालना, विज्ञापन देना आदि अनिवार्य किया गया है। यथोचित पद्धति से ही कार्य करना बंधनकारक किया गया है। महत्त्वपूर्ण बड़ी धनराशि वाले काम राज्य शासन की स्वीकृति लेकर ही किये जा रहे हैं।...

“श्री साई सत् चरित का पठन और उसके अनुसार आचरण ही मनुष्य को जीवन पथ पर आने वाली बाधाएँ दूर कराने में सक्षम बनाता है; मैं यह साई अनुभूति कर रही हूँ,” ऐसा विश्वास शिर्डी साई संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल ने मुलाक़ात के आखिर में जताया।

— प्रतिनिधि



अनादि... अनंत... सर्वव्याप्त...

- श्री साई नाथ -

समर्थ सद्गुरु श्री साई बाबा की समाधि को अक्टूबर २०१८ में १०० साल पूरे हो रहे हैं। श्री साई बाबा संस्थान ट्रस्ट, शिर्डी द्वारा इस शुभ अवसर को चिन्हित करने के उद्देश्य से १ अक्टूबर २०१७ से १८ अक्टूबर २०१८ तक श्री साई बाबा की महासमाधि के 'शताब्दी वर्ष' को व्यापक स्तर पर मनाये जाने हेतु एक विस्तृत योजना तैयार की गई और इसी परिप्रेक्ष्य में उसके द्वारा अनेकों महत्त्वपूर्ण जन-कल्याणकारी कार्य सम्पादित किये जा रहे हैं। यह अत्यधिक प्रसन्नता की बात है कि महासमाधि 'शताब्दी वर्ष' देश में ही नहीं, बल्कि विश्व के विभिन्न देशों में भी बहुत ही श्रद्धा भाव से मनाया जा रहा है।

महासमाधि 'शताब्दी वर्ष' के दौरान अनुमान लगाया गया है कि लगभग साढ़े तीन करोड़ भक्त शिर्डी जायेंगे। इसका मतलब यह है कि महासमाधि उत्सव के ३ दिनों के

दौरान लाखों की तादाद में श्रद्धालु शिर्डी जाने की उम्मीद है। तदनुसार २०१८ के सप्ताहांत पर दो से तीन लाख भक्त और अन्य दिनों में पाँच हज़ार से एक लाख श्रद्धालु शिर्डी जाने की उम्मीद है।

श्री साई बाबा संस्थान ट्रस्ट, शिर्डी ने 'शताब्दी वर्ष' के दौरान भक्तों के लिए सुविधाओं की बेहतर व्यवस्था की है और संस्थान द्वारा विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, प्रबोधनात्मक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। नतीजतन, शिर्डी की पवित्र भूमि उच्च भक्ति वातावरण के साथ बदल जायेगी और इस प्रकार शताब्दी वर्ष का एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना बनना तथा इसका इतिहास की पुस्तकों में दर्ज़ होना सुनिश्चित है।

विश्व में अनेक ऐसे संत हैं, जो घर त्याग कर जंगल की गुफाओं या झोपड़ियों में एकांत वास करते हुए अपनी



मुक्ति या मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करते रहते हैं और बिना किसी की चिंता किये सदैव ध्यानस्थ रहते हैं। लेकिन, श्री साई बाबा इस प्रकृति के न थे। यद्यपि उनके कोई घर, द्वार, स्त्री, सन्तान, समीप या दूर के संबंधी नहीं थे, लेकिन फिर भी वे संसार में ही रहते थे। वे केवल चार-पाँच घरों से भिक्षा लेकर सदा जीर्ण-शीर्ण मस्जिद में रहते हुए समस्त सांसारिक व्यवहार करते थे। ऐसे साधु या संत बहुत कम हैं, जो स्वयं भगवत् प्राप्ति के पश्चात् लोगों के कल्याण हेतु प्रयत्न करें। श्री साई बाबा इन सबमें अग्रणी हैं।

निर्गुण व सगुण ब्रह्म के दो स्वरूप हैं; लेकिन ये दोनों, अर्थात् निर्गुण-निराकार और सगुण-साकार ब्रह्म के एक ही रूप हैं। किसी की निर्गुण, तो किसी की सगुण उपासना में रुचि होती है। लेकिन, निर्गुण की अपेक्षा सगुण उपासना सरल है तथा सगुण उपासना से भक्ति में वृद्धि होती है और जैसे-जैसे सगुण उपासना से भक्ति में आगे बढ़ते हैं, तो निर्गुण, अर्थात् निराकार ब्रह्म की स्थिति स्वतः आ जाती है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है, **“संत ही मेरी आत्मा हैं। वे मेरी जीवित प्रतिमा और मेरा ही विशुद्ध रूप है। मैं स्वयं वही हूँ।”** इसलिए सगुण उपासना के लिए गुरु ही सर्वश्रेष्ठ है।

वास्तव में श्री साई बाबा उसी प्रकार के सद्गुरु थे तथा उनकी महानता का वर्णन नहीं किया जा सकता। वे समस्त भूतों में ईश्वर दर्शन किया करते थे। बाबा ने कभी भी अपने भक्तों को किसी आसन या प्राणायाम के नियमों अथवा किसी उपासना का आदेश नहीं दिया और न ही उनके कानों में कोई मंत्र फूँका। उनका तो सभी के लिए यही कहना था - **“चातुर्य त्याग कर सदैव साई-साई स्मरण करो। इस**

प्रकार आचरण करने से समस्त बंधन छूट जायेंगे और तुम्हें मुक्ति प्राप्त हो जायेगी।” वे सर्वव्यापक थे तथा उनके पास जो भक्त दर्शन करने के लिए आते थे, वे उनके प्रश्न करने के पूर्व ही उनके समस्त जीवन की त्रिकालिक घटनाओं का पूरा-पूरा विवरण कह देते थे।

श्री साई बाबा लोगों के अंदर की बातों को पूरी तरह जानते थे और जब वे उनके अंदर का रहस्य प्रकट करते थे, तब सभी लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे। वे अपने जीवन काल में राहाता, रुई, नीमगाँव, जो शिर्डी से मात्र कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, के अलावा अन्य कहीं नहीं गये। परन्तु, उन्हें अपनी दिव्य दृष्टि से शिर्डी से सैकड़ों मील की दूरी पर क्या घटित हो रहा है या होने वाला है, सब कुछ विदित रहता था। उन्होंने न तो कभी रेलगाड़ी देखी और न ही रेलगाड़ी में सफ़र किया; लेकिन फिर भी उन्हें सभी रेलगाड़ियों के समय पर अथवा देरी से आने-जाने का सही समय विदित रहता था।

बालासाहेब देव की माँ ने व्रत के पश्चात् उद्घापन कार्यक्रम में भोज का आयोजन किया। देव ने शिर्डी में बापूसाहेब जोग को पत्र में उद्घापन के लिए एक निश्चित तिथि लिखते हुए प्रार्थना की कि वे उनकी ओर से श्री साई बाबा को उद्घापन और भोज में शामिल होने का निमंत्रण देते हुए उनसे प्रार्थना करें कि उनकी अनुपस्थिति में समारोह अपूर्ण ही रहेगा। इसलिए, वे डहाणू ज़रूर पधार कर कृतार्थ करें। जब जोग ने बाबा को देव का उक्त पत्र पढ़ कर सुनाया, तो बाबा ने इसे ध्यान पूर्वक सुन कर कहा, **“जो मेरा स्मरण करता है, उसका मुझे सदैव स्मरण रहता है। मुझे यात्रा के लिए कोई भी साधन - गाड़ी, ताँगा या विमान की आवश्यकता नहीं है। मुझे तो जो प्रेम से पुकारता है, उसके सम्मुख मैं अविलम्ब प्रकट हो जाता हूँ।”**

श्री साई बाबा ने जोग से यह भी कहा कि उसे एक सुखद पत्र भेज दो कि वे दो व्यक्तियों के साथ उद्घापन कार्यक्रम में शामिल होंगे। देव को यह पत्र मिलने पर बड़ी प्रसन्नता हुई; लेकिन उनको यह भी भली-भाँति मालूम था कि बाबा शिर्डी के निकटवर्ती तीन ग्राम - राहाता, रुई एवं नीमगाँव के अलावा अन्य कहीं भी नहीं जाते हैं। लेकिन, फिर भी उन्होंने सोचा कि उनके लिए क्या असम्भव है! वे सर्वव्यापी हैं और उनका जीवन चमत्कारों से भरा हुआ है तथा वे किसी भी वेश में अचानक ही प्रकट होकर अपने वचन को पूरा कर सकते हैं।

उद्घापन कार्यक्रम के कुछ दिनों पूर्व एक संन्यासी बंगाली वेशभूषा में डहाणू स्टेशन पर आया। वह देखने में ऐसा लगता था, जैसे गौरक्षा संस्था का स्वयंसेवक है। उसने स्टेशन मास्टर के पास जाकर उससे चंदा देने के लिए अनुरोध किया। उसी समय देव भी वहाँ आ गये। देव ने चंदे की चर्चा सुन कर संन्यासी से कहा कि डहाणू के एक प्रमुख व्यक्ति ने धर्मार्थ कार्य के लिए चंदा एकत्र करने की एक नामावली तैयार की है। इसलिए, अब दूसरी नामावली बनाना उचित नहीं होगा। अच्छा यही होगा कि दो-चार महीने के बाद पुनः दर्शन दें। संन्यासी यह सुन कर वहाँ से चला गया।

वह संन्यासी एक महीने के बाद देव के घर के सामने ताँगे से उतरा, तो देव ने उसे देख कर सोचा कि यह संन्यासी चंदा माँगने के लिए ही आया है। लेकिन, संन्यासी ने देव के विचार को जान कर कहा, “श्रीमान्, मैं चंदे के लिए नहीं, बल्कि भोजन करने के लिए आया हूँ।” तब देव ने संन्यासी से कहा, “बहुत आनंद की बात है; आपका सहर्ष स्वागत है।” संन्यासी ने कहा कि उनके साथ दो बालक और हैं। उस पर देव ने कहा, “कृपया उन्हें भी साथ ले आइये। भोजन में अभी दो घंटे का विलम्ब है। यदि आज्ञा हो, तो किसी को उनको बुलाने के लिए भेज दूँ।” संन्यासी ने कहा, “आप चिंता न करें; मैं निश्चित समय पर उपस्थित हो जाऊँगा।” देव ने उनसे भोजन के लिए दोपहर में पधारने हेतु प्रार्थना की। वह संन्यासी दो बालकों के साथ ठीक १२ बजे पुनः आकर भोज में शामिल हुआ और भोजन करने के उपरांत बालकों सहित वहाँ से चला गया।

देव ने उद्घापन समारोह समाप्त होने पर दोषारोपण करते हुए श्री साई बाबा पर वचन भंग करने का आरोप लगा कर बापूसाहेब जोग को पत्र लिखा। जोग पत्र को लेकर बाबा के पास गये। लेकिन, बाबा ने पत्र को पढ़ने से पहले ही कहा, “अरे, मैंने वहाँ जाने का वचन दिया था, तो उसे कोई धोखा नहीं दिया। उसे सूचित करो कि मैं अन्य दो बालकों के साथ भोजन में उपस्थित था। परन्तु, जब वह मुझे पहचान ही नहीं सका, तब उसने निमंत्रण देने का कष्ट ही क्यों उठाया? उसे लिखो कि उसने सोचा होगा कि वह संन्यासी चंदा माँगने आया है। क्या मैंने उसका संदेह दूर नहीं कर दिया था कि दो अन्य व्यक्तियों के साथ मैं भोजन के लिए आऊँगा और क्या वे त्रिमूर्तियाँ ठीक समय पर भोजन में सम्मिलित नहीं हुईं? देखो! मैं अपना वचन पूर्ण करने के लिए अपना सर्वस्व



निछावर कर दूँगा। मेरे शब्द कभी असत्य नहीं निकलेंगे।”

श्री साई बाबा के इस उत्तर से जोग को अत्यधिक प्रसन्नता हुई और उन्होंने उपर्युक्त उत्तर देव को लिख कर भेज दिया। देव ने जब इस पत्र को पढ़ा, तब उनके नेत्रों से आँसू प्रवाहित होकर स्वयं पर क्रोध भी आया कि उन्होंने बाबा पर व्यर्थ ही दोषारोपण क्यों किया! देव को आश्चर्य हुआ कि उन्होंने संन्यासी, जो चंदा माँगने आया था, की पूर्व यात्रा से कैसे धोखा खाया और वे संन्यासी के इन शब्दों का अर्थ भी नहीं समझ सके - “अन्य दो व्यक्तियों के साथ भोजन पर आऊँगा।” इस कथा से विदित है कि जब भक्त अनन्य भाव से सद्गुरु की शरण में आता है, तभी उसे अनुभव होता है कि उसके सभी धार्मिक कृत्य ठीक तरह प्रारम्भ होकर निर्विघ्न सम्पन्न भी हो जाते हैं।

श्री रामचन्द्र उर्फ बाबासाहेब तर्खड की पत्नी व पुत्र श्री साई बाबा के परम भक्त थे। लेकिन, तर्खड प्रारम्भ में प्रार्थना समाजी थे; मगर बाद में बाबा के पक्के भक्त बन गये। एक बार उनकी पत्नी और पुत्र ने गर्मी की छुट्टियाँ शिर्डी में बिताने का निश्चय किया। लेकिन, पुत्र को यह आशंका थी, चूँकि पिताजी प्रार्थना समाजी हैं, इसलिए उनकी अनुपस्थिति में बाबा का विधि पूर्वक पूजन नहीं हो सकेगा। इसी वजह से पुत्र बान्द्रा छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। लेकिन, पिताजी द्वारा यह आश्वासन देने पर कि बाबा

का पूजन यथा विधि होगा, तब माँ और बेटे ने शिर्डी के लिए प्रस्थान किया।

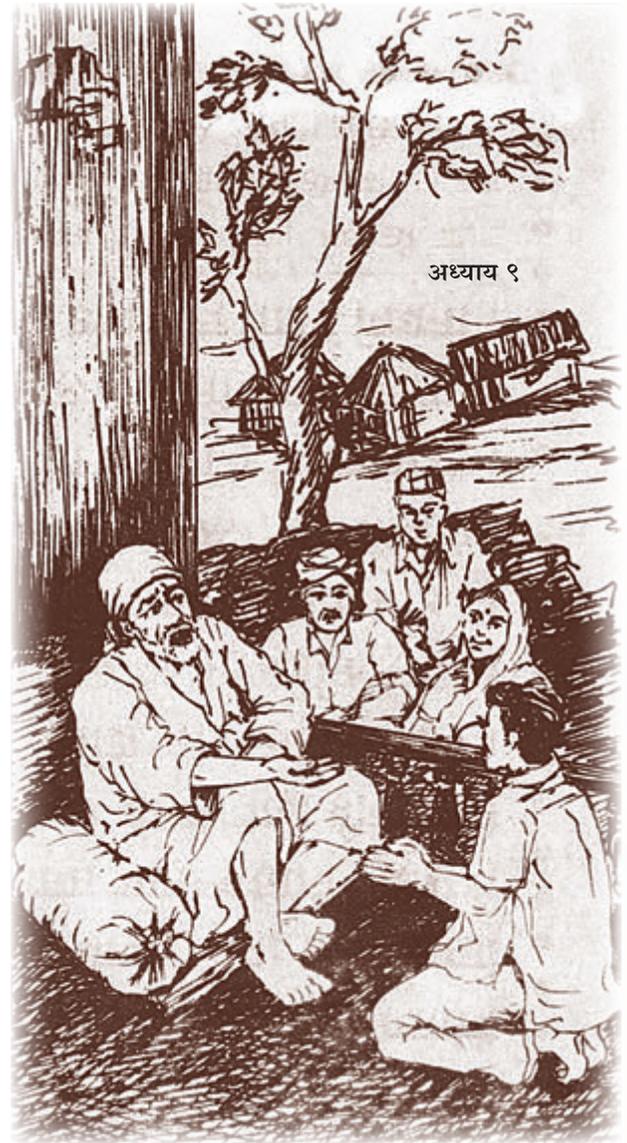
अगले दिन तर्खड ने पूजन प्रारम्भ करने के पूर्व बाबा को नमन करते हुए कहा, “हे बाबा, मैं ठीक वैसा ही आपका पूजन करता रहूँगा, जैसे मेरा पुत्र करता रहा है; परन्तु कृपा कर इसे शारीरिक परिश्रम तक ही सीमित न रखना।” तर्खड ने इससे पूर्व कभी पूजा-अर्चना नहीं की थी; परन्तु बाबा की पूजा करके उनके हृदय में अपार संतोष हुआ। लेकिन, वे एक दिन बाबा को भोग लगाना भूल गये, तब उन्होंने बाबा से क्षमा-याचना करते हुए उचित पथ-प्रदर्शन न करने का उलाहना दिया और सम्पूर्ण घटना का विवरण अपने पुत्र को पत्र द्वारा सूचित करते हुए कहा कि वह पत्र बाबा के श्री-चरणों पर रख कर कहना कि वे इस अपराध के लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

उपरोक्त घटना बान्द्रा में दोपहर के आसपास हुई थी और उसी समय शिर्डी में जब दोपहर की आरती शुरू होने वाली थी, तब बाबा ने श्रीमती राधाबाई तर्खड से कहा, “माँ, मैं कुछ भोजन पाने के विचार से तुम्हारे घर बान्द्रा गया। मगर, मैंने द्वार पर ताला लगा देख कर भी किसी तरह घर में प्रवेश किया। परन्तु, वहाँ देखा कि भाऊ (बाबासाहेब तर्खड) मेरे लिए कुछ भी खाने को नहीं रख गये हैं। अतः मैं भूखा ही लौट आया हूँ।” किसी को भी बाबा के वचनों का अभिप्राय समझ में नहीं आया। लेकिन, श्रीमती तर्खड का पुत्र, जो वहीं खड़ा हुआ था, वह तुरन्त समझ गया कि बान्द्रा में पिताजी से बाबा के पूजन में कहीं कुछ गलती हुई है। इसलिए उसने बाबा से शिर्डी से बान्द्रा के लिए लौटने की आज्ञा माँगी। परन्तु, बाबा ने उसको शिर्डी से प्रस्थान करने की अनुमति नहीं दी और वहीं उसको पूजन करने का आदेश दिया। पुत्र ने शिर्डी में जो कुछ हुआ, उसे पत्र के माध्यम से पिताजी को अवगत करते हुए भविष्य में पूजा में सावधानी बरतने के लिए विनती की। दोनों पत्र डाक द्वारा दूसरे दिन दोनों पक्षों को एक साथ ही प्राप्त हुए।

श्री साई बाबा के श्री रघुवीर भास्कर पुरंदरे नामक एक भक्त बान्द्रा से शिर्डी जा रहे थे, तो श्रीमती राधाबाई तर्खड ने उनकी पत्नी श्रीमती पुरंदरे को दो बैंगन इस प्रार्थना के साथ दिये कि वे एक बैंगन का भुर्ता और दूसरे के कुरकुरे (बैंगन के गोल टुकड़े घी में तले हुए) बना कर श्री साई बाबा को उनकी ओर से अर्पित करें। श्रीमती पुरंदरे शिर्डी पहुँचने पर भुर्ता लेकर मस्जिद गई, तो बाबा उसी समय भोजन के लिए

बैठे थे। बाबा को बैंगन का भुर्ता बड़ा स्वादिष्ट लगा और उन्होंने थोड़ा-थोड़ा भुर्ता अन्य भक्तों को भी वितरित किया। तत्पश्चात् बाबा ने कुरकुरे लाने के लिए कहा, तो इस बारे में राधाकृष्णामाई के पास संदेश भिजवाया गया। लेकिन, उन दिनों बैंगन की ऋतु नहीं थी; इसलिए यह समस्या उत्पन्न हुई कि बैंगन कहाँ से, किस प्रकार उपलब्ध हो? जब इस बात का पता लग गया कि भुर्ता कौन लेकर आया, तब विदित हुआ कि श्रीमती पुरंदरे बैंगन लेकर आई थीं। तब उन्हीं को कुरकुरे बनाने का कार्य सौंपा गया। श्री साई बाबा की इस पूछताछ का अभिप्राय ज्ञात होने पर वहाँ उपस्थित सभी भक्तों को उनकी सर्वज्ञता पर अत्यधिक आश्चर्य हुआ।

वर्ष १९१५ के दिसम्बर महीने में श्री गोविंद बालाराम मानकर शिर्डी के लिए प्रस्थान करने से पूर्व श्रीमती राधाबाई



तर्खड से मिलने आये, तो उन्होंने मानकर के हाथ श्री साई बाबा को अर्पित किये जाने के लिए पेड़ा दिया। मानकर शिर्डी पहुँचने पर जब बाबा के दर्शन हेतु मस्जिद में गये, तब साथ में पेड़ा ले जाना भूल गये। लेकिन, जब वे दुबारा शाम को भी बिना पेड़ा लिए पहुँचे, तब बाबा ने पूछा, “तुम मेरे लिए क्या लाये हो?” उत्तर में मानकर ने कहा, “कुछ नहीं।” बाबा ने पुनः प्रश्न किया, तो मानकर से फिर वही जवाब मिला। तब बाबा ने स्पष्ट पूछा, “क्या माँ (श्रीमती तर्खड) ने चलते समय कुछ मिठाई नहीं दी थी?” तब उनको तुरन्त ही पेड़े की याद आ गई और वे बहुत लज्जित होकर उनसे क्षमा-याचना करने लगे। इसके पश्चात् जब उन्होंने पेड़ा लाकर बाबा के समक्ष रखा, तो उन्होंने तुरन्त ही उस पेड़े को खा लिया।



एक बार श्रीमती राधाबाई तर्खड शिर्डी आई, तो दोपहर का भोजन तैयार हो चुका था। उसी समय वहाँ एक भूखा कुत्ता आकर भौंकने लगा। श्रीमती तर्खड ने रोटी का टुकड़ा कुत्ते को दिया, तो कुत्ते ने बड़ी रुचि के साथ उस टुकड़े को खा लिया। शाम को जब श्रीमती तर्खड मस्जिद में जाकर बैठीं, तो श्री साई बाबा ने कहा, “माँ, आज तुमने मुझे बड़े प्रेम से खिलाया, मेरी भूखी आत्मा को बड़ी तृप्ति मिली है। सदैव ऐसा ही करती रहो, तुम्हें कभी न कभी इसका उत्तम फल अवश्य प्राप्त होगा। इस मस्जिद में बैठ कर मैं कभी असत्य नहीं बोलूँगा। सदैव मुझ पर ऐसा ही अनुग्रह करती रहो। पहले भूखों को भोजन कराओ, बाद में तुम भोजन किया करो। इसे अच्छी तरह ध्यान में रखो।”

श्री साई बाबा के उक्त शब्दों का अर्थ जब श्रीमती तर्खड की समझ में नहीं आया, तब बाबा ने पुनः कहा - “उस रोटी को ग्रहण कर मेरा हृदय तृप्त हो गया है और अभी तक मुझे डकारें आ रही हैं। भोजन करने से पूर्व तुमने जो कुत्ता देखा और जिसे तुमने रोटी का टुकड़ा दिया, वह यथार्थ में मेरा ही स्वरूप था और इसी प्रकार अन्य प्राणी - बिल्लियाँ, सुअर, मक्खियाँ, गाय इत्यादि भी मेरे ही स्वरूप हैं। मैं ही उनके आकारों में डोल रहा हूँ। जो इन सब प्राणियों में मेरा दर्शन करता है, वह मुझे अत्यन्त प्रिय है। इसलिए द्वैत या भेदभाव भूल कर तुम मेरी सेवा किया करो।” श्रीमती तर्खड श्री साई बाबा के उक्त उपदेशों को ग्रहण करके द्रवित हो गईं और उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं। उनका गला रूंध गया तथा प्रसन्नता का भी कोई पारावार नहीं रहा।

काकासाहेब दीक्षित श्री एकनाथ महाराज के नाथ भागवत और भावार्थ रामायण ग्रन्थों का प्रतिदिन पारायण करते थे। एक बार जब वह रामायण का पारायण कर रहे थे, तब श्रद्धालु भी इसका आनंद ले रहे थे। श्री गोविंद उर्फ अण्णासाहेब दाभोलकर उर्फ हेमाडपंत भी वहाँ उपस्थित थे। लेकिन, न मालूम कैसे एक बड़ा बिच्छू हेमाडपंत के ऊपर गिर कर उनके दायें कंधे पर बैठ गया तथा इसका किसी को भी पता नहीं चला। हेमाडपंत की दृष्टि अचानक ही जब कंधे पर गई, तो उन्हें बिच्छू मृत-सा दिखाई दिया और साथ ही ऐसा भी लगा कि मानो वह भी कथा के आनंद में डूब गया है। उन्होंने ईश्वर की इच्छा समझ कर अन्य श्रद्धालुओं में बिना कोई विघ्न डाले अपनी धोती के दोनों सिरे मिला कर

उसमें बिच्छू को लपेट कर दूर ले जाकर एक बगीचे में छोड़ दिया।

एक अन्य अवसर की बात है कि काकासाहेब दीक्षित शाम को वाड़े के ऊपरी खंड में बैठे हुए थे, तभी एक साँप खिड़की की चौखट के एक छेद से अंदर घुस कर कुंडली मार कर बैठ गया। लालटेन लाने पर साँप पहले तो थोड़ा दिखाई दिया, लेकिन फिर वहीं शांत बैठ कर अपना फन हिलाने लगा। वहाँ उपस्थित बहुत से लोग छड़ी व डंडे के साथ दौड़ कर आये। लेकिन, साँप एक ऐसे सुरक्षित स्थान पर बैठा हुआ था, जहाँ किसी के प्रहार का उस पर कोई भी असर नहीं पड़ता था। शोर सुनने के पश्चात् साँप के उसी छेद से अदृश्य होने पर भक्तों की जान में जान आई।

साँप के अदृश्य होने पर मुक्ताराम नामक एक भक्त ने कहा कि अच्छा हुआ, जो एक जीव बेचारा बच गया। लेकिन, दूसरे भक्त ने उसकी बात की अवहेलना करते हुए कहा कि साँप को मारना ही उचित था। तब इस विषय पर वाद-विवाद बढ़ने लगा। किसी का मत था कि साँप तथा उसके समान अन्य जन्तुओं को मार डालना ठीक है; परन्तु कुछ का मत इसके विपरीत भी था। लेकिन, सभी भक्तों ने रात अधिक होने के कारण बिना किसी निष्कर्ष पर पहुँचे इस विवाद को स्थगित कर दिया।

श्री साई बाबा के समक्ष अगले दिन जब इस प्रश्न को लाया गया, तब बाबा ने निम्नांकित निर्णयात्मक वचन कहे - “सब जीवों में और समस्त प्राणियों में ईश्वर का निवास है, चाहे वह साँप हो या बिच्छू। वो ही इस विश्व का नियंत्रणकर्ता है और सब प्राणी - साँप, बिच्छू इत्यादि उसकी आज्ञा का ही पालन करते हैं। उसकी इच्छा के बिना कोई भी दूसरों को हानि नहीं पहुँचा सकता। समस्त विश्व उसके अधीन है तथा कोई भी स्वतंत्र नहीं है। इसलिए हमें सब प्राणियों पर दया व उनसे स्नेह करना चाहिए तथा वैमनस्य या संहार करना छोड़ कर शांत चित्त से जीवन व्यतीत करना चाहिए। ईश्वर सबका ही रक्षक है।”

श्री साई बाबा एक बार मस्जिद में बैठे हुए थे, तो उस समय एक छिपकली चिकचिक करने लगी। एक भक्त ने बाबा से जिज्ञासावश पूछा कि छिपकली के चिकचिकाने का क्या कोई खास अर्थ है; और यह शुभ है अथवा अशुभ? तब, बाबा ने उस भक्त को बताया, “इस छिपकली की

बहन आज औरंगाबाद से यहाँ आने वाली है। इसलिए यह खुशी से फूली नहीं समा रही है।” लेकिन, वह भक्त बाबा के शब्दों का अर्थ नहीं समझ पाया और वहीं चुपचाप बैठा रहा।

उसी समय श्री साई बाबा के दर्शन हेतु एक आदमी औरंगाबाद से घोड़े पर आया। वह घोड़े को मस्जिद से थोड़ा आगे ले जाना चाहता था; लेकिन घोड़ा अधिक भूखा होने के कारण आगे नहीं बढ़ रहा था। इसलिए उसने चना लाने के लिए एक थैली निकाल कर धूल झाड़ने के लिए उसे ज़मीन पर पटका, तो उसमें से एक छिपकली निकली तथा वह सभी भक्तों के देखते-देखते दीवार पर चढ़ गई। छिपकली तुरन्त ही गर्व के साथ अपनी बहन (दूसरी छिपकली) के पास



पहुँच गई और दोनों बहनें बहुत देर तक एक दूसरे से मिल कर तथा परस्पर चुंबन व आलिगन करके चारों तरफ़ घूम-घूम कर प्रेम पूर्वक नाचने लगीं।

श्री साई बाबा ने प्रश्न करने वाले भक्त से इस दृश्य को ध्यान पूर्वक देखने के लिए कहा। शिर्डी औरंगाबाद से काफ़ी दूर है। लेकिन, यह **बाबा की सर्वव्यापकता** का द्योतक है कि किस प्रकार एक आदमी घोड़े पर सवार होकर थैली में छिपकली के साथ वहाँ पहुँचता है और बाबा को उन दोनों बहनों की भेंट होने का पता पहले से ही कैसे चल जाता है!

श्री साई बाबा सभी भक्तों के भावों का आदर करते थे और उनकी इच्छानुसार पूजा-अर्चना में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं करते थे। एक बार की बात है कि बाबा के एक भक्त तात्यासाहेब नूलकर के मित्र डॉक्टर पंडित बाबा के दर्शन हेतु शिर्डी आये। केवल पं. म्हालसापति ही बाबा के गले में चंदन लगाया करते थे तथा उनके अलावा अन्य कोई भी बाबा के शुभ मस्तक पर चंदन लगाने का साहस नहीं करता था। लेकिन, डॉ. पंडित ने जब पूजा की थाली

से चंदन लेकर बाबा के मस्तक पर त्रिपुण्डाकार लगाया, तब सभी भक्तों को महान् आश्चर्य हुआ कि बाबा ने उनको कुछ भी क्यों नहीं कहा ?

श्री दादा भट्ट ने श्री साई बाबा से शाम के वक़्त पूछा, “क्या कारण है कि आप दूसरों को तो मस्तक पर चंदन नहीं लगाने देते; परन्तु डॉक्टर पंडित को आपने कुछ भी नहीं कहा ?” बाबा ने उन्हें बताया, “डॉ. पंडित ने मुझे अपने गुरु श्री रघुनाथ महाराज धोपेश्वरकर, जो काका पुराणिक के नाम से प्रसिद्ध हैं, के समान ही समझा और वे अपने गुरु को जिस प्रकार चंदन लगाते थे, उसी भावना से मुझे चंदन लगाया। तब मैं उन्हें कैसे रोक सकता था !” इस बारे में जब डॉ. पंडित से जानकारी प्राप्त की गई, तो उन्होंने दादा भट्ट को बताया कि वे अपने गुरु को जिस प्रकार त्रिपुण्डाकार चंदन लगाया करते थे, उसी प्रकार उन्होंने बाबा को अपने गुरु काका पुराणिक के समान जान कर ही त्रिपुण्डाकार चंदन लगाया।

एक बार दासगणु महाराज महाराष्ट्र राज्य के ठाणे के श्री कौपीनेश्वर मंदिर में श्री साई बाबा का गुणगान कर रहे थे, तब चोलकर नामक एक व्यक्ति, जो ठाणे के दीवानी न्यायालय में अस्थाई कर्मचारी था, भी उपस्थित था। दासगणु के कीर्तन से बाबा की महिमा सुन कर चोलकर इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने मन ही मन बाबा को नमन करते हुए प्रार्थना की - “हे बाबा ! मैं एक निर्धन व्यक्ति हूँ और अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण भी भली-भाँति करने में असमर्थ हूँ। यदि मैं आपकी कृपा से विभागीय परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया, तो आपके श्री-चरणों में उपस्थित होकर आपके निमित्त मिश्री का प्रसाद वितरित करूँगा।” चोलकर बाबा की अनुकम्पा से परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया और उसकी नौकरी स्थाई हो गई।

चोलकर गरीब था और उसका परिवार भी बड़ा था। इसलिए, उसे धनाभाव के कारण श्री साई बाबा के दर्शन हेतु शिर्डी जाने में अड़चन आ रही थी। लेकिन, वह बाबा के दर्शन करके शीघ्र ही अपने संकल्प को भी पूरा करना चाहता था। इसलिए, उसने अपने खर्च में कुछ कमी करने का निश्चय करते हुए बिना चीनी की चाय पीना शुरू कर दिया। इस प्रकार मितव्ययी बनते हुए उसने कुछ धनराशि एकत्र कर ली और बाबा के दर्शन करने हेतु शिर्डी पहुँच गया। चोलकर ने बाबा के दर्शन करके उनके श्री-चरणों पर गिर कर नारियल भेंट किया और अपने संकल्पानुसार श्रद्धा



से मिश्री भी वितरित की तथा बाबा से कहा कि आपके दर्शन से मेरे हृदय को अत्यधिक खुशी हुई है। मेरी सभी इच्छाएँ तो आपकी कृपा दृष्टि से उसी दिन पूरी हो गई थीं।

बापूसाहेब जोग भी मस्जिद में उपस्थित थे। जब वे चोलकर को आतिथ्य के लिए अपने साथ लेकर जाने लगे, तब बाबा ने जोग से कहा, “अपने अतिथि को चाय के प्याले में अच्छी तरह शक्कर मिला कर देना।” जैसे ही चोलकर ने बाबा के इन शब्दों को सुना, तो उसका हृदय गदगद हो गया और उसको उनकी त्रिकालदर्शिता पर महान् आश्चर्य हुआ। उसकी आँखों से आँसू की धाराएँ प्रवाहित होने लगीं और वह प्रेम से विह्वल होकर बाबा के श्री-चरणों पर गिर पड़ा। लेकिन, जोग को “अपने अतिथि को चाय के प्याले में अच्छी तरह शक्कर मिला कर देना” का अर्थ समझ में नहीं आया। परन्तु, उन्हें भी बाद में इसका अर्थ मालूम होने पर आश्चर्य हुआ कि बाबा चोलकर के शक्कर छोड़ने के गुप्त निश्चय से भली-भाँति परिचित हैं।

एक बार गोवा से दो व्यक्ति श्री साई बाबा के श्री-चरणों में शिर्डी आये। बाबा ने उस समय दो कथाएँ सुनाई, जो उन दोनों व्यक्तियों के बारे में ही थीं। बाबा ने कथाएँ सुनाने के पश्चात् माधवराव देशपांडे उर्फ शामा से दोनों व्यक्तियों को अपने साथ ले जाने और भोजन का प्रबंध करने के लिए कहा। भोजन करते समय शामा ने उन व्यक्तियों से कहा कि बाबा की दोनों कथाएँ बहुत रहस्यपूर्ण थीं। क्या आप लोगों को बाबा की कथाओं का अर्थ समझ में आया ? तब, वे दोनों व्यक्ति हैरान हो गये और उन्होंने कहा कि बाबा ने जो कथाएँ सुनाई हैं, वे हमारे ऊपर बीत चुकी हैं तथा वे हमारे बारे में ही हैं। दोनों व्यक्तियों को श्री साई बाबा की सर्वव्यापकता पर महान् आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा कि **बाबा सर्वव्यापी, अनन्त और परब्रह्म स्वरूप हैं।**

नानासाहेब चाँदोरकर का स्थानान्तरण जब पंढरपुर, ज़िला सोलापुर के लिए हुआ, तब समयाभाव के कारण वे किसी को इसकी पूर्व सूचना दिये ही शिर्डी पहुँच कर बाबा को नमन करते हुए पंढरपुर के लिए प्रस्थान करना चाहते थे। उनके आगमन की शिर्डी में किसी को भी कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन, चाँदोरकर शिर्डी से कुछ ही दूरी पर होंगे, उस समय बाबा पास में बैठे हुए तीन भक्तों से वार्तालाप कर रहे थे। तभी बाबा ने अचानक ही कहा, “चलो, चारों मिल कर भजन करें। पंढरपुर के द्वार खुले हुए हैं।” कुछ ही समय में चाँदोरकर आ गये और उन्होंने बाबा से पंढरपुर,

जो भगवान् विष्णु का वैकुण्ठ धाम है तथा पृथ्वी के स्वर्ग के समान समझा जाता है, में निवास करने की प्रार्थना की। जब भक्तों ने चाँदोरकर को बताया कि श्री साई बाबा पंढरपुर वास के भाव में पहले से ही थे, तो वे यह सुन कर द्रवित होकर उनके श्री-चरणों पर गिर पड़े। वे बाबा की अनुमति, उदी और आशीर्वाद प्राप्त करके पंढरपुर के लिए रवाना हुए।

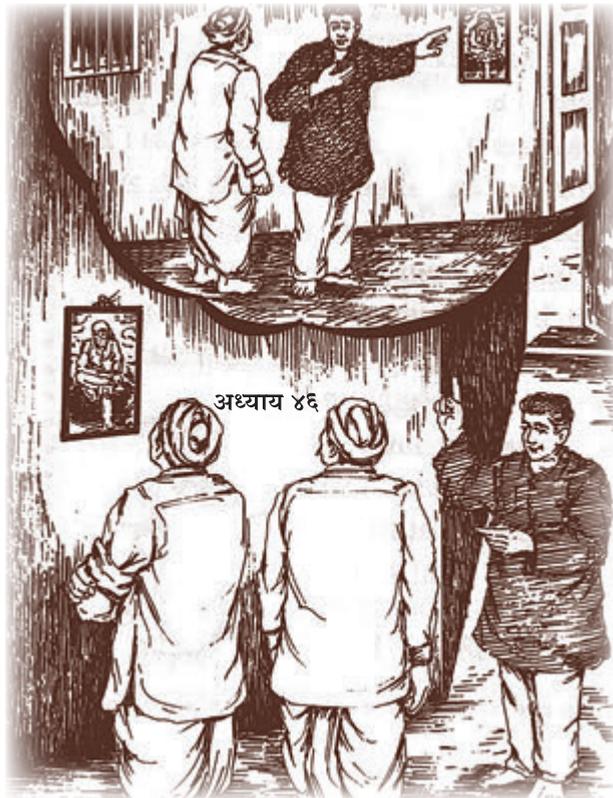
काकासाहेब दीक्षित ने नागपुर में अपने ज्येष्ठ पुत्र के उपनयन संस्कार में श्री साई बाबा को शामिल होकर आशीर्वाद देने के लिए प्रार्थना की। नानासाहेब चाँदोरकर ने भी उसी समय अपने ज्येष्ठ पुत्र की शादी ग्वालियर में करने का निश्चय किया और उन्होंने भी आदर सहित बाबा को समारोह में शामिल होने के लिए निवेदन किया। बाबा ने माधवराव देशपांडे उर्फ शामा को अपने प्रतिनिधि के तौर पर उक्त दोनों समारोह में ले जाने के लिए कहा। लेकिन, जब दीक्षित व चाँदोरकर ने श्री साई बाबा को स्वयं पधारने के लिए प्रार्थना की, तब बाबा ने उनसे कहा, “बनारस और प्रयाग निकल जाने के पश्चात् मैं शामा से पहले ही पहुँच जाऊँगा।”

श्री साई बाबा की अनुमति मिलने पर शामा ने २५ फरवरी, १९१२ में शिर्डी से प्रस्थान किया तथा पहले नागपुर, ग्वालियर और उसके बाद काशी, प्रयाग और गया जाने का निश्चय किया। शामा के साथ श्री आप्पा कोते भी गये। सर्वप्रथम वे उपनयन संस्कार समारोह में नागपुर पहुँचे और उसके बाद ग्वालियर में शादी में शामिल हुए। तत्पश्चात् वे काशी और प्रयाग होते हुए रात्रि में गया स्टेशन पहुँच कर एक धर्मशाला में ठहरे। उन दिनों गया में प्लेग की बीमारी फैली हुई थी। सुबह एक पुजारी, जो यात्रियों के ठहरने व भोजन की व्यवस्था करता था, ने आकर उनसे कहा कि सभी यात्री प्रस्थान कर चुके हैं; इसलिए आप भी जाने में शीघ्रता करें। शामा ने उस पुजारी से पूछा कि क्या गया में प्लेग फैला हुआ है ? पुजारी ने जवाब में कहा, “नहीं। आप निर्विघ्न होकर मेरे यहाँ पधार कर वस्तुस्थिति का स्वयं अवलोकन कर लें।” तब वे उस पुजारी के मकान पर गये। उस पुजारी का मकान एक साधारण मकान न होकर आलीशान भवन था तथा उसमें काफ़ी यात्री विश्राम कर सकते थे। उस भवन के अग्रिम भाग के मध्य में श्री साई बाबा का एक बड़ा चित्र लगा हुआ था, जिसे देख कर शामा को तुरन्त ही बाबा के इन शब्दों की याद आ गई - “बनारस और प्रयाग निकल जाने के पश्चात् मैं शामा से पहले ही पहुँच जाऊँगा।” बाबा

की यह अद्भुत लीला देख कर शामा के नेत्रों से अश्रु बहने लगे, शरीर में रोमांच आकर गला रूंध गया तथा रोते हुए धिगधियाँ भी बंध गईं।

शामा की इस स्थिति को देख कर पुजारी ने सोचा कि सम्भवतः वह प्लेग की बीमारी की जानकारी मिलने पर भयभीत होकर रो रहा है। लेकिन, उसी दौरान शामा ने पुजारी से प्रश्न किया कि श्री साई बाबा का यह चित्र कहाँ से प्राप्त हुआ है? तब उस पुजारी ने उत्तर दिया कि उसके दो-तीन सौ दलाल मनमाड और पुणताम्बे क्षेत्र में कार्य करते हैं तथा वे उस क्षेत्र से गया आने वाले यात्रियों की सुविधा का विशेष ध्यान रखते हैं। उसको १२ वर्ष पहले शिर्डी के साई नाथ महाराज की कीर्ति सुनने को मिली थी, तब वह उनके दर्शन हेतु शिर्डी गया। वह वहाँ शामा के घर लगे हुए बाबा के चित्र से आकर्षित हुआ। तब बाबा की अनुमति से शामा ने यह चित्र उसको भेंट किया था।

शामा को तुरन्त ही १२ वर्ष पूर्व की घटना याद आ गई। जब पुजारी को यह मालूम हुआ कि वही शामा आज उसके यहाँ अतिथि बन कर ठहरा है, तब उसको अत्यधिक प्रसन्नता हुई तथा उसने शामा का बहुत सम्मान किया। श्री साई बाबा के वचन सत्य निकले - “बनारस और प्रयाग निकल जाने के पश्चात् मैं शामा से पहले ही पहुँच जाऊँगा।”



वास्तव में श्री साई बाबा सर्वव्यापक एवं अनंत हैं तथा वे अपने भक्तों पर अपार स्नेह रख कर हर समय उनके साथ रहते हैं।

महाराष्ट्र राज्य के नांदेड (निज़ाम रियासत) के श्री रतनजी शापुरजी वाडिया नाम के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। वे बहुत अधिक धनवान थे; लेकिन संतान न होने के कारण काफ़ी दुःखी रहते थे। वे दासगणु महाराज से श्री साई बाबा की कीर्ति सुन कर संतान हेतु शिर्डी आये और बाबा को एक सुंदर हार पहना कर फल व फूल भेंट किये। तत्पश्चात् उन्होंने बड़े आदर के साथ उनके श्री-चरणों के निकट बैठ कर प्रार्थना की - “अनेक आपत्तिग्रस्त लोग आपके पास आते हैं और आप उनके कष्ट तुरन्त दूर कर देते हैं। यही कीर्ति सुन कर मैं भी बड़ी आशा से आपके श्री-चरणों में आया हूँ। मुझे बड़ा भरोसा हो गया है; कृपया मुझे निराश न कीजिये।”

श्री साई बाबा ने वाडिया से ५/- रुपये दक्षिणा में माँगे। साथ ही उन्होंने यह भी कहा, “मुझे तुमसे तीन रुपये चौदह आने पहले ही प्राप्त हो चुके हैं। इसलिए केवल शेष रुपये ही दो।” वाडिया बाबा की इन बातों को सुन कर असमंजस में पड़ गये और उन्हें उनके कथन का अभिप्राय समझ में नहीं आया। वे सोचने लगे कि शिर्डी में वे पहली बार आये हैं और बाबा कह रहे हैं कि उनको ‘तीन रुपये चौदह आने’ पहले ही प्राप्त हो चुके हैं। वाडिया बाबा के श्री-चरणों के सन्निकट बैठ गये और उन्होंने शेष दक्षिणा उनको अर्पित करते हुए पुत्र प्राप्ति हेतु प्रार्थना की। बाबा को उन पर दया आ गई और उन्होंने कहा, “चिंता त्याग दो; अब तुम्हारे दुर्दिन समाप्त हो गये हैं।” तत्पश्चात् बाबा ने उदी देकर अपना हाथ उनके मस्तक पर रख कर कहा, “अल्लाह तुम्हारी इच्छा पूरी करेगा।”

श्री साई बाबा से अनुमति लेकर वाडिया नांदेड वापस आ गये और उन्होंने शिर्डी में जो कुछ हुआ, उसका पूरा विवरण दासगणु को सुनाया। दासगणु के लिए भी ‘तीन रुपये चौदह आने’ वाली बात पहली की तरह बन गई। लेकिन, कई दिनों के पश्चात् दासगणु को याद आया कि कुछ दिन पहले वाडिया ने एक प्रसिद्ध मुस्लिम संत मौला साहब, जो कुली का कार्य करते थे, को अपने घर आतिथ्य के लिए निमंत्रण दिया था। वाडिया ने जब शिर्डी जाने का निश्चय किया, तब उन्होंने वहाँ जाने से पूर्व उनके आदर-सत्कार में जलपान की व्यवस्था भी की थी। दासगणु ने वाडिया



अध्याय १४



से मौला साहब के जलपान में व्यय हुई धनराशि की सूची माँगी, तो सभी को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि उसमें व्यय की गई राशि 'तीन रुपये चौदह आने' ही आई। वाडिया की श्री साई बाबा के श्री-चरणों में अपार श्रद्धा हो गई तथा उनकी कृपा से उन्हें पुत्र रत्न भी प्राप्त हुआ।

श्री साई बाबा यद्यपि शिर्डी में ही विराजमान रहते थे, फिर भी शिर्डी के बाहर क्या हो रहा है, इसका उन्हें पूरा ज्ञान रहता था। वास्तव में वे भूत, भविष्य व वर्तमान के पूर्ण ज्ञाता थे और प्रत्येक आत्मा तथा हृदय के साथ संबद्ध थे। अन्यथा उनको मौला साहब के स्वागत में व्यय की गई धनराशि की जानकारी कैसे विदित हो सकती थी!

श्री साई बाबा के श्री-चरणों में भिक्षुक व गरीब असहाय व्यक्ति से लेकर प्रतिष्ठित व्यक्ति, उच्च अधिकारी, राजघराने के सदस्य इत्यादि सभी प्रकार के लोग आते थे। उनके पास अनेक साधक, साधु-संत, सिद्ध-अवधूत भी आध्यात्मिक संरक्षण के लिए आये। तात्यासाहेब नूलकर (उप न्यायाधीश), श्री बी. ए. चौगुले (उप न्यायाधीश), नानासाहेब निमोणकर (अवैतनिक न्यायाधीश), बापूसाहेब बूटी (नागपुर के प्रसिद्ध व्यक्ति), रावबहादुर हरी विनायक साठे (डिप्टी कलेक्टर), श्री जोशी (डिप्टी कलेक्टर, धुलिया), नानासाहेब चाँदोरकर (मामलतदार), श्री बी. वी.

देव (मामलतदार), श्री साने (मामलतदार, कोपरगाँव), बालासाहेब मिरीकर (मामलतदार), काकासाहेब दीक्षित (उच्च शिक्षा प्राप्त कानूनी सलाहकार), दादासाहेब खापर्डे (मशहूर एडवोकेट), श्री बालाराम धुरन्धर (प्राचार्य, शासकीय विधि विद्यालय, मुम्बई) एवं प्रो. जी. के. नारके (जिनकी शिक्षा लंदन में हुई थी तथा जो पूना में भू-गर्भ शास्त्र के प्रोफेसर थे) बाबा के परम भक्त थे। इनके अलावा अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को भी बाबा के सन्निकट रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आदरणीय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का १९ अप्रैल, १९१७ में शिर्डी आने का प्रमाण दादासाहेब खापर्डे की 'शिर्डी डायरी' में मिलता है।

श्री साई बाबा के जीवन काल की भाँति आज भी गरीब असहाय से लेकर बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ, अधिकारी, उद्योगपति व अन्य ख्याति प्राप्त व्यक्ति उनके श्री-दर्शन के लिए शिर्डी आते हैं। आज श्री साई बाबा के पवित्र तीर्थ धाम शिर्डी से लेकर देश-विदेश के अन्य पावन स्थल, जहाँ कहीं भी उनकी पावन प्रतिमा विराजमान है, श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है तथा नित्य प्रति हर वर्ग व धर्म के व्यक्ति उनसे जुड़ रहे हैं।

डॉ. फारुख अब्दुल्ला, पूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार, ने अगस्त, २००९ में शिर्डी में पत्रकारों से वार्ता

के दौरान बताया था कि किस प्रकार शिर्डी आने की उनकी दिली तमन्ना थी। उन्होंने बताया कि उनके एक अरबपति मित्र का हेलीकॉप्टर अमेरिका के अमेज़ॉन के जंगलों में फँस गया। वह हेलीकॉप्टर समेत तीन दिनों से ज़िंदगी और मौत से जूझ रहा था। उसकी बाबा में बहुत श्रद्धा थी। भूखे प्यासे उस मित्र ने साई बाबा से गुहार लगाई।... तीसरे दिन उधर से गुज़रते हुए एक हेलीकॉप्टर को उस मित्र ने देखा, तभी उसने एक धुँआ निकाला। उस धुँए को देख कर वहाँ से गुज़र रहा हेलीकॉप्टर मदद के लिए नीचे उतरा, तब जंगल में फँसा हेलीकॉप्टर बाहर निकल पाया। मित्र बच गया। उसने मुझे यह घटना सुनाई, तो मेरी भी तमन्ना थी कि ऐसे फ़क़ीर के मैं भी दर्शन करूँ। हज़ारों कि.मी. दूर भी बाबा अपने भक्तों का कैसे ध्यान रखते हैं! अपने दर पर बुलाने वाले सद्गुरु के दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया। मेरी इच्छा है कि मैं बार-बार शिर्डी आता रहूँ। डॉ. फारूख अब्दुल्ला जी ने बाबा की दोपहर की आरती के समय विधिवत पूजा की। वे जिस समय शिर्डी में बाबा की समाधि पर माथा टेक रहे थे, उसी समय उनके पुत्र और जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री उमर अब्दुल्ला को एक संवेदनशील प्रकरण में सता रही समस्या दूर हो गई।

एक बार श्री दामूअण्णा, जो बाबा के परम भक्तों में से एक थे, उनके श्री-चरणों के निकट बैठे हुए थे, तब उन्होंने बाबा से प्रश्न किया कि “बाबा, आपके निर्वाण के बाद हम बिल्कुल निराश्रित हो जायेंगे, ऐसी स्थिति में हमारा क्या होगा?” इसका बाबा ने बहुत ही सरलता से संतोषजनक उत्तर दिया कि “**जब और जहाँ कहीं भी तुम मेरा स्मरण करोगे, मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगा।**”

बाबा के ये वचन आज भी सत्य हैं। उन्होंने इन वचनों को समाधिस्थ (१५ अक्टूबर, १९१८) होने से पूर्व भी निभाया और १५ अक्टूबर, १९१८ के पश्चात् आज भी उसी प्रकार निभा रहे हैं।

यह सत्य है कि मनुष्य जब सद्गुरु की शरण में पूर्ण रूप से समर्पित हो जाता है, तब वह कहीं भी हो, उनकी कृपा उसको ज़रूर प्राप्त होती है।

ले. कर्नल श्री अमरजीत सिद्धू (सेवा निवृत्त), जो पंचकूला (हरियाणा) में रहते हैं, ने अपने अनुभव के बारे में बताया कि जब वे आसाम राज्य के गुवहाटी के निकट स्थित बटालियन में कैप्टन के पद पर कार्यरत थे, तब उन्हें फरवरी,

१९७५ की एक रात्रि के दौरान एक अज्ञात शक्ति ने शिर्डी जाने का आदेश दिया तथा उन्हें स्पष्ट स्मरण है कि वे न तो स्वप्न देख रहे थे और न ही कल्पना की दुनिया में हिलौरे ले रहे थे। उस समय उनको न तो श्री साई बाबा और न ही शिर्डी के बारे में कोई ज्ञान था। शिर्डी जाने के हुक्मनामे का असर उनके मन और मस्तिष्क दोनों पर था। उन्होंने दूसरे दिन सुबह शारीरिक प्रशिक्षण के दौरान यूनिट में महाराष्ट्र के जवानों से शिर्डी के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद कमांडिंग अफ़सर के पास शिर्डी जाने के लिए छुट्टी की याचना की, तो कमांडिंग अफ़सर ने न केवल उन्हें धमकाया, बल्कि खरी-खोटी सुनाई और छुट्टी मना करते हुए उन्हें दफ़्तर से बाहर जाने का भी आदेश दिया।

लेकिन, दूसरे दिन उसी कमांडिंग अफ़सर ने अफ़रा-तफ़री में उन्हें ऑफ़िसर मेस में स्वयं ही बुलाया और छुट्टी मंज़ूर होने की ख़बर देते हुए उनको तुरन्त शिर्डी प्रस्थान करने के लिए कहा। सिद्धू जी दो दिनों के बाद ही गुवहाटी से मुम्बई विमान द्वारा आये और फिर मुम्बई से पुणे-अहमदनगर होते हुए शिर्डी पहुँचे। वे वहाँ द्वारकामाई के निकट एक छोटे होटल में ठहरे। उस समय शिर्डी का वातावरण बिलकुल शांत था। सिद्धू जी समाधि मंदिर, गुरुस्थान तथा चावड़ी में श्री साई बाबा के श्रद्धा पूर्वक दर्शन करने के बाद वहाँ के वातावरण में पूरी तरह रम गये और उनका सम्पूर्ण शरीर प्रेम और श्रद्धा से पुलकित हो गया। उन्हें बाबा की अपार कृपा व आनंद का अनुभव हुआ तथा उनका पूरा शरीर बाबा के प्रेम में पुलकित हो गया और उनकी आँखों से प्रसन्नता के आँसू स्वतः प्रवाहित होने लगे। उन्होंने महसूस किया कि यह सब कुछ बाबा की कृपा से ही हुआ है। उनके अनुसार वे उस अवस्था का पूरी तरह वर्णन करने में असमर्थ हैं।

सिद्धू जी का कहना है कि अगले दिन शाम को साई कीर्तन के बाद स्वामी शिवनेसन जी ने उन्हें चावड़ी में पकड़ कर उनसे बाबा की समाधि पर अभिषेक पूजा कराई और द्वारकामाई, समाधि मंदिर व चावड़ी में भी श्री साई सत् चरित का पारायण कराया। धूनी-पूजा करना, आरती करना, उदी सेवन करना और लगाना तथा साई बाबा के स्नान के बाद तीर्थ ग्रहण करना उनका दैनिक कार्यक्रम बन चुका था। उन्हें गुरुवार को चावड़ी समारोह के दौरान पालकी शोभायात्रा में शामिल होने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ।

सिद्धू जी को शिर्डी के सम्पूर्ण प्रवास के दौरान श्री

साई बाबा के प्रति अपार प्रेम पनपता रहा और बाबा की उन पर ऐसी अनुकम्पा हुई कि वे दुनिया की मोहमाया से बेखबर हो गये। चूँकि, वे बाबा में समाहित हो चुके थे, इसलिए उनकी शिर्डी छोड़ने की इच्छा बिल्कुल भी नहीं हो रही थी। लेकिन, शिर्डी में १२ दिन रुकने के बाद उन्हें अंततः दिल्ली के लिए प्रस्थान करना ही पड़ा। वे भारी मन से मनमाड से पंजाब मेल से दिल्ली आये। सिद्धू जी की बाबा के श्री-चरणों में प्रगाढ़ निष्ठा आज भी पूर्ववत है तथा उनका दृढ़ विश्वास है कि श्री साई बाबा वास्तव में एक अद्भुत अवतार हैं और वे सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी हैं तथा हम सभी के रक्षक व सर्वेसर्वा हैं।

श्री साई बाबा शिर्डी के बाहर कभी नहीं गये। लेकिन, फिर भी उन्होंने किसी को मच्छिन्द्रगढ़, किसी को कोल्हापुर, किसी को सोलापुर इत्यादि स्थानों पर साधनाओं के लिए भेज कर प्रत्यक्ष दर्शन दिये। उन्होंने किसी को दिन में और किसी को रात्रि में दर्शन दिये तथा किसी को काम करते हुए, तो किसी को निद्रावस्था में दर्शन देकर उनकी इच्छाएँ पूरी कीं। भक्तों को शिक्षा देने के लिए उन्होंने कौन-कौन-सी युक्तियाँ काम में लाई, इसका वर्णन करना कठिन है। वे आज भी अपने भक्तों पर इसी प्रकार की कृपा बनाये हुए हैं। लेकिन, यदि कोई श्रद्धा-सबूरी के अभाव में परीक्षा लेने हेतु भक्ति करके उनकी अनुभूति अथवा साक्षात् दर्शन प्राप्त करना चाहे, तो यह एक भ्रम है।

श्री साई बाबा का कहना था - “यदि तुम श्रद्धा पूर्वक मेरे सामने हाथ फैलाओगे, तो मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा। यद्यपि मैं शरीर से यहाँ हूँ, परन्तु मुझे सात समुद्रों के पार भी घटित होने वाली घटनाओं का पूर्ण ज्ञान है। मैं तुम्हारे हृदय में विराजमान, तुम्हारा अन्तःकरण ही हूँ। जिसका तुम्हारे तथा समस्त प्राणियों के हृदय में वास है, उसकी ही पूजा करो। धन्य और सौभाग्यशाली वही है, जो मेरे सर्वव्यापी स्वरूप से परिचित है।”

वस्तुतः संत मानव के कल्याण व विश्व के उद्धार हेतु अवतरित होते हैं तथा जब वे शरीर धारण करते हैं और जनसम्पर्क में आते हैं, तब इसी तरह का आचरण करते हैं। वे बाह्य रूप से दूसरे लोगों के समान ही दैनिक क्रियाकलाप करते हैं। लेकिन, वे आंतरिक रूप से अपने अवतार कार्य

और उसके ध्येय के लिए सदैव सचेत रहते हैं। अर्थात्, वे एक निश्चित ध्येय लेकर इस संसार में अवतरित होकर स्वयं ही देह धारण करते हैं और जब ध्येय पूरा हो जाता है, तब जिस सरलता और आकस्मिकता के साथ वे अवतरित होते हैं, उसी प्रकार लुप्त भी हो जाते हैं। श्री साई बाबा का अपने भक्तों के साथ जन्म-जन्मांतर का सम्पर्क है। इसीलिए, उन्होंने अपने भक्तों के लिए धरती पर अवतार लिया तथा उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् ऐसा लगता है कि वे भक्तों के साथ प्रेम-संबंध प्रगाढ़ एवं विकसित करके दौरे पर चले गये हैं। लेकिन, भक्तों को पूर्ण विश्वास है कि वे सदैव उनके साथ थे, हैं और आगे भी रहेंगे।...

भागवत में बताया गया है कि कोई धर्म विशेष नहीं, बल्कि जो मनुष्य को उसकी भक्ति व भगवत् प्रेम में अग्रसर होने में मदद करे, वही सर्वोत्तम धर्म है तथा यही उच्च कोटि के धर्म की परिभाषा है। धर्म का उद्देश्य ईश्वर को समझना, उससे प्रेम करना व प्रेम सीखना है। माया मन को चंचल बनाती है एवं ईश्वर से दूर हटाती है। जीव शुद्ध चेतन है; लेकिन माया के वशीभूत होकर बंधन में आ जाता है। साई कथामृत से ही मानव कल्याण सम्भव है। यदि श्री साई स्तु चरित प्रत्येक मनुष्य में सच्ची निष्ठा से घटित हो जाये, तो मानव के जीवन से हिंसा, घृणा, कटुता, लोभ, धार्मिक कट्टरता, जात-पात व अन्य भेदभाव स्वतः समाप्त हो जाते हैं। यह सच्चाई है कि जो व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से सद्गुरु श्री साई नाथ महाराज की नियमित रूप से पूजा-अर्चना करते हैं, उनके सभी दुःख-दर्द दूर होकर मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

समर्थ सद्गुरु श्री साई नाथ महाराज, जो सभी देवताओं के रूप हैं तथा जो एक फ़क़ीर के रूप में मानव के कल्याण हेतु धरती पर अवतरित हुए, के महासमाधि ‘शताब्दी वर्ष’ महोत्सव पर उनके श्री-चरणों में श्रद्धा से शीश झुका कर मानव कल्याण हेतु वंदना करते हैं।

ॐ श्री साई नाथाय नमः।

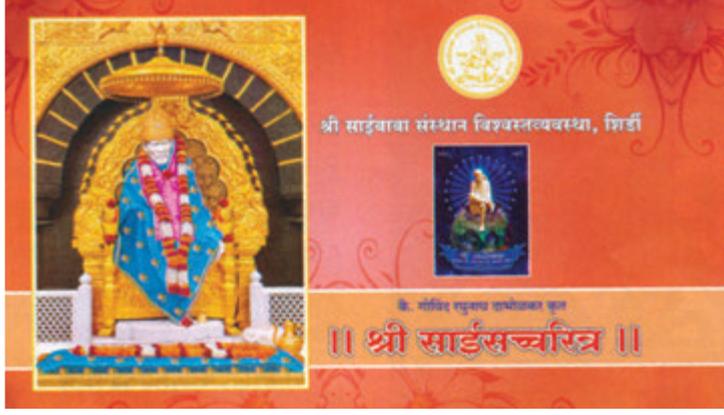
- सुरेश चन्द्र

२०/२९, लोदी कालोनी,
नई दिल्ली - ११० ००३.

ई-मेल : sureshchandra1962@gmail.com

दूरभाष : (०११)२४६४००४६

संचार ध्वनि : (०)९८९८६३९००२



श्री हेमाडपंत विरचित

॥ श्री साईसचरित्र ॥

मराठी पोथी का

हिंदी पद्यानुवाद

अनुवाद :

ओम प्रकाश शर्मा, 'वसिष्ठ'

अध्याय ३

श्री साई का पंत को वचन देना

सोरठा

पंत से बोले साई, लिख चरित्र होकर निडर।
मोर वचन विश्वास, छूटे सपने में नहीं॥१॥

विकल होए न मन, स्थिर रखना हर समय।
हृदय पाय विश्राम, लीला जो पढ़िअहिं सुनहिं॥२॥
देह बुद्धि कर नष्ट, ज्ञान चक्षु ज्योति परम।
आधि व्याधि हो दूर, भक्ति प्रेम रम जाए मन॥३॥
पंत गए हरषाय, सुन साई के प्रिय वचन।
शक्तिपात की भाँति, रोम-रोम ऊर्जित भयो॥४॥



दोहा

‘शामा’ तरफ़ निहार के, बोले बाबा वैन।
साई नाम गायन करो, जो पाना हो चैन॥१॥
कथा पढ़ें जो सुने जो श्रद्धा ध्यान लगाय।
हर इच्छा पूरी करूँरहूँ साथ मैं आय॥२॥
शरण मेरी आ जाय जो, मेरा करता ध्यान।
सुख आनंद पा जाएगा, भक्ति ज्ञान वरदान॥३॥
चिंतन मनन कथाओं का, खोले मुक्ति के द्वार।
विषय वासना दूर हो, नर भवसागर पार॥४॥

भिन्न भिन्न कार्यों की भक्तों को प्रेरणा

छंद

मंदिर काहूँ सों बनबाए काहूँ नदी तट घाट बनाए।
काहूँ सों लंगर खुलबाए काहूँ सों कीर्तन करबाए।
काहूँ कथा रामायण बांची गीता भागवत पाठ कराए।
काहूँ को कविता की बुद्धि दर्ई है
गीत दोहा ओवी लिखवाए॥१॥
पंत कहे मोहे प्रेरणा देके साई ने साई चरित लिखवाए।
मोरे ‘अहं’ को दूर कियो प्रभु सोऽहम् के मोहे दरस कराए।
मैं लेखक कवि न गुणी मो पर साई कृपा बरसाए।
जग की भीर में मोहि चुनो
प्रभु कवि लेखक को मान दिलाए॥२॥

दोहा

विप्र वंश में जन्म है, दिव्य न दीखे मोय।
ज्ञान ध्यान मन न लगे दंभ संग में कोह॥५॥
विद्या विनय से हीन मैं मोहि अपनाया साई।
कवि लेखक कहलाऊँ मैं - साई चरित लिखो साई॥६॥
नहीं योग्यता है समझ साई रूप महान।
लीला रहस्य का सिंधु हैं चार वेद का ज्ञान॥७॥
मैं अब जानो मूक किमि हो जाए वाचाल।
पंगु गिरिवर चढ़ सके जो हों साई कृपाल॥८॥
वीणा वंशी बज रही राग न जानें ताल।
बाँस लोहे से मधुर स्वर, बादक का है कमाल॥९॥
चंद्रकांतमणि ज्वार का श्रेय सिंधु कस लेय।
सोलह कला हैं चंद्र की गगन मंडल के खेल॥१०॥

बाबा का चरित्र : ज्योति स्तंभ स्वरूप

दोहा

सप्तसिंधु को तार सक नाविक नाव जहाज़।
बिन ज्योति स्तंभ के डूबे नाव जहाज़॥११॥
ज्योति स्तंभ साई चरित पार लगावे नाव।
दिखा दिशा चट्टान तट दूर करे भटकाव॥१२॥

चौपाई

मोक्ष के साधन शास्त्र बखाने।
युग अनुसार भिन्न जग जाने।
सतयुग शम दम नियम जरूरी।
त्रेता यज्ञ, त्याग मिटे दूरी॥१॥
द्वापर पूजन अर्चन वंदन। पुरुषोत्तम का हो अभिनंदन॥
कलियुग केवल नाम कीर्तन। हरि प्रसन्न संपूर्ण समर्पण॥२॥
इन्द्रिय विषय भोग की प्यासी। साई नाम सुन होतीं दासी॥
विषयासक्ति मोह मिट जाते।
ध्यान साई चरणन्ह लग जाते॥३॥
मिथ्या भोग समझ आ जाई। आत्म रूप होइ प्रगट दिखाई॥
यह फल सबहिं मिले सब काला।
साई चरित्र साई लिख डाला॥४॥

दोहा

साई कृपा से सहज ही महाकाव्य रच दीन्ह।
साई ने उपकार यह, सब भक्तन्ह पर कीन्ह॥१३॥
‘पंत’ श्रेय लेते नहीं निमित्त बनायो साई।
पल-पल रह कर साथ में साहस दीन्हो साई॥१४॥

मातृप्रेम

दोहा

गाय प्रेम बछड़ा प्रति को कर सके बखान।
दूध धार देखत स्त्रवै प्रीत की रीत महान॥१५॥
तेहि विधि माँ हर देश की, विदुषी हो अज्ञान।
शिशु अपने के लाभ हित, रखे हथेली प्राण॥१६॥
शीत घाम वर्षा सहे, भूख सहे अरू प्यास।
कष्ट कष्ट न लगे कभी, खोद सके आकाश॥१७॥

‘पंत’ कहे साई माँ सरिस राखो मेरो ध्यान।

क्या कुछ दिया न मोय को, धन, पद मान सन्मान॥१८॥

छंद

नौकरी से पद मुक्त भयो जब सन उन्नीससौ सोलह आयो।

पेंशन से घरबार चले ना मैं घबरायो शिर्डी आयो॥

अण्णा ने मोहे पूछे बिना दुःख मेरो साई को बतलायो।

बाबा कहे, नौकरी तो मिलेगी,

पर मैं चाहूँ एहि पास बुलायो॥१॥

दुष्ट जनों की संगत छांडि के ईश भजन में चित्त लगायो।

अंतःकरण में मोहि बसा लियो और नहीं इत उत भरमायो॥

हर इच्छा पूरण मैं करिहों वादो करो और पूरो निभाओ॥

साई समान को दीनन को बंधु भाग ने

साई से मोहि मिलायो॥२॥

दोहा

साई मोहे अपना लिया सुधरे दोई लोक।

मात पिता मोरे साई हैं, मोहे सदा संतोष॥१९॥

रोहिला की कथा

छंद

एक समय रोहिला जाति को एक मनुज शिर्डी में आयो।

हृष्ट पुष्ट पहलवान साई से मिलो और साई रंग में रंगायो।

आठों प्रहर वो कलमा पढ़े

चिल्ला-चिल्ला अल्लाह बुलायो।

रात विरात न देखे कुछ कभी,

पास पड़ौस की नींद उड़ायो॥१॥

बाबा सुनी अरदास सभी की उलटो लोगन को समझायो।

रोहिला की बाईको बड़ी है लड़ाकू

मेरो भी पीछो न देय छुड़ायो।

कलमा सुनो अल्लाह का नाम

आवाज़ फटी टूटी पे न जाओ।

आखिर लेत है नाम खुदा का

थोरे समय सुन लो सहजाओ॥२॥

दोहा

रोहिला की यह कथा साई प्रेम दरसाय।

कोई अकेला है नहीं जब साई मिल जाय॥१२॥

बाबा के मधुर अमृतोपदेश

दोहा

साई की हर बात में सरल सहज उपदेश।

गुरु गोविंद दोनों मिले ‘पंत’ भाग गए चेत॥१३॥

साई वचन प्रमाण से मिली नौकरी पंत।

कछु दिन करके छोड़ दी स्वतंत्र हो गए ‘पंत’॥१४॥

साई सेवा कर किया जीवन का उद्धार।

साई चरित में भर दिया ज्ञान भक्ति का सार॥१५॥

एक दिवस की बात का ‘पंत’ ने कियो बखान।

दुपहर आरती बाद जो बोले साई भगवान्॥१६॥

चौपाई

मोरे प्रिय तुम मेरे भाई। कहां कुछ बात सुनो चित्त लाई॥

कहीं रहो जो चाहो करना।

मोहि सब खबर, ध्यान यह रखना॥१॥

घट घट रहूँ सदा मैं ऐसे। गगन रहे हर घट में जैसे॥

जड़ चेतन सब मम उपजाए। रोम रोम सब मोहि समाए॥२॥

ब्रह्म रूप ब्रह्मांड श्रष्टि सब। तीन शक्ति सब मेरो करतब॥

उपजावहुँ पालहुँ लय करबहुँ। काल चक्र गतिमय मैं करबहुँ॥३॥

मोर ध्यान फलदायक होई। ध्यान भंग माया वश होई॥

माया राग द्वेष लिपटावै। खुद नाचे और सबहिं नचावै॥४॥

दोहा

प्रेम भगति मेरी करूँ, ते जन मेरे दास।

मैं रक्षा तिनकी करूँ, रहे सदा विश्वास॥१७॥

लीला मेरी श्रवण कर, पाठ करो चित्त लाय।

सार समझना बात का, सुख शांति घर आय॥१८॥

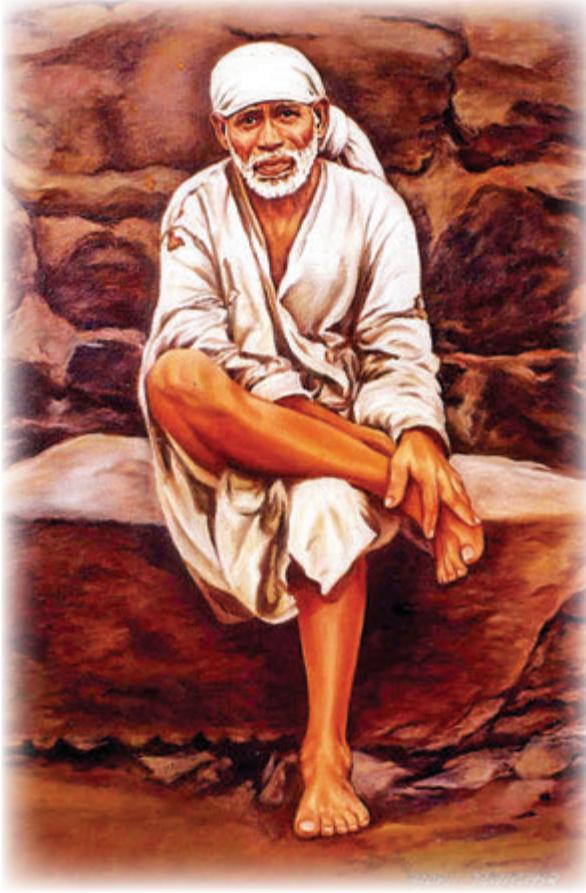
आलस निद्रा त्याग दो विषय वासना छोड़।

पंत कहे साई सुमिर सारे बंधन तोड़॥१९॥

॥ श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु। शुभं भवतु॥

ई-मेल : omsharma2727@gmail.com





साई लीला : कल, आज और कल भी...

हे साई नाथ सरकार!

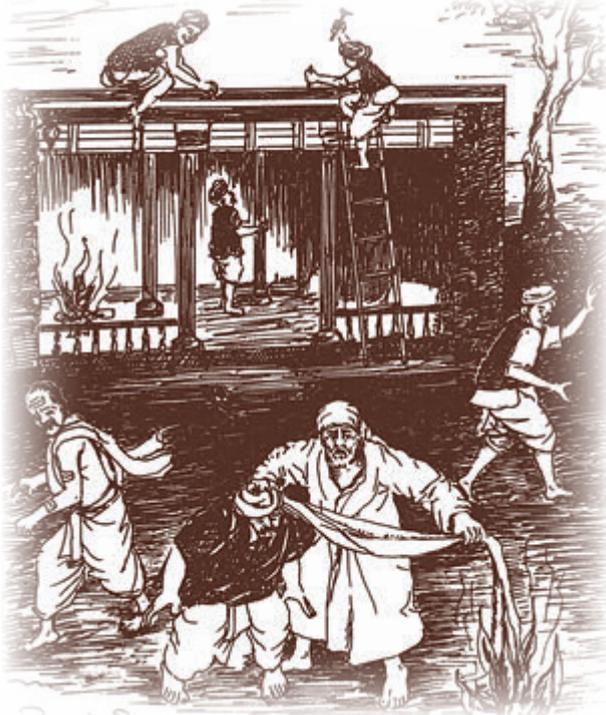
बहुत दिनों से तुमसे कोई बात नहीं हुई। क्षमा करना, देवा! भूल मेरी ही थी। तुम अपने भक्तों को कभी नहीं भूलते; भक्त ही तुम्हें भूल जाते हैं। मैं भी मायाजाल में फँस कर भूल गया था तुम्हें। हरि की माया बड़ी प्रबल है। याद करो, बाबा! तुमने ही एक बार अपने भक्तों से कहा था, “मैं तो फ़कीर हूँ। न मेरी स्त्री है, न परिवार, न घरद्वार। सब चिंताएँ छोड़ कर मैं द्वारकामाई में रहता हूँ। फिर भी माया मुझे कष्ट पहुँचाती है। मैं तो खुद को भूल चुका हूँ। पर, माया मुझे नहीं भूलती। कभी न कभी, किसी न किसी तरह, वह मुझे अपने जाल में फँसा ही लेती है। हरि की इस माया ने ब्रह्मा आदि देवताओं को भी नहीं छोड़ा; फिर मुझ जैसे फ़कीर की बिसात ही क्या है! लेकिन, जो हरि की शरण लेते हैं, वे उनकी कृपा से मायाजाल से छूट ही जाते हैं।” याद है न, बाबा? कहा था न, तुमने? जब तुम जैसे योगीराज, नित्य मुक्त वैरागी फ़कीर को माया अपने जाल में जकड़ लेती थी, तो फिर मैं

क्या चीज़ हूँ! मैं ठहरा एक नाचीज़, इन्सानी हाड़-मांस का पुतला! मेरे लिए तो तुम ही हरिहर हो। मैं तुम्हारी शरण में हूँ। इसीलिए तो, देखो, मायाजाल से छूट कर मैं लौट आया हूँ तुम्हारे पास, तुमसे दो बातें करने के लिए।...

बाबा, कुछ समय पहले मैंने इसी बात पर तुम्हारे लिए एक भजन लिखा था। तब मुझे क्या पता था कि मेरा भजन मुझ पर ही लागू हो जायेगा? सुनाऊँ? क्या अब भी नाराज़ हो मुझसे, बाबा? नहीं, न? तुम अपने भक्तों से कभी नाराज़ नहीं होते। मुझे पता है। याद है, एक बार, तुम्हारे भक्तों ने तुम्हारी पुरानी, जीर्ण-शीर्ण मस्जिद की मरम्मत करके उसे दुल्हन की तरह सजा-सँवार दिया था, जिसे देख कर तुम गुस्से से आग बबूला हो गये थे। अपने उन्हीं भक्तों को गालियाँ देने लगे थे, जिन्होंने इतनी मेहनत मशक्कत करके तुम्हारी मस्जिद का जीर्णोद्धार किया था। तुम्हारी आँखें गुस्से से जलते अंगारों की तरह लाल हो गई थीं। तुम्हें शांत करने के लिए भागोजी शिंदे और माधवराव देशपांडे आगे



बढ़े, तो उन्हें धकेल कर तुमने नीचे गिरा दिया था। तात्या का तो साफ़ा सिर से उतार कर उसमें आग लगा दी और जलती



धूनी में फेंक दिया था। और फिर अचानक तुम शांत भी हो गये थे। शांत होने पर तुमने एक नया ज़रीदार फेंटा दुकानदार से खरीद कर तात्या के सिर पर अपने हाथों से बाँधा था। कितने प्यार से बाँधा था! अहा! मानो तात्या को दुलार कर उनका विशेष सम्मान किया था तुमने! तुम भला अपने भक्तों से रूठ कर कैसे रह सकते हो! तुम्हारे हृदय में भरा हुआ दया और करुणा का सागर तुम्हें अपने भक्तों से ज्यादा देर तक दूर और रुष्ट नहीं रहने देगा। इसलिए, मैं जानता हूँ, मेरे अपराध के बावजूद तुम मुझसे नाराज़ नहीं रह सकते। तो सुनाऊँ भजन, बाबा?...

दुनिया भर की याद रही
साईं सुमिरन भूल गयी...

काया मल मल के चमकायी
मैल न मन का मैं धो पायी

बेमतलब की याद रही
मतलब की सब भूल गयी
दुनिया भर की याद रही
साईं सुमिरन भूल गयी...

किसका लेना किसका देना
हिसाब हर कौड़ी का रखना

माया की सब याद रही
साईं पूजन भूल गयी
दुनिया भर की याद रही
साईं सुमिरन भूल गयी...

चम चम चूनर लहंगा चोली
नोन तेल लकड़ी ना भूली

घर गिरहस्ती याद रही
भोग लगाना भूल गयी
दुनिया भर की याद रही
साईं सुमिरन भूल गयी...

रस्म रवायत भूल न पायी
रिश्तेदारी ख़ूब निभायी

दुनियादारी याद रही
दिया जलाना भूल गयी
दुनिया भर की याद रही
साईं सुमिरन भूल गयी...

सालगिरह हर एक बात की
शादी सौना जनम मरण की

तारीखें सब याद रहीं
याद नाथ की भूल गयी
दुनिया भर की याद रही
साई सुमिरन भूल गयी...

पाप धुलाने गंगा जाये
नाम कमाने दान कराये

स्वारथ की सब याद रही
परमारथ को भूल गयी
दुनिया भर की याद रही
साई सुमिरन भूल गयी...

सुख में साई याद न जागे
दुःख आये तो शिर्डी भागे

कहे दास कुम्भेश सही
नाम भजन क्यों भूल गयी
दुनिया भर की याद रही
साई सुमिरन भूल गयी...

मुझे क्या मालूम था कि मेरा भजन मुझ पर ही लागू हो जायेगा? मायाजंजाल में फँस कर मैं भूल गया था कि तुम्हें तुम्हारी पवित्र लीला-कथाएँ सुनानी हैं। तुम्हें सुनाना तो बहाना है, बाबा! असल में तो तुम्हें सुनाते-सुनाते मैं खुद ही सुनता हूँ और तुम्हारे भक्तों को सुनाता हूँ। तुम्हारी पवित्र लीला-कथाओं का श्रवण तुम्हारा दर्शन करने के समान ही मंगलकारी और फलदायी है। जो दुर्भाग्यवश, या किसी अन्य कारणवश, तुम्हारा दर्शन नहीं कर सके, या नहीं कर पाते हैं, वे तुम्हारी लीला-कथाएँ श्रद्धा-भक्ति पूर्वक सुन कर दर्शन जैसा लाभ उठा सकते हैं। यह मैं नहीं, तुमने ही कहा है, बाबा! याद है, न?...

तो साई नाथ महाराज! आज कौन-सी कथा सुनाऊँ?... जब तुम शिर्डी आये थे, तो शुरू-शुरू में तुमने अनेक दुःखियों के लाइलाज़ रोगों का इलाज़ किया था। रोगियों को अपनी तरफ़ से दवा भी देते थे। पर, दवा और इलाज़ के लिए तुमने कभी किसी से एक पैसा भी नहीं लिया।





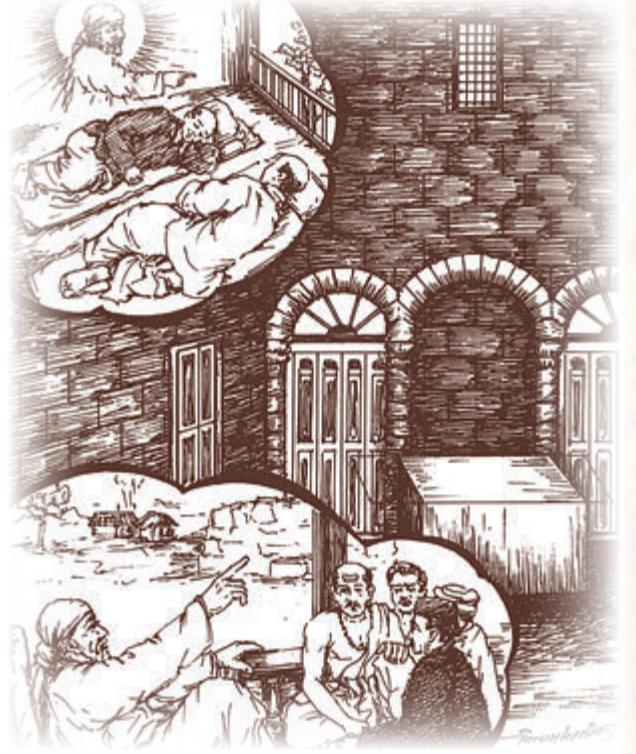
लेते भी कैसे? तुम तो देना ही देना जानते थे; लेना जानते ही न थे। तुमने सदा सबको दिया ही दिया है; उनसे लिया कुछ भी नहीं। शिर्डी में तुम एक डॉक्टर के रूप में मशहूर हो गये थे। लोग तुम्हें डॉक्टरों का डॉक्टर, हकीमों का हकीम और वैद्यों का वैद्य कहा करते थे। तुम्हारा इलाज करने का तरीका भी निराला था। इतना अजीबोगरीब कि डॉक्टर भी हैरान रह जाते थे। गेहूँ के आटे से हैजा की महामारी का निवारण, यह कथा तो मैं पहले ही सुना चुका हूँ। आज नेत्रों की चिकित्सा की लीला सुनाता हूँ। सुनोगे न, बाबा?...।

याद है, शिर्डी में तुम्हारा एक भक्त था, जिसकी आँखें लाल हो गई थीं। आँखों में सूजन भी आ गई थी। उसे इलाज के लिए तुम्हारे पास लाया गया, तो तुमने क्या किया, याद है न? आँखों के रोग में वैद्य और डॉक्टर आम तौर पर लेप, मरहम, अंजन, गाय का दूध या कपूरयुक्त औषधियों का प्रयोग करते हैं। पर, तुमने क्या किया? भिलावाँ पिस कर, उसकी दो गोलियाँ बनाई, और एक-एक गोली रोगी की आँखों पर रख कर कपड़े की पट्टी से बाँध दिया। बाप रे! भिलावाँ? सच कहूँ, बाबा? उस रोगी की जगह मैं होता, तो उस जंगली पेड़ भिलावाँ का नाम सुनते ही भाग खड़ा होता! आँखों के लिए कितना खतरनाक हो सकता था भिलावाँ!

अच्छी भली आँखें फूट सकती थीं उससे! पर, धन्य था तुम्हारा वह भक्त, जिसने अपनी आँखों के इलाज के लिए तुम पर इतना भरोसा किया, तुम पर श्रद्धा रखी, तुम पर पूरा विश्वास किया। उसे तुम पर उसकी श्रद्धा और विश्वास का वैसा ही मीठा फल भी मिला। दूसरे दिन, जब तुमने उसकी पट्टी खोल कर आँखों पर पानी के छींटे मारे, तो आँखों की लाली जा चुकी थी। सूजन भी बहुत कम हो गई थी। दो-तीन दिनों में ही उसकी आँखें बिल्कुल ठीक हो गईं।...

धन्य हो, वैद्यराज! योगीराज! धन्य है तुम्हारी चिकित्सा प्रणाली। चिकित्सा क्या कहना! सब लीला थी तुम्हारी। और ये लीलायें तुम आज भी करते हो।...

अब मैं तुम्हें तुम्हारी निराली चिकित्सा लीला की दूसरी अद्भुत कथा सुनाता हूँ। अमरावती के दादासाहेब खापर्डे की धर्म पत्नी, श्रीमती खापर्डे तुम्हारा दर्शन करने शिर्डी आई थीं और कई दिनों से शिर्डी में ही ठहरी हुई थीं। तभी उनके पुत्र को तेज बुखार हो गया। उसके बाद शरीर पर प्लेग की गिल्टियाँ भी निकल आईं। श्रीमती खापर्डे डर के मारे घबरा उठीं। उन्होंने तुरंत अमरावती लौटने का निश्चय किया। लौटने के लिए तुम्हारी इजाजत लेना ज़रूरी था। शिर्डी में यह तुम्हारा नियम था। शिर्डी आने वाले को तुम्हारा



भक्तों की चहलपहल मची रहती है। सदा पूजा-आरती होती रहती है। अरे, बाबा! मैं तो खो गया समाधि मंदिर में। वह है ही ऐसा। जो भी जाता है वहाँ, खो ही जाता है। अपनी

दर्शन करने के बाद शिर्डी छोड़ने से पहले तुम्हारी अनुमति लेनी पड़ती थी। जिसे तुम्हारी अनुमति मिल गई, वह तो सकुशल अपने घर पहुँच जाता था; जिसने तुम्हारे आदेश की अवहेलना की, रास्ते में उसकी दुर्गति ज़रूर होती थी। इसके अलावा शिर्डी में वही ठहर सकता था, जिसे तुम अनुमति देते थे। तुम्हारी अनुमति बिना किसी का शिर्डी में ठहरना मुश्किल ही नहीं, ना-मुमकिन था। इसकी उदाहरण कथा मैं फिर कभी सुनाऊँगा। श्रीमती खापर्डे अमरावती लौटने के लिए तुमसे अनुमति लेने मसजिद में पहुँचीं। उस वक़्त तुम टहलने के लिए बूटी वाड़ा की तरफ़ गये थे। बूटी वाड़ा तो याद है न, बाबा? अब वह बूटी वाड़ा नहीं रहा। उसकी जगह तुम्हारा भव्य विशाल समाधि मंदिर बन गया है। तुम तो देख ही रहे हो, अपना यह शानदार, आलीशान समाधि मंदिर! क्या रौनक रहती है यहाँ! हमेशा जगमगाता रहता है।



सुधबुध भी नहीं रहती उसे। बस, तुम्हारी करुणा मूर्ति और मंदिर को देखता रह जाता है, उसमें खो जाता है। अच्छा, बाबा, बताओ, क्या तुमने कभी सोचा था कि बूटी वाड़ा एक दिन तुम्हारा अजीमुशान समाधि मंदिर बन जायेगा! अरे, मैं भी निरा मूर्ख हूँ। कैसी बात पूछ रहा हूँ तुमसे। तुम्हें सोचने की क्या ज़रूरत है? तुम तो सर्वज्ञ हो, त्रिकालज्ञ हो। सब जानते हो। भूतकाल में क्या था? वर्तमान में क्या हो रहा है? भविष्य में क्या होने वाला है? फिर भी पूछ रहा हूँ तुमसे। क्षमा करना देवा!... हाँ, मैं तो श्रीमती खापर्डे की बात कर रहा था। श्रीमती खापर्डे ने अपने पुत्र की बीमारी का हाल बता कर तुमसे अपने घर अमरावती लौटने की अनुमति माँगी, तो तुमने आसमान की तरफ़ देख कर कहा, “देखो, माँ! आसमान में बहुत बादल छाये हुए हैं। बादल छंटते ही आसमान पहले की तरह साफ़ हो जायेगा।” और फिर तुमने कमर तक अपनी कफ़नी उठा कर जाँघ पर अंडों के बराबर चार गिल्टियाँ दिखाते हुए कहा, “देखो, मुझे अपने भक्तों के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ता है! मेरे भक्तों के कष्ट मेरे कष्ट हैं, माँ।”...

उस समय श्रीमती खापर्डे के अलावा वहाँ और भी कई भक्त मौजूद थे। सबने खुली और फटी आँखों से देखा कि श्रीमती खापर्डे के पुत्र की प्लेग की गिल्टियों की तरह चार गिल्टियाँ तुम्हारी जाँघ पर उभरी हुई थीं। तुम्हारी यह लीला देख कर सब आश्चर्यचकित थे। उनकी आँखें भी भर आई थीं। दयानाथ! तुम कितने दयालु हो! अपने भक्तों से कितना प्रेम करते हो! भक्तों के सुख के लिए उनके दुःख भी खुद उठा लेते हो। उनके दर्द को अपना दर्द बना लेते हो। उनके दुःखों का बोझ भी खुद ही ढोते हो। तभी तो भक्त भी अपने सब दुःख भार तुम पर डाल कर निश्चिंत हो जाते हैं। बाबा, इसी बात पर मुझे अपना एक भजन याद आ रहा है। सुनाऊँ क्या? अब यह न कहना, दयानिधान, यह कैसी सनक है? बात-बात पर भजन सुनाने लगता हूँ! दया करके सुन लो, प्रभु!...

सौंप दिया सब भार तुम्हें
फ़िक्र हमें फिर करना क्या
पार करोगे तुम साईं
सोच हमें अब करना क्या...
कठिन बड़ा यह भवसागर है
भँवर मच्छ तूफ़ान बहुत है

नाविक जहाज़ के तुम हो
जतन हमें फिर करना क्या
सौंप दिया सब भार तुम्हें
फ़िक्र हमें फिर करना क्या...
पार करोगे तुम साईं
सोच हमें अब करना क्या
भव चक्की से कौन बचा है
इसमें हर कोई पिसता है
गही शरण हमने तेरी
चिंत-चिंता में जलना क्या
सौंप दिया सब भार तुम्हें
फ़िक्र हमें फिर करना क्या...
पार करोगे तुम साईं
सोच हमें अब करना क्या...
हवा करे जिसकी रखवाली
ज्योति नहीं वो बुझने वाली
साथ हमारे तुम हो तो
खौफ़ किसी का हमको क्या
सौंप दिया सब भार तुम्हें
फ़िक्र हमें फिर करना क्या...
पार करोगे तुम साईं
सोच हमें अब करना क्या...

ठीक है न, बाबा? नाव की पतवार तुम्हारे हाथ दे दी, तो फिर हमें चिंता क्या! आराम से नाव में बैठ कर सफ़र करना है। अब भीमाजी की कथा सुनाता हूँ। अरे वही, पुणे के नारायण गाँव का भीमाजी पाटिल। याद आया, न? भीमाजी की छाती में भयंकर रोग हो गया था। बाद में पता चला कि क्षयरोग था। तुम्हारे समय में क्षयरोग लाइलाज़ हुआ करता था, बाबा। भीमाजी हज़ार इलाज़ करके हार चुका था। वह एकदम निराश-हताश हो गया था। उसे अपने बचने की कोई उम्मीद न रही थी। तब तुम्हारे परम भक्त नानासाहेब चाँदोरकर ने उसे तुम्हारी शरण में जाने की सलाह दी। मरता क्या न करता? आखिर, भीमाजी को शिर्डी लाकर तुम्हारी मसजिद में लिटा दिया गया। उसे देख कर तुमने पहले जो कहा, उसे सुन कर भीमाजी की बची-खुची उम्मीद भी टूट गई। तुमने कहा था, “यह इसके पूर्वजन्म के दुष्कर्मों का फल है। इसलिए मैं इस झंझट में नहीं पड़ना चाहता।” तुम्हारी दो टूक बात सुन कर भीमाजी तुम्हारे चरण पकड़ कर



दया की भीख माँगने लगा, “हे अनार्थों के नाथ! दयानाथ! मुझ अनानाथ पर दया करो। हे दीनों के शरणदाता! दीनदयाल!

मुझ पर दया करो।”...

बाबा! लोग ऐसे ही होते हैं। सुख में तुम्हें याद तक नहीं करते; जब दुःख आता है, तो दयानाथ, दीनानाथ, साई नाथ, और न जाने क्या-क्या कहने लगते हैं। तुम्हारे पाँव पकड़ कर रोने लगते हैं। पर, तुम ऐसे नहीं हो। तुम तो सचमुच दयासागर हो। भीमाजी का करुण क्रंदन और दर्द भरी पुकार सुन कर तुम भला कैसे नहीं पिघलते! तुमने उसके सिर पर हाथ रख कर उसे सांत्वना देते हुए कहा, “चिंता न करो। तुम्हारे दुःख का अंत जल्द ही होगा। कोई कितना भी दुःखित और पीड़ित क्यों न हो, जैसे ही वह इस मसजिद की सीढ़ियों पर पैर रखता है, वह सुखी हो जाता है। मसजिद का फ़कीर बहुत दयालु है। वह तुम्हारा रोग भी ज़रूर हर लेगा। वह सब पर प्रेम और दया रख कर रक्षा करता है।”...

मसजिद का फ़कीर कौन, बाबा? ओह, समझा! तुम्हारे ऊपर तुमसे बड़ा भी कोई फ़कीर था, जिसे तुम मानते थे। अल्लाह मालिक! यह सब लीला है तुम्हारी, साई नाथ! मैं जानता हूँ। अब तो सब जान गये हैं। सारे जहान का मालिक फ़कीर बन कर जीवन भर शिर्डी में फ़कीरी करता रहा, अपने भक्तों के दुःख, दर्द ढोता रहा। सबको सुखों की विभूति बाँटी और खुद भिक्षा खाकर टूटी-फूटी मसजिद





में जीवन गुज़ारता रहा। कभी रामनाम, तो कभी “अल्ला मालिक” कह कर सबका कल्याण करता रहा। अब यह संभ्रमित करना नहीं चलेगा, साईं गुरु! अब तो सब जान गये हैं कि जिस मसजिद के फ़क़ीर की बात तुम करते थे, वह कोई और नहीं, तुम ही हो। चलो, कोई बात नहीं! तुम कुछ भी कहो, हमारे लिए तो तुम ही राम-कृष्ण हो, मालिक, मौला, पीर, फ़क़ीर, सब तुम ही हो। भीमाजी का इलाज़ जिस चमत्कारिक तरीक़े से तुमने किया, क्या कोई साधारण फ़क़ीर कर सकता है? सुनो, साईं नाथ! शिर्डी आने से पहले भीमाजी को हर पाँच मिनट पर उल्टियाँ होती थीं। लेकिन, जब से तुमने अपना हाथ उसके सिर पर रखा, उल्टियाँ एकदम बंद हो गईं। फिर तुमने उसे भीमाबाई के घर में ठहरा दिया। टीबी के मरीज़ के लिए हवा-पानी और साफ़-सफ़ाई के लिहाज से भीमाबाई का घर ज़रा भी सुविधाजनक और उचित नहीं था। पर, तुम्हारी आज्ञा के आगे उचित-अनुचित कौन देखता है? तुम्हारी आज्ञा टालने की हिम्मत भी किसी में नहीं थी। भीमाबाई के घर में रहे हुए भीमाजी को तुमने कोई दवा नहीं दी; सिर्फ़ दो स्वप्न दिये, और उसका रोग हर लिया। पहले सपने में भीमाजी ने देखा कि वह विद्यार्थी है और एक

कविता याद न कर सकने के दण्ड स्वरूप शिक्षक के हाथों बेंत की मार से असहनीय कष्ट भोग रहा है। दूसरे सपने में उसने देखा, कोई उसकी छाती पर नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे की ओर पत्थर घुमा रहा है, जिससे उसे भयानक दर्द हो रहा है। इन दो सपनों के बाद भीमाजी बिल्कुल स्वस्थ हो गया। तब से वह तुम्हारा अनन्य भक्त हो गया। वह जब भी शिर्डी आता, तुम्हें साष्टांग प्रणाम करता था। तुम्हें याद है न, बाबा? कैसे वह तुम्हारे चरणों में फ़र्श पर लंबलेट होकर तुम्हें नमस्कार करता था। अपने गाँव में पहले वह सत्यनारायण भगवान् का व्रत करता था। लेकिन तुमसे नव-जीवन पाने और तुम्हारा भक्त बनने के बाद उसने सत्यनारायण के स्थान पर सत्य साईं व्रत करना आरम्भ कर दिया। अब यह बात और है कि तुमने उपवास को कभी अपनी मान्यता नहीं दी। लेकिन, कभी अपने भक्तों की श्रद्धा की अवहेलना भी तो नहीं की। जिस भक्त की जैसी श्रद्धा होती, उसे उसकी इच्छा अनुसार ही अपना पूजन करने देते थे। कभी किसी पर अपनी पूजा पद्धति नहीं थोपी। तभी तो सभी तरह के लोग, सभी धर्मों और सम्प्रदायों के लोग आज तुम्हारी पूजा कर रहे हैं।...

बाबा! यह कैसा इलाज था? सिर्फ दो स्वप्न देकर तुमने भीमाजी के रोग का इलाज कैसे कर दिया? मेरी समझ में तो इतना ही आता है कि तुमने सपने में उसे कष्ट देकर उसके पूर्वजन्म के दुष्कर्मों का दण्ड दिया था और अपने हिस्से की सज़ा भोगने के बाद भीमाजी स्वस्थ हो गया। वाह! ब्रह्माण्डनायक! राजाधिराज! योगीराज! अजब है तुम्हारा रोगोपचार और ग़ज़ब है तुम्हारी लीला। अब अपनी एक और चिकित्सा लीला सुन लो, महाराज! लीला, जो तुमने बाला गणपत दर्जी के साथ की थी। एक बार उसे भयंकर बुखार हो गया। उसने बहुत इलाज किया, कई दवाइयाँ लीं, तरह-तरह के काढ़े पिये। पर, बुखार उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था। तब वह भी भाग कर शिर्डी आया और तुम्हारे चरणों में गिर पड़ा। तुमने उसे विचित्र उपाय बताया, “लक्ष्मी मंदिर के पास जाकर एक काले कुत्ते को थोड़ा-सा दही और चावल खिलाओ।” पहले तो वह समझ नहीं पाया कि बुखार उतारने का यह कैसा इलाज है? पर, वह और करता भी क्या? सब तरह का इलाज करके वह थक चुका था। उसने घर पहुँच कर तुम्हारे आदेश का पालन किया। वह दही-चावल लेकर लक्ष्मी मंदिर पहुँचा, तो देखा, एक काला कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ वहाँ पहले से ही खड़ा था। उसे काला कुत्ता ढूँढने की जहमत भी नहीं उठानी पड़ी। उसने दही-चावल कुत्ते के आगे रख दिया, जिसे वह तुरंत खा गया। उसके बाद ही बाला गणपत दर्जी का बुखार हमेशा के लिए जाता रहा।...

बाबा, एक बात पूछूँ? वह काला कुत्ता कौन था? कैसे मंदिर के पास पहले से मौजूद था? क्या कहा? न पूछूँ? चलो, तुम नहीं बताना चाहते, तो मैं नहीं पूछूँगा। वैसे भी कुछ पूछने की ज़रूरत ही कहाँ रही? समझदार को इशारा ही काफ़ी है!...

अब मैं श्रीमान बापू साहब बूटी की बात करता हूँ।...

मैं देख रहा हूँ, बाबा, मैं देख रहा हूँ। बूटी साहब का नाम सुनते ही तुम्हारा चेहरा खिल उठा है। होंठों पर मंद-मंद मुस्कान की छटा दिख रही है। हो भी क्यों न? तुम्हारे परम भक्त थे बूटी साहब। तुम्हारे चहेते भी। जिस समाधि मंदिर में आज तुम चिर-विश्राम कर रहे हो, वह कभी बूटी साहब का भवन ही तो था - बूटी वाड़ा। जब तक देह रही, तुम टूटी-फूटी मसजिद में रहे। देह छोड़ी, तो बूटी के महल में आ बसे। धन्य थे बापू साहब बूटी। और धन्य है तुम्हारी

लीला। एक बार वही बूटी साहब आम्ल-पित्त के रोग से पीड़ित हुये। बहुत इलाज करने के बाद भी उनकी पीड़ा कम नहीं हुई। वे एकदम दुर्बल हो गये। हालत इतनी गम्भीर हो गई कि उनका शिर्डी आकर तुम्हारा दर्शन करना भी मुश्किल हो गया। उनकी हालत की खबर तुम्हें मिली, तो उन्हें शिर्डी बुलवा कर द्वारकामाई में अपने सामने बिठा कर तुमने कहा था, “सावधान बूटी! अब तुम्हें दस्त नहीं लगेंगे।” फिर अपनी उँगली उठा कर तुम बोले, “उल्टियाँ भी बंद हो जायेंगी।” तुम्हारे मुखारविंद से निकले ये आशीर्वचन ही बूटी साहब के लिए औषधि बन गये। तुम्हारी दुआ ही दवा बन गयी। बूटी साहब का रोग समूल नष्ट हो गया। वे स्वस्थ और प्रसन्न हो गये।... ऐसे ही दूसरे अवसर पर वे हैजा रोग से पीड़ित हुये। उन्हें बहुत तेज प्यास लगने लगी। कितना भी पानी पीते, प्यास बुझती ही न थी। डॉक्टर पिल्लई ने बहुत इलाज किया; पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। तब उनके तृषा रोग का इलाज भी तुमने ही किया था, बाबा! अजीबोगरीब इलाज था वह भी। तुमने बूटी साहब को रोग का उपाय बताते हुए कहा, “मीठे दूध में उबला हुआ बादाम, अखरोट और पिस्ता का काढ़ा पियो।” तृषा रोग की यह औषधि सुन कर बूटी साहब कुछ परेशान हुये। डॉक्टर पिल्लई भी सुन कर हैरान रह गये। किसी भी समझदार और जानकार डॉक्टर की समझ से तुम्हारा बताया हुआ नुस्खा तृषा रोग में जानलेवा हो सकता था। लेकिन, बूटी साहब को तुम पर भरोसा था। पूरा विश्वास, श्रद्धा थी तुम पर। वे तुम्हारे अनन्य परम भक्त जो थे। तुम्हारा नाम लेकर वे मीठे दूध में उबला हुआ बादाम, अखरोट और पिस्ता का काढ़ा, जो जहर समान था, अमृत और तुम्हारा प्रसाद समझ कर पी गये।... और चमत्कार हो गया। काढ़ा पीते ही उनका तृषा रोग छू मंतर हो गया, समूल नष्ट हो गया।... ऐसे अनेक उदाहरण हैं। कितने गिनाऊँ, बाबा?...

आलंदी के एक स्वामी तुम्हारा दर्शन करने शिर्डी आये थे। उसी समय उनके कान में भयंकर पीड़ा होने लगी। उनके लिए एक पल भी चैन से बैठना मुश्किल हो गया। उनके कान का ऑपरेशन हो चुका था; फिर भी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। उनके कान में उस तरह का दर्द अक्सर उठता रहता था। वह पूना लौटने की अनुमति माँगने लगे। तब शामा ने तुमसे प्रार्थना की, “बाबा! स्वामी जी के कान में बहुत दर्द है। इन पर कृपा करो।” तब तुमने अपना

वरद हस्त उठा कर कहा था, “अल्लाह अच्छा करेगा।” स्वामी जी को शायद तुम्हारे शब्दों पर भरोसा नहीं था, या फिर अल्लाह का नाम सुन कर वे घबरा गये थे। वे पूना लौट गये। लेकिन, एक सप्ताह के भीतर ही पूना से उनका पत्र आया, जिसमें लिखा था, “बाबा को धन्यवाद। अब दर्द बिल्कुल नहीं है। थोड़ी सूजन बाकी है, जिसके लिए ऑपरेशन कराने मुम्बई जाना पड़ेगा।” स्वामी जी मुम्बई गये भी। पर, वहाँ डॉक्टर ने उनके कान की जाँच करके कहा, “अब ऑपरेशन की कोई ज़रूरत नहीं है। कान में कुछ भी गड़बड़ी नहीं है। सूजन भी नहीं है।” डॉक्टर की बात सुन कर स्वामी जी अवाक रह गये थे। अब उन्हें तुम्हारे शब्द याद आ रहे थे, “अल्लाह अच्छा करेगा।”...

साई नाथ! दीनानाथ! इस तरह तुमने न जाने कितने रोगियों के रोग हरण किये हैं। आज भी उसी तरह तुम अपने रहस्यमय तरीके से, अपनी दया, कृपा, आशीर्वाद और विभूति की औषधि से अनेकानेक भक्तों का उपचार कर रहे हो, उनका कल्याण कर रहे हो; क्योंकि महासमाधि लेने से पहले तुमने कहा था, “मुझ पर पूर्ण विश्वास रखो। हालाँकि मैं देह त्याग भी कर दूँगा; परन्तु फिर भी मेरी अस्थियाँ तुर्बत में से भक्तों के लिए आशा और विश्वास का संचार करती रहेंगी। केवल मैं ही नहीं, मेरी समाधि भी वार्तालाप करेगी; चलेगी, फिरेगी और उन्हें आशा का संदेश देती रहेगी, जो अनन्य भाव से मेरे शरणागत होंगे। निराश न होना कि मैं तुमसे विदा हो जाऊँगा। तुम सदैव मेरी अस्थियों को भक्तों के कल्याणार्थ चिंतित पाओगे। यदि मेरा निरंतर स्मरण और मुझ पर दृढ़ विश्वास रखोगे, तो तुम्हें लाभ ज़रूर होगा।”

बाबा! तुम आज भी अपना वचन निभा रहे हो। आज भी उसी तरह से शरण में आने वाले सभी दीन-दुःखियों का कल्याण कर रहे हो, जैसे पहले देह रूप में रह कर किया करते थे; जो तुम्हारे भक्त हैं, उनका भी, जो भक्त नहीं हैं, उनका भी। तुम्हारी कार्यप्रणाली निराली है। जो तुम्हारे भक्त नहीं हैं, उन्हें अपनी कृपा की महिमा दिखा कर अपना भक्त बना लेते हो। तुम्हारी कृपा महिमा का प्रभाव आज भी वैसा ही है, जैसा तुम्हारे समय में तब हुआ करता था।...

हिम्मत सिंह तुम्हारा भक्त नहीं था। हिम्मत सिंह याद है न? डोंगरगाँव का हिम्मत सिंह। कैसे अपनी लीला से उसे खींच कर शिर्डी लाये। यह घटना तुम्हारी महासमाधि से बहुत बाद, आज से कुछ वर्ष पहले की है।... उसके पेट



में अल्सर था। अक्सर पेट में भयंकर दर्द उठता था। इतना भयंकर कि सहना मुश्किल हो जाता था। उसने डोंगरगाँव के डॉक्टर दीक्षित से बहुत इलाज कराया। दवाओं से कोई फ़ायदा नहीं हुआ, तो डॉक्टर दीक्षित ने उसे भिलाई जाकर ऑपरेशन कराने का सुझाव दिया। भिलाई में डॉक्टर चावला ने अल्सर की जाँच करके बताया कि उसे जल्दी-से-जल्दी ऑपरेशन करा लेना चाहिए; वरना मौत का खतरा है। इसी दौरान, संयोगवश, कुछ मित्रों के साथ हिम्मत सिंह का शिर्डी आना हुआ। उसने समाधि मंदिर में तुम्हारा दर्शन किया। इसी समय किसी ने उसे बताया कि तुम्हारी विभूति बड़ी चमत्कारी है, जिसे माथे पर लगाने या पानी में घोल कर पीने से बड़ी-बड़ी आधि-व्याधियाँ दूर हो जाती हैं। उसने वैसा ही किया। तुम्हारी विभूति पानी में घोल कर पी गया। विभूति की एक पुड़िया भी अपने साथ ले गया और घर में रोज़ उस विभूति का सेवन करने लगा। उसके बाद, उसके पेट में कभी दर्द नहीं हुआ। भिलाई के डॉक्टर चावला ने भी जाँच करने पर पाया कि ऑपरेशन की कोई आवश्यकता नहीं थी; क्योंकि अब पेट में अल्सर था ही नहीं! वे भी हैरान थे कि अचानक



अल्सर कहाँ गायब हो गया?

धन्य हो, अनंत कोटि ब्रह्माण्डनायक योगीराज! यह तो हिम्मत सिंह के साथ तुमने वैसा ही चमत्कार किया, जैसे आलंदी के स्वामी जी के साथ किया था। पर, तब तो तुम देह अवतार धारण किये हुए थे। अब? आज भी, अब भी तुम भक्तों को दिया हुआ अपना वचन निभा रहे हो। आज भी तुम्हारे भक्त और अभक्त भी तुम्हारे जीवित होने का अनुभव कर रहे हैं।

इस घटना के बाद हिम्मत सिंह तुम्हारा अनन्य भक्त हो गया। वह अक्सर शिर्डी आकर समाधि मंदिर में तुम्हारा दर्शन करता रहता है। उसने डोंगरगाँव के अपने घर में तुम्हारा एक मंदिर भी बनाया है। तुम्हारी बड़ी-सी मूर्ति स्थापित की है। वह नित्य प्रति तुम्हारी पूजा-आरती करता है। हर साल माघ पूर्णिमा के दिन तुम्हारा विशाल भंडारा भी करता है। पहले तो उसके गाँव के लोग उसकी श्रद्धा-भक्ति का मजाक उड़ाते थे, तुम्हारा प्रसाद भी लेने से इन्कार कर देते थे, पूजा-आरती की अवहेलना-अलोचना करते थे; लेकिन धीरे-धीरे वे भी मंदिर में आने लगे, पूजा-अर्चना में भाग भी लेने लगे। पिछले पच्चीस वर्षों में अब तो सारा डोंगरगाँव ही साई भक्त बन गया है। मैंने देखा है, बाबा! हिंदी भाषी क्षेत्र, डोंगरगाँव के छोटे-छोटे बच्चे भी मराठी भाषा में तुम्हारी मूल आरती गाते हैं। शिर्डी में होने वाले सभी उत्सव वहाँ भी वैसे ही मनाये जाते हैं। सब, अपनी जाति-धर्म भुला कर, बड़े उत्साह से उन उत्सवों और कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं। हिम्मत सिंह ने मानो डोंगरगाँव में साई श्रद्धा की मलयानिल बहा दी है। वहाँ की हवा में भी साई श्रद्धा की सुगंध महसूस की जा सकती है। यह सब तुम्हारी लीला महिमा है, साई नाथ महाराज!...



बाबा! अब एक और तुम्हारी लीला सुनाता हूँ। यह घटना भी तुम्हारी महासमाधि के बाद की है, जिससे पता चलता है कि तुम्हारी महिमा का प्रभाव आज भी है। आज भी तुम वैसे ही चमत्कार करते हो, जैसे देह रूप में करते थे। तुम्हारी समाधि जीवंत है। तुम सचमुच आज भी जीवित हो।... सुनो, बाबा।... एक डॉक्टर की पत्नी को भयंकर बीमारी थी। वह अपने दाँत मीच कर तड़पने लगती और फिर, घंटों बेहोश पड़ी रहती थी। डॉक्टर साहब खुद, और फिर अन्य दूसरे डॉक्टरों से इलाज करवा कर हार चुके थे। डॉक्टर साहब के पिताजी तुम्हारे भक्त थे। उन्होंने बहू को शिर्डी ले जाने की सलाह दी। पहले तो डॉक्टर साहब नहीं माने। आखिर डॉक्टर जो ठहरे! पर, इसके सिवाय उनके पास अब दूसरा कोई चारा भी तो नहीं था। काफ़ी ना नु कुर के बाद वे अपने पिताजी के साथ पत्नी को लेकर शिर्डी आये। डॉक्टर की पत्नी डॉक्टर साहब से दो क़दम आगे निकली। उसे तुम पर ज़रा भी भरोसा नहीं था। उसने तुम्हारे समाधि मंदिर में जाने से इन्कार कर दिया। वह उसे अंधविश्वास मानती थी। आखिर काफ़ी समझा-बुझा कर लोग उसे समाधि मंदिर में ले आये। उसे तुम्हारी विभूति और अभिषेक जल

पिलाया। अगले दिन, शाम को फिर वही प्रक्रिया दोहराई गयी, तो उसे अचानक चक्कर आ गया और वह तुम्हारी समाधि पर सिर रख कर नीचे फर्श पर गिर पड़ी। उसके मुँह से किसी दूसरी स्त्री की आवाज़ निकली, “मैं भील भूतनी हूँ। यह स्त्री जब एक पेड़ के नीचे खड़ी थी, तो मैं उसके शरीर में दाखिल हो गई। मुझे मत सताओ। माफ़ करो; मैं जा रही हूँ।” इन शब्दों के साथ वह थोड़ी देर के लिए बेहोश हो गई। होश आने पर वह सहज भाव से उठ कर खड़ी हो गई। इसके बाद फिर कभी उस पर कोई दौरा नहीं पड़ा। तुम्हारी विभूति और अभिषेक जल ने उसे बिल्कुल स्वस्थ कर दिया था। तभी से वह और डॉक्टर महाशय तुम्हारे भक्त हो गये। वे अक्सर समाधि मंदिर में तुम्हारा दर्शन करने के लिए शिर्डी आने लगे।...

बाबा! एक बात कहूँ, बुरा तो न मानोगे? वह गेहूँ का आटा, भिलावाँ, काढ़ा, मूँगफली के दाने, ये सब तो सिर्फ़ नाम के थे। इनमें कोई औषधीय गुण नहीं था। असल दवा तो तुम्हारी दुआ थी। तुम्हारी दया, कृपा, आशीर्वचन और तुम्हारी महिमा में ही असली असर था। तुम्हारी विभूति और अभिषेक जल में भी तुम्हारी महिमा की शक्ति है, जिसके प्रभाव से भक्त जन स्वस्थ और सुखी हो जाते हैं। वरना, विभूति क्या है? राख! अभिषेक जल क्या है? पानी! तुम्हारी कृपा महिमा से राख विभूति बन जाती है और पानी संजीवनी हो जाता है। तुम्हारी इस महिमा का प्रभाव तब भी था, जब तुम देह रूप में थे, और आज भी है, जब तुम समाधि में स्थित हो। इसीलिए तो करोड़ों लोग तुम्हारा दर्शन करने के लिए शिर्डी समाधि मंदिर में आते हैं। तुम्हारे भक्त, और वे भी, जो तुम्हारे भक्त नहीं हैं। वे कोई न कोई मनोकामना लेकर आते हैं, कोई न कोई सवाल लेकर आते हैं। जब उनकी मनोकामना पूरी हो जाती है, उन्हें उनके सवाल का हल मिल जाता है, तो वे तुम्हारे भक्त बन जाते हैं। इसके अनेक उदाहरण हैं, अनेकानेक कथाएँ हैं। महासमाधि से पहले काका पुराणिक की कथा, काका महाजनी के रोग निवारण की कथा, हरदा के दत्तोपंत की व्यथा, माधवराव देशपांडे का बवासीर, नाना साहब चाँदोरकर की पीड़ा और हरिश्चन्द्र पितले की कथाएँ।... महासमाधि के बाद, आज के करोड़ों भक्तों की कथाएँ। लेकिन, अब मैं थक गया हूँ। बाकी कथाएँ अगली बार सुनाऊँगा। विदा लेने से पहले इस पल का आखिरी भजन सुनाता हूँ, बाबा। बस, मेरा और एक भजन, दयानाथ!

साई कृपा करना
सब पर दया करना...
हम बालक नादान तुम्हारे
तुम पालक पितु मात हमारे
पालन सदा करना
साई कृपा करना
सब पर दया करना...
दीनबंधु तुम दयावतारी
शरणागत के प्रभु दुःखहारी
अपनी शरण रखना
साई कृपा करना
सब पर दया करना...
रहीम हो तुम जहान जाने
रहमत तेरी हम भी माने
मौला रहम करना
साई कृपा करना
सब पर दया करना...
दाता वरदानी शिर्डी के
सागर गहबर हो करुणा के
करुणा प्रभो करना
साई कृपा करना
सब पर दया करना...
फूल नारियल भेंट न लाये
भाव भक्ति का भर मन आये
स्वीकार प्रभु करना
साई कृपा करना
सब पर दया करना...
बाती भगती तेल प्रेम का
दिया जलाया मन श्रद्धा का
जलता दिया रखना
साई कृपा करना
सब पर दया करना...

अब विश्राम करो, साई नाथ महाराज। मैं फिर आऊँगा, तुम्हें तुम्हारी पवित्र और विलक्षण लीलाएँ सुनाने।

जय साई नाथ।

- दास कुम्भेश

ई-मेल : kumbhesh9@gmail.com

दूरभाष : (०२५०)२४६०१०० संचार ध्वनि : (०)९८९०२८७८२२



बेरंग जीवन चित्र... साई के रंगों से हुआ रौशन!

साई वास्तव में एक जौहरी जैसी नज़र रखते हैं। इन्सान की परख करना, उसके लिए क्या करना, उसे कैसे तराशना, सब कुछ उनकी इच्छा पर निर्भर रहता था। बाबा की दया के लिए मन शुद्ध एवं सत्य-प्रिय होना चाहिए। ऐसा होने पर ही वे शून्य में से सृजन करने का बल देते हैं। भक्त के साथ वे उठ कर खड़े रहते हैं।

बाबा कहा करते थे, “तुम मेहनत जी-जान से करो। भोजन की चिंता छोड़ दो। मैं तुम्हारे पीछे ही कटोरा लिए खड़ा हूँ। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे काम के लिए मेहनत मैं करूँ, तो भोजन की व्यवस्था अपने आप कर लो। यह सब मुझे पसंद नहीं। अपने कार्य में सदैव सतर्क रहो।”

बाबा के ज्ञानोपदेश का अनुभव आज भी भक्त जन करते हैं। दुनिया जो देगी वह अस्थायी होगा। वह नाशवंत है; किंतु बाबा द्वारा दिया गया चिरकाल तक रहता है। किसको, कब, क्या उपयुक्त है, वह तो केवल बाबा ही जान सकते हैं। इसका विरल उदाहरण है **श्री साई सत् चरित** पर आधारित चित्र बनाने वाले मशहूर चित्रकार श्री सुनील शेगाँवकर, जिनको बाबा ने फ़र्श पर से उठा कर अर्श पर बिठा दिया।

मुम्बई के चर्चगेट इलाक़े में फुटपाथ पर ग्रीटिंग्स कार्ड बना कर बेचने वाले शेगाँवकर **श्री साई सत् चरित** पर आधारित चित्र बना कर आज प्रसिद्ध चित्रकार हो गये हैं। आज उनका नाम साई भक्तों में, सिनेमा, राजनीति आदि विविध क्षेत्रों में एक निपुण चित्रकार के रूप में परिचित है।

मुम्बई के फुटपाथ से लेकर लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में उनके चित्रों की प्रदर्शनी तक का उनका सफ़र बहुत ही कठिन रहा; परन्तु बाबा की कृपा से ही इन्सान कहाँ से कहाँ तक पहुँच जाता है - शेगाँवकर इसकी एक जीतीजागती मिसाल है। अपने इस जीवन सफ़र के बारे में **‘श्री साई लीला’** पत्रिका के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने बताया कि...

मैं मूलतः नागपुर के उमरेड़ तालुका से हूँ। यहीं पर मेरा

जन्म और पढ़ाई भी हुई। हमारा सोने-चाँदी का व्यवसाय था। पारिवारिक हालात बहुत ही अच्छे थे। हमारे पास अनेक नौकर-चाकर थे। साधन-सम्पन्न वातावरण में मेरी परवरिश हुई। घर का वातावरण साहित्य के लिए पोषक था।

मुझे चित्रकारी बहुत पसंद थी। छठी कक्षा से ही मैं चित्र बनाता रहा हूँ। पाठशाला में मेरी चित्रकारी बहुत सराही जाती थी। मेरे चित्रकला के शिक्षक ने भी मुझे काफ़ी प्रोत्साहित किया। इतना कुछ होते हुए भी मैंने चित्रकारी को अपना व्यवसाय बनाना कभी नहीं सोचा था। मुझे साहित्य में अधिक रुचि थी। घर का वातावरण भी वैसा ही था। मैंने कॉलेज में कई एकांकिका, नाटकों में भाग लिया। कई नाटक भी लिखे, जिसके लिए मुझे पारितोषिक भी मिले। अतः मैंने इसमें ही भविष्य बनाना तय किया। मगर मेरे साई ने मेरे लिए कुछ और ही सोच रखा था। बावजूद मैं चित्रकारी से भी जूड़ा रहा। मेरे अध्यापक श्री विठ्ठल घोड़े ने मुझे चित्रकारी की बारिकियाँ सिखाईं। घोड़े सर अर्थात् बहुआयामी व्यक्तित्व। उन्हें संगीत, नाटक और राजनीति में विशेष ज्ञान था। उन्होंने मुझे हर तरह से परिपूर्ण बनाया। उनकी ही बदौलत मैं चित्रकारी से जुड़ गया।

हमारे सोने-चाँदी के व्यवसाय में मुझे तनिक भी रुचि नहीं थी। मैं भूल से भी कभी दुकान की गद्दी पर नहीं बैठा। मैं जब कॉलेज में था, तब हमारे व्यवसाय में कुछ समस्याएँ आ खड़ी हुईं और पारिवारिक विवाद के चलते व्यवसाय में ठहराव आ गया। इसी वजह से घर का माहौल तनावपूर्ण हो गया। इसी कारण परिवार सदस्यों से मेरा विसंवाद हो गया। मेरा मन वहाँ लगता नहीं था। ऐसी मनःस्थिति में मैंने घर छोड़ दिया। सुख-वैभव के बीच पलने वाले मुझ पर अब आत्म-स्वावलम्बी बन कर जीने का भार आ पड़ा। मैं नागपुर में अपने दोस्त के साथ रहने लगा। परन्तु, पापी पेट की खातिर कमाना भी ज़रूरी था। एक कबाड़ी की दुकान में मैं बील बनाने का काम करने लगा। उनके पास स्कूटर था। मुझे काम के लिए अलग-अलग जगहों पर जाने का मौक़ा मिलने लगा। जहाँ मैं रहता था, वहाँ पड़ोस में रहने

वाले कौशल नामक युवक से मेरी जान-पहचान हो गई। वह वॉटर कलर्स से ग्रीटिंग्स कार्ड बनाता था। मैंने उसके पास रह कर वह कला भी हासिल कर ली। इसके कारण ही मैं लैंडस्केप पेंटिंग की तरफ आकर्षित हुआ। अपना काम पूरा करके मैं कौशल के साथ लैंडस्केप पेंटिंग के लिए जाने लगा। दुर्भाग्यवश कबाड़ी की दुकान बंद हो गई। मेरी नौकरी चली गई; पर मुझे नौकरी जाने के बजाय स्कूटर जाने का ज्यादा दुःख हुआ।

मैंने दूसरी नौकरी ढूँढ ली। लगभग १९९२ की यह घटना होगी। मैं जहाँ काम करता था, वहाँ हर रोज़ डिमांड ड्राफ्ट लेकर जाने वाला व्यक्ति एक दिन नहीं आया। उस दिन एक ड्राफ्ट कोपरगाँव तत्काल लेकर जाना था। वह काम मुझे दिया गया। “वहाँ जा ही रहे हो, तो वहीं से थोड़ी दूरी पर शिर्डी है, वहाँ जाकर बाबा के दर्शन कर लेना,” ऐसा मुझे सूचित किया गया। मैं कोपरगाँव में काम निपटा कर शिर्डी गया। वह मेरी साई से पहली मुलाक़ात थी। बाबा की ओर देख कर मैं मन ही मन बोला, “बड़ा आदमी बनने के लिए सब कठिन परिश्रम करते हैं। मैं कब बड़ा आदमी बनूँगा? बाबा! मुझे यहाँ-वहाँ मत भटकाइये।” दिल से प्रार्थना करके मैं नागपुर आया।

मैं और मेरा मित्र कौशल चित्र बनाते रहें। उसी दौरान महाराष्ट्र हैन्डीक्राफ्ट की प्रदर्शनी लगी हुई थी। उस प्रदर्शनी में शामिल होकर छोटे-छोटे ग्रीटिंग्स कार्ड बनाने का फैसला किया। हमने वहाँ अपना स्टॉल लगाया। कार्ड की बिक्री से हमने ५०००/- रुपये कमाये। इस वजह से हमें नई प्रेरणा मिली एवं नया हौसला मिला। हैदराबाद में लगने वाली प्रदर्शनी के लिए भी प्रदर्शनी आयोजनकर्ताओं की ओर से हमें आमंत्रित किया गया। हम हैदराबाद के लिए भी तैयार हो गये। वहाँ पर भी हमें अच्छा प्रतिसाद मिला। इसे देख कर हमें लगा कि हम भी कुछ नया कर सकते हैं। किन्तु, नागपुर में रह कर यह सब सम्भव नहीं था। इसके लिए मुम्बई ही जाना होगा, यह सोच कर मैंने मुम्बई जाना तय किया। लेकिन, मुम्बई में रहूँगा कहाँ? यह प्रश्न सामने आया। उस वक़्त मेरा एक मित्र मेरे काम आया। उसके ससुर मुम्बई में ताड़देव स्थित म्हाड़ा क्वाटर में अकेले रहते थे। उसने अपने ससुर से कह कर एक महीना रहने का प्रबन्ध कर दिया। १९९३ का साल और जुलाई महीना था। ताड़देव में रहते एक बार चर्चगेट-फोर्ट परिसर में घूमने निकल पड़ा।

बारिश थोड़ी देर पहले ही रुकी थी। जहाँगीर आर्ट गैलरी में भी गया। मन में विचार आया कि रहने का मसला तो हल हो गया, मगर खाने-पीने का क्या? कुछ काम तो करना ही पड़ेगा। यही सोचते-सोचते मैं फुटपाथ पर चलगे लगा। उस फुटपाथ पर बड़े पैमाने पर किताबें बेची जाती थीं। थोड़ा और आगे जाते ही मुझे एक खाली जगह नज़र आई। मेरे दिमाग में एक खयाल आया। मैंने उसको हकीकत का रूप देने का विचार करके आसपास ठेला लगाने वालों से पूछा, “क्या मैं यहाँ बैठ कर अपना काम कर सकता हूँ?” उनका सकारात्मक उत्तर सुन कर मैं खाड़िलकर रोड़, गिरगाँव जाकर कुछ कागज़ और रंगों का सामान ले आया। दूसरे ही दिन भारी बरसात हुई। थोड़ी नाराज़गी के साथ अटल निश्चय करके मैं उस जगह पर गया। बरसात के रुकते ही मैंने ग्रीटिंग्स कार्ड बनाना शुरू किया। आते-जाते लोग विस्मित होकर मेरी चित्रकारी को देखने लगे। कई लोगों ने मेरे बनाये कार्ड खरीदे। मैं एक कार्ड पाँच रुपये में बेचने लगा। पहले ही दिन डेढ़ घंटे में अच्छी कमाई हुई। मुम्बई जैसे बड़े शहर में पहले ही दिन अपनी मेहनत से कमाये पैसों से मेरे मन को शांति एवं समाधान मिला। जीवन में आनंद और उत्साह की लहर दौड़ गई। अब यह मेरा नित्यक्रम बन गया। कोर्ट और कॉलेज पास होने के कारण कई वकील, प्राध्यापक और छात्रों से मेरी जान-पहचान बनती गई। उसी दौरान मैंने जे. जे. अस्पताल के एक मेडिकल छात्र से रहने लायक किराए की जगह के बारे में पूछताछ की। तब उसने, वह जहाँ रहता था उसी होस्टेल में ५००/- रु. किराए पर मुझे रहने के लिए जगह दिलाई। इसी कारण जे. जे. के डॉक्टर एवं नर्स के सम्पर्क में रह कर मेरी जान-पहचान बढ़ने लगी।

नागपुर की रहने वाली एक नर्स को क्वाटर मिला था; मगर वह वहाँ नहीं रहती थी। उसने मुझे वहाँ किराए पर रहने के लिए पूछा और मैंने तत्काल हाँ भी कर दी। धीरे-धीरे जीवन में स्थिरता आने लगी। मेरा फुटपाथ पर का व्यवसाय अच्छा चल रहा था। लगभग डेढ़ साल बीत गया। एक शाम फुटपाथ पर से श्री साई के करीब जाने का समय आ गया। हुआ यूँ...

मेरी पत्नी सुनीता ने बी.एड. किया था। उसने पूना के एक स्कूल का विज्ञापन पढ़ कर वहाँ आवेदन किया। इन्टरव्यू दिया। उसका चयन भी हुआ, लेकिन उसी समय एक अन्य



व्यक्ति ने उस पद पर दावा किया। हमें मंत्रालय जाना पड़ा। वहाँ पर मेरे मित्र कौशल ने विधायक श्री अविनाश जी से

पहचान कराई। उनकी वजह से विधायक श्री जयंत ससाणे जी से मेरी पहचान हुई। मेरी पत्नी का काम बन गया। आगे चल कर ससाणे जी से कई बार मिलना हुआ। ये मुलाकातें उनके शिर्डी साई बाबा संस्थान के अध्यक्ष बनने के पहले की थीं। एक बार सपत्नीक उनसे मिलने श्रीरामपुर गया। वहाँ से उनके साथ शिर्डी साई समर्थ के दर्शन करने का मौका मिला। संस्थान के तत्कालीन कार्यकारी अधिकारी और वर्तमान में ट्रस्टी श्री भाऊसाहेब वाकचौरे से मेरी पहचान हुई। श्री ससाणे जी ने उनसे मेरी मुलाकात करवाई और मेरा परिचय करवाया। मेरा परिचय जान कर भाऊसाहेब ने मुझे बाबा की लीलाओं पर आधारित चित्र बनाने को कहा। बाबा की जीवन लीलाओं पर आधारित एक चित्रमय गैलरी बनाने हेतु उन्होंने मुझे पहले एक चित्र बना कर दिखाने को कहा। उसके लिए पहले मैंने बाबा के चरित्र को समझने का प्रयास किया।

यहीं से मेरे जीवन में परिवर्तन की शुरुआत हुई। मैंने **श्री साई सत् चरित** के अध्याय २९ में वर्णित मद्रासी भजन मंडली बाबा के सामने भजन कर रही है, उसका चित्र बनाया। यह चित्र आज समाधि मंदिर के सभागृह में, जहाँ भजन के कार्यक्रम होते हैं वहाँ, लगाया गया है। यह मेरा साई बाबा से संबंधित पहला चित्र था। इसके लिए मुझे



बहुत मेहनत करनी पड़ी। केवल **चरित्र** पढ़ कर यह हासिल होने वाला नहीं था। उसके लिए सामने वैसा दृश्य साकार होना जरूरी था। विचार करते-करते मुझे याद आया। उस समय अल्फा डी मराठी चैनल पर देबू देवधर का साई बाबा पर आधारित एक धारावाहिक चल रहा था। मैंने उनके पास जाकर अपनी मुश्किलें बताईं। देबू जी बड़े दिल वाले और मददगार स्वभाव के होने के कारण उन्होंने मुझे साई संबंधित पूरा एल्बम दिया। साई कृपा से मेरे हाथों चित्र साकार हुआ।

उसी समय श्री ससाणे जी संस्थान के अध्यक्ष बने। मैं चित्र लेकर शिर्डी गया। बाबा की लीला देखिये... उसी दिन शिर्डी व्यवस्थापन मंडल की बैठक थी। मुझे उसकी पूर्वसूचना भी नहीं थी। उस बैठक में भाग लेने चेन्नई से प्रसिद्ध उद्यमी एवं साई भक्त श्री के. वी. रमणी जी आये थे। उन्हें मेरी बनाई पेंटिंग काफ़ी पसंद आई। उन्होंने वह चित्र एक लाख ग्यारह हजार में खरीद लिया। इस बैठक में मुझे संस्थान की ओर से २० पेंटिंग्स बनाने का ऑर्डर मिला। उनमें से मैंने ९-१० पेंटिंग्स बना कर दीं। कुछ समय बाद व्यवस्थापन मंडल खारिज हो जाने से बाकी काम अपूर्ण रह गया।

जब होने लगता है, तो बहुत कुछ होने लगता है। बाबा की ओर जो एक क़दम बढ़ाते हैं, उनकी ओर बाबा कई क़दम बढ़ाते हैं। वही हुआ। साई कृपा से रमणी जी ने मुझे साई लीलाओं पर आधारित ५० चित्र बनाने का ऑर्डर दिया। मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया। मैंने **श्री साई सत् चरित्र** एक अभ्यासू की दृष्टि से गहराई से पढ़ा। छोटी-छोटी चीज़ें मैंने नोट कर लीं। बाबा के अवतार का समय जान लिया। गाँव के घर, वहाँ के लोगों का पहनावा आदि को गहराई से समझ लिया। गाय, बैल, गाडियाँ आदि को समझने गाँव-गाँव घूमा। उस प्रकार के कपड़े खरीदें। उस प्रकार के जवाहरात प्राप्त किये। मॉडेल्स तैयार किये। प्रसंग के अनुरूप बाबा की बोली, उनकी आँखें, उनके भक्त आदि पर काफ़ी चिंतन-मनन किया। साई भक्त और अनेक विद्वजनों को मिल कर चर्चा की। पूर्ण आकलन के साथ

मैंने चित्र बनाना शुरू किया। यह सब करते-करते मैं बाबा के इतने करीब आ गया कि कुछ पता ही नहीं चला। यही तो बाबा की करामात है। वे हमें कब और कैसे अपनी ओर खींच लेते हैं, हमें ज्ञात ही नहीं होता। केवल देवपूजा करना भक्ति नहीं; जीवसेवा, प्राणिओं के ऊपर प्रेम, यही सच्ची ईश्वर-भक्ति है। बाबा की यही सीख मैंने अपना ली है। आज भी मैं पशु-पक्षी को खाना खिलाता हूँ। कहीं भी जाते समय रास्ते में कोई प्राणी भूखा नज़र आये, तो मैं उसे खाना दिये बगैर आगे नहीं जाता हूँ। अपनी गाड़ी में हमेशा बिस्कुट आदि रखता हूँ। मेरे मित्र भी मेरी तरह सेवा करते हैं। आज मैं जो कुछ भी हूँ वह सिर्फ़ बाबा की देन है। मेरा जीवन उनकी दी हुई सौगात है।

बाबा से मैंने पहली मुलाक़ात में कहा था, “मुझे यहाँ-वहाँ भटकाने मत; एक जगह स्थिर कीजिये।” आज, बाबा से मैंने जो माँगा था, वह सब मिल गया है। बाबा के चरित्र पर आधारित चित्र बनाने वालों में अग्रक्रमांकित होने का मुझे सम्मान मिला है।

फुटपाथ पर बैठ कर चित्र बनाने वाला कहाँ मैं, आज मेरी बनाई हुई बाबा की पेंटिंग्स लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में ‘साई संध्या’ कार्यक्रम के दौरान लगाई गईं। एक समय मुझसे दूर हो चुका मेरा परिवार, माता-पिता, भाई हम सब एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। यह सब बाबा की कृपा है। मेरे बेरंग जीवन को साई ने अपनी कृपा से रंगीन बना दिया।

श्री शोगाँवकर ने आज तक कई सिने कलाकार, क्रिकेटियर्स, उद्योगपति आदि के पेंटिंग्स बनाये हैं। प्रसिद्ध चित्रकारों में उनका नाम लिया जाता है। फुटपाथ से अल्बर्ट हॉल तक का शोगाँवकर का यह सफ़र रोमांचित कर देने वाला है।

कथन : श्री सुनील शोगाँवकर

ई-मेल : saisun2@gmail.com

संकलन-शब्दांकन : सौ. मयूरी महेश कदम

मराठी से हिंदी अनुवाद : श्री विनय घासवाला

संशोधन : डॉ. सुबोध अग्रवाल



“जो मुझे अत्यधिक प्रेम करता है, वह सदैव मेरा दर्शन पाता है। जो पूर्ण रूप से मेरी शरण में आ जाता है और सदा मेरा ही स्मरण करता है, अपने ऊपर उसका यह ऋण मैं उसे मुक्ति (आत्मोपलब्धि) प्रदान करके चुका दूँगा। जो मेरा ही चिंतन करता है और मेरा प्रेम ही जिसकी भूख-प्यास है और जो पहले मुझे अर्पित किये कुछ भी नहीं खाता, मैं उसके अधीन हूँ।” - श्री साई



गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य एक बार भी भगवान् श्री राम का नाम ले लेवे, तो वह अपार भवसिन्धु के पार उतर जायेगा। परन्तु, नाम में गहन निष्ठा और विश्वास होना चाहिए; ऐसा गहनतम विश्वास, जिसका कोई विकल्प ही न हो। भगवन्नाम स्मरण करने से ऐसी रसानुभूति होती है कि फिर भगवन्नाम स्मरण किये बिना रहा नहीं जाता।

माता पार्वती रम्य कैलाश शिखर पर अपने पति भगवान् शंकर से एक बार पूछती हैं -

“सेस सारदा बेद पुराना।
सकल करहिं रघुपति गुन गाना॥
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती।
सादर जपहु अजंग आराती॥” -

आशय है, शेष, शारदा, वेद और पुराण सभी श्री

रघुनाथ जी के गुण गाते हैं। और फिर हे कामदेव के शत्रु! ये ही नहीं, किन्तु आप भी दिन-रात आदर पूर्वक राम-राम जपते हैं।

आप तो -

“प्रभु समरथ सर्वग्य सिव,
सकल कला गुन धाम।
जोग ग्यान बैराग्य निधि,
प्रनत कलपतरु नाम॥”

हे प्रभो! आप तो समर्थ, सर्वज्ञ, कल्याण स्वरूप, सम्पूर्ण कलाओं और गुणों के धाम और योग, ज्ञान तथा वैराग्य के समुद्र (भण्डार या खज़ाना) हैं। आपका नाम शरणागतों के लिए कल्पवृक्ष है। (भगवान् में योग, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, धर्म और श्री - इन छः गुणों का निधि - भण्डार ही रहता है।)

फिर भी, आप सर्व समर्थ होते हुए भी राम-राम जपते रहते हैं। ऐसा क्यों?

एक बार भगवान् शंकर से किसी ने पूछा, “हे भगवन्! आप तो बड़ी विचित्रताओं में रह कर भी हमेशा प्रसन्न रहते हो।” -

“प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।”

जब हम शंकर जी के दर्शन करते हैं, तो बड़ी विचित्रताएँ पाते हैं -

एक ओर तो सिर पर जटाएँ हैं और जटाओं में गंगा की शीतल धारा है - ‘गंगा धवल धार।’ और दूसरी ओर तीसरे नयन में अग्नि है - ‘तब सिव तीसर नयन उधारा। चितवत काम भयउ जरि छारा॥’ यह अग्नि और जल के बीच में शंकर जी रहते हैं। ‘भाल द्वितीया शशिधरं’, भाल पर अमृत से भरा हुआ द्वितीया का चन्द्रमा है और थोड़ा ही नीचे उतरें, तो ‘गरल कण्ठ’। यह विष और अमृत एक साथ। शंकर जी के गले का हार सर्प - ‘पन्नग

**ज्यासु नाम सुमिरत एक बार।
उतरहिं नर भवसिंधु अपारा॥**

भूषणम् और शंकर जी के सुपुत्र गणेश जी का वाहन चूहा। चूहा हमेशा सर्प से भयभीत रहता है। वह डरता रहता है, यदि शिव जी के गले का हार सर्प नीचे आया, तो हम ऊपर जायेंगे। शंकर जी के ज्येष्ठ पुत्र हैं - कार्तिकेय जी। उनका वाहन है - मयूर। मयूर और सर्प के आपस में बैर। एक दूसरे को खा जाने वाले एक साथ। शंकर जी का वाहन - वृषभ - नंदी और पराम्बा माता पार्वती का वाहन सिंह। ये सिंह और वृषभ एक साथ। शंकर जी के अंग में लगी है विभूति और शंकर जी के साथ रहते हैं - भूत, प्रेत और पिशाच। ये भूत और भभूत एक साथ। शंकर जी के साथ कितनी विडम्बनायें हैं! परन्तु, इन सबके शिव जी के साथ रहते हुए भी क्या हमने कभी शिव जी को तनाव (Tension) में देखा? **‘प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।’** शिव जी सदा प्रसन्न-मुख ही रहते हैं। शिव जी से कभी किसी ने पूछा, “हे नीलकण्ठ दयाल शिव! आप इन सबके बीच में प्रसन्न-मुख कैसे रह लेते हैं?” तो, शिव जी ने उत्तर दिया, “मैं दिन-रात सादर ‘राम-राम’ रटता रहता हूँ। यह भव रोग निवारक गोली है। इसी कारण मुझे तनाव नहीं होता और मैं हमेशा प्रसन्न-मुख रहता हूँ।”

भगवन्नाम स्मरण में मन नहीं लगेगा, तो आनंद का अनुभव नहीं होगा। पर, इसका यह अर्थ भी नहीं है कि इससे कोई लाभ नहीं होगा। हम अग्नि में बड़े मनोयोग पूर्वक आहुति देते हैं। कोई मन्त्र बोल कर ओम् स्वाहा बोलते हैं और अग्निदेव हमारी आहुति को स्वीकार कर लेते हैं। पर, यदि धोखे से अथवा हमारी गलती से हमारा कोई वस्त्र अग्नि में गिर जाये, तो अग्नि उसको भी जला कर भस्म कर देगा। कर्म दो प्रकार के होते हैं - १. भाव रूप कर्म तथा पदार्थ रूप कर्म। अग्नि का स्पर्श - यह वस्तु रूप पदार्थात्मक कर्म है। इसके परिणाम के प्रकट होने में भाव की अपेक्षा नहीं है। भगवन्नाम अपने नामी का स्वरूप है; वह भाव नहीं है, सत्य है। वह सच्चिदानंद स्वरूप है, परम तत्व है। अतएव उसका संसर्ग ‘भाव रूप कर्म’ होकर ‘वस्तु रूप कर्म’ है।

जिह्वा से भाव पूर्वक भगवन्नाम उच्चारण करना भाव रूप कर्म है और बिना भाव के उच्चारण करना पदार्थ रूप कर्म है। पर, दोनों ही दशा में भगवन्नाम उच्चरित हो रहा है।

अतः पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज रामचरितमानस में लिखते हैं -

**“भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।”**

भाय = भाव। जैसे कि शेष-शेषी, पिता-पुत्र, भार्या-स्वामी, शरीर-शरीरी, धर्म-धर्मी, रक्ष्य-रक्षक इत्यादि भाव मित्र पक्ष हैं। **कुभाव** = कुत्सित भाव। जैसे कि अनरस, जिसमें स्वाभाविक विरोध है - ईर्ष्या भाव, असूया भाव, वैर भाव इत्यादि, जो शत्रु पक्ष के भाव हैं। **अनख** अर्थात् जो प्रीति - विरोध रहित है, पर किसी कारण से रूष्ट हो गया हो। **आलस** = आलस्य, प्रमाद। कहने का तात्पर्य है कि किसी भी प्रकार से नाम जपने से दशों दिशाओं में मंगल ही होता है।

**“नहिं कलि करम न भगति बिबेकू।
राम नाम अवलंबन एकू।”**

- इस घोर कलियुग में न तो याग-यज्ञ, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि कर्म करते बन पड़ता है, न भगवान् की सेवा-पूजा और भक्ति ही बन पड़ती है, और न षड् दर्शन का ज्ञान-विवेक ही है। अस्तु, एक मात्र राम नाम का ही अवलम्बन - सहारा है।

अतः मन लगे न लगे, सोते-जागते, उठते-बैठते, राम नाम का आश्रय लेवें। राम-राम, शिव-शिव जपते-जपते स्वतः ही भगवन्नाम में मन लगने लगेगा।

**“नाम निरूपन नाम जतन तें।
सोउ प्रगतत जिमि मोल रतन तें।।”
“राम नाम कलि अभिमत दाता।
हित परलोक लोक पितु माता।।”**

कलियुग में राम नाम ही अभिमत (अभीष्ट) देने वाला है, इस लोक में माता-पिता के समान हमें संरक्षण देने वाला और कल्याण करने वाला है और हमारा परलोक सुधारने वाला है।

- मदन गोपाल गोयल

प्राचार्य (सेवा निवृत्त)

श्री राम अयन, इन्द्रगढ़ - ३२३ ६१३,

ज़िला बूंदी, राजस्थान.

ई-मेल : gopalgoyal1963@gmail.com

संचार ध्वनि : (0)९४६०५९४८९०,

७८९१७६३८८४, ८९४९४३७९३२



त्रिकालदर्शी श्री साई - समाधि पूर्व... समाधि उपरान्त भी...

मनुष्य का ज्ञान सीमित होता है; परन्तु ईश्वर, जो इस सृष्टि का संचालक है, वह सर्वज्ञ है, त्रिकालदर्शी है। त्रिकालदर्शी का अर्थ है - 'तीनों कालों (वर्तमान, भूत, भविष्य) का ज्ञाता', जो अतीत के बारे में भी जानता हो, वर्तमान के बारे में भी और भविष्य का भी भली-भाँति ज्ञान रखता हो, इनका पूरा ज्ञान ईश्वर को होता है; सृष्टि, विषय व जीवों के अतीत, वर्तमान और भविष्य का पूरा-पूरा ज्ञान ईश्वर को सदा सर्वदा रहता है; इसीलिए उसे त्रिकालदर्शी कहा जाता है।

एक सामान्य मनुष्य की तरह जीवन यापन करने वाले ईश्वरी अवतार संत सच्चिदानंद सद्गुरु श्री साई बाबा भी त्रिकालदर्शी थे, वे अपने साथ बैठे भक्तों को कई बार इस बात का प्रत्यक्ष अवबोध करा चुके थे। भक्त गण उनकी ईश्वरीय शक्तियों का अनुभव अनेक अवसरों पर ले चुके थे। उन्होंने शिर्डी में रहते हुए ही कई लोगों के अतीत का चिट्ठा सबके सामने प्रस्तुत किया, वरन्

भविष्य में होने वाला परिणाम पूर्व से ही सबके समक्ष रखा और वह समय आते ही, शत प्रतिशत सत्य साबित हुआ। यही कारण है कि श्री साई बाबा की कीर्ति सम्पूर्ण विश्व में दृष्टिगोचर हुई। ईश्वरीय अवतार श्री साई बाबा के त्रिकालदर्शी होने के कुछ प्रमाणिक घटनाओं का विवरण इस प्रकार है :-

“विठ्ठल अवश्य प्रकट होंगे!”

त्रिकालदर्शी श्री साई बाबा भविष्य में होने वाली घटना को पूर्व से जानते थे और वे इसकी सूचना पूर्व से ही दे देते थे, जो इस घटना से प्रमाणित होता है...

श्री साई बाबा की ईश्वर-चिंतन और भजन में विशेष अभिरुचि थी। वे सदैव “अल्ला मालिक” पुकारते तथा भक्तों से कीर्तन-सप्ताह करवाते थे। इसे ‘नाम-सप्ताह’ भी कहते हैं। एक बार उन्होंने दासगणु को कीर्तन-सप्ताह करने की आज्ञा दी। दासगणु ने बाबा से

अध्याय ४



कहा कि “आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है; परन्तु इस बात का आश्वासन मिलना चाहिए कि सप्ताह के अंत में विठ्ठल अवश्य प्रकट होंगे।” बाबा ने अपना हृदयस्पर्श करते हुए कहा कि “विठ्ठल अवश्य प्रकट होंगे; परन्तु साथ ही भक्तों में श्रद्धा व तीव्र उत्सुकता का होना भी अनिवार्य है। ठाकुरनाथ की डंकपुरी, विठ्ठल की पंढरी, रणछोड की द्वारका यहीं तो है। किसी को दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। क्या विठ्ठल कहीं बाहर से आयेंगे? वे तो यहीं विराजमान हैं। जब भक्तों में प्रेम और भक्ति का स्रोत प्रवाहित होगा, तो विठ्ठल स्वयं ही यहाँ प्रकट हो जायेंगे।” सप्ताह समाप्त होने के बाद विठ्ठल भगवान् प्रकट हुए।...

श्रीमती खापर्डे का भोजन

सच्चिदानंद श्री साई बाबा, जो कि त्रिकालदर्शी ईश्वरीय अवतार थे, उन्हें केवल गत जन्मों का ही नहीं, वरन् कई जन्मों का ज्ञान था, वे सम्पूर्ण अतीत का ज्ञान रखते थे, इस बात की पुष्टि इस घटना से पूर्ण स्पष्ट होती है...

श्री दादासाहेब खापर्डे सकुटुम्ब शिर्डी आये। तब दादा चार मास एवं उनकी पत्नी सात मास वहाँ ठहरी। श्रीमती खापर्डे प्रतिदिन दोपहर को स्वयं नैवेद्य लेकर

अध्याय २७



मस्जिद को जाती और जब बाबा उसे ग्रहण कर लेते, तभी वह लौट कर अपना भोजन किया करती थी। एक दिन दोपहर को वह भोजन लेकर मस्जिद में आई। और दिनों तो भोजन प्रायः घंटों तक बाबा की प्रतीक्षा में पड़ा रहता था; परन्तु उस दिन वे तुरंत ही उठे और भोजन के स्थान पर आकर आसन ग्रहण कर लिया और थाली पर से कपड़ा हटा कर उन्होंने रुचि पूर्वक भोजन करना प्रारम्भ कर दिया। तब शामा कहने लगे कि “यह पक्षपात क्यों? दूसरों की थालियों पर आप दृष्टि तक नहीं डालते, उल्टे उन्हें फेंक देते हैं; परन्तु आज इस भोजन को आप बड़ी उत्सुकता और रुचि से खा रहे हैं। आज इस बाई का भोजन आपको इतना स्वादिष्ट क्यों लगा? यह विषय तो हम लोगों के लिए एक समस्या बन गया है।” तब बाबा

ने इस प्रकार समझाया -

“सचमुच ही इस भोजन में एक विचित्रता है। पूर्व जन्म में यह बाई एक व्यापारी की मोटी गाय थी, जो बहुत अधिक दूध देती थी। पशुयोनि त्याग कर इसने एक माली के कुटुम्ब में जन्म लिया। उस जन्म के उपरान्त फिर यह क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुई और इसका ब्याह एक व्यापारी से हो गया। दीर्घ काल के पश्चात् इससे भेंट हुई है। इसलिए इसकी थाली में से प्रेम पूर्वक चार ग्रास तो खा लेने दो।” ऐसा कह कर बाबा ने भरपेट भोजन किया।

उपरोक्त घटना से पूर्ण स्पष्ट है कि साई बाबा को व्यक्ति के कई जन्मों का ज्ञान भली-भाँति था; वे त्रिकालदर्शी थे।

सभी प्राणियों का ज्ञान

श्री साई नाथ महाराज को केवल अपने भक्तों का ही नहीं, वरन् अन्य प्राणियों का भी सम्पूर्ण ज्ञान था; वे त्रिकालदर्शी मानव अवतार लेकर सभी से स्नेह रखते थे, निम्न संस्मरण इस बात की पुष्टि करता है...

एक बार बाबा लेंडी बाग से लौट रहे थे, तो उन्होंने बकरों का एक झुन्ड आते देखा। उनमें से दो बकरों ने उन्हें



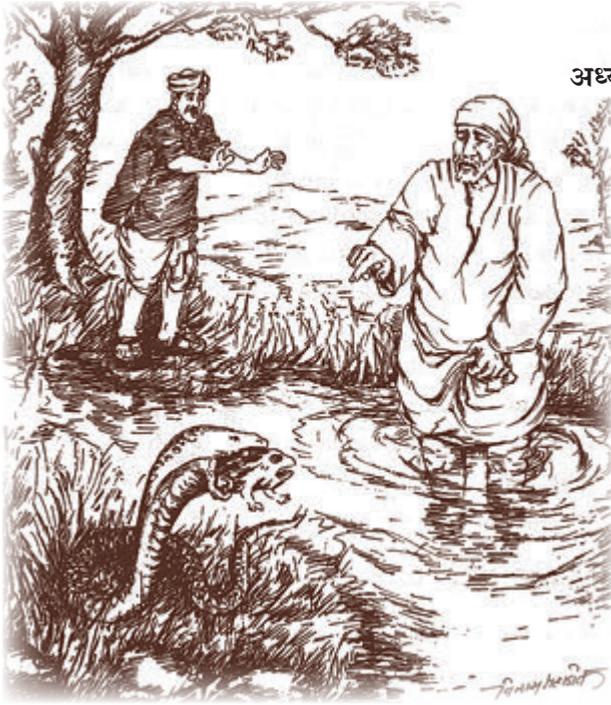
अध्याय ४६

अपनी ओर आकर्षित कर लिया। बाबा ने जाकर प्रेम से उनका शरीर अपने हाथ से थपथपाया और उन्हें मूल्य देकर खरीद लिया। बाद में उन्होंने चार सेर दाल बाज़ार से मँगवा कर उन्हें खिलाई; जब उन्हें खिला-पिला चुके, तो उन्होंने पुनः उनके मालिक को बकरे लौटा दिये। इस विचित्र व्यवहार को देख कर उनके प्रिय भक्त शामा और तात्या ने पूछा कि “बाबा, आपने ऐसा क्यों किया?” तब बाबा ने उन बकरों के पूर्व जन्मों की कथा इस प्रकार सुनाई -

गत जन्म में ये दोनों सगे भाई थे और पहले इनमें परस्पर बहुत प्रेम था; परन्तु बाद में ये एक दूसरे के कट्टर शत्रु बन गये। बड़ा भाई आलसी था; किन्तु छोटा भाई बहुत परिश्रमी था, जिसने पर्याप्त धन उपार्ज कर लिया था, जिससे बड़ा भाई उससे ईर्ष्या किया करता था। इसलिए उसने उसकी हत्या करके उसका धन हड़पने की ठानी; और अपना आत्मीय सम्बन्ध भूल कर वे एक दूसरे से बुरी तरह झगड़ने लगे। बड़े भाई ने अनेक प्रयत्न किये; परन्तु वह छोटे भाई की हत्या करने में असफल रहा। तब वे एक दूसरे के प्राणघातक शत्रु बन गये। एक दिन बड़े भाई ने छोटे भाई के सिर पर लाठी से प्रहार किया। बदले में छोटे भाई ने भी बड़े भाई के सिर पर कुल्हाड़ी चलाई। परिणामस्वरूप वहीं दोनों की मृत्यु हो गई। फिर अपने कर्मों के अनुसार ये दोनों बकरे की योनि को प्राप्त हुए। जैसे ही वे मेरे समीप से निकले, तो मुझे उनके पूर्व इतिहास का स्मरण हो आया और मुझे दया आ गई। इसलिए मैंने उन्हें कुछ खिलाने-पिलाने तथा सुख देने का विचार किया। यही कारण है कि मैंने इनके लिए पैसे खर्च किये; तुम लोगों को यह लेन-देन अच्छा नहीं लगा; इसलिए मैंने उन बकरों को गड़ेरिये को वापस कर दिया। केवल मनुष्य ही नहीं, सभी प्राणियों के लिए बाबा के हृदय में अपार प्रेम था।

वीरभद्राप्पा और चैनबसाप्पा की कथा

भक्त गणों के साथ वार्तालाप करते हुए श्री साई बाबा भक्तों को न केवल उपदेश देते थे, बल्कि उनका मार्गदर्शन भी किया करते थे। एक बार उन्होंने यह उपदेश दिया कि मनुष्य को लालच से बचना चाहिए एवं गलत तरीके से आय अर्जित नहीं करना चाहिए। इस हेतु उन्होंने एक सत्य घटना सुनाई, जो उनकी त्रिकालदर्शिता को भी स्पष्ट करती है...



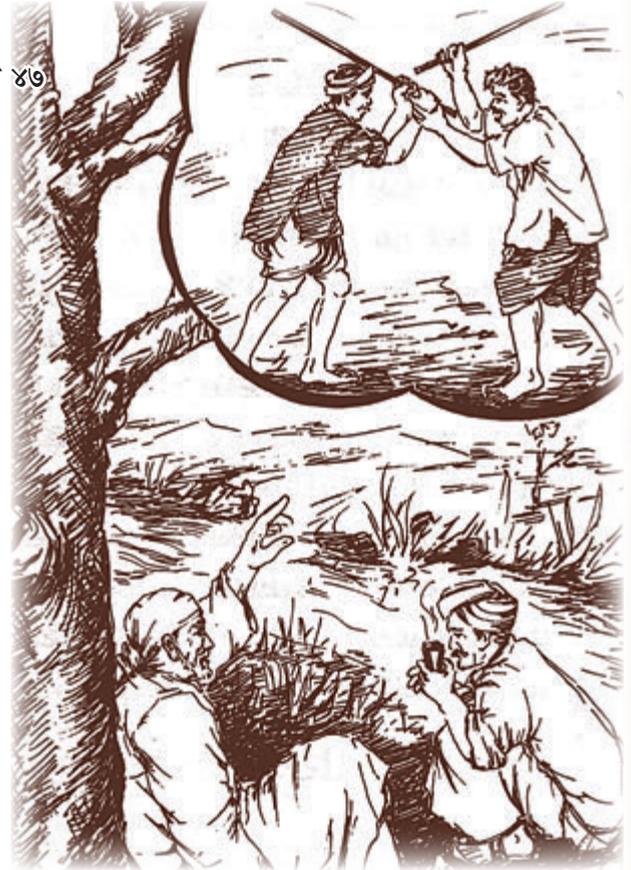
अध्याय ४७

श्री साई बाबा ने कहा, “मैं एक दिन प्रातःकाल जलपान के पश्चात् घूमने निकला। चलते-चलते छोटी सी नदी के किनारे पहुँचा। इतने में मेरे कानों में मेंढक के बुरी तरह टरनि की आवाज़ पड़ी। इतने में एक अन्य यात्री वहाँ आया। मेंढक के टरनि की आवाज़ सुन कर वह उसका रहस्य जानने को उत्सुक हो उठा।

मैंने बतलाया की मेंढक कष्ट में है, जो अपने पूर्व जन्मों के कष्ट भोग रहा है। अपने पूर्व जन्मों के कर्मों का फल इस जन्म में भोगना पड़ता है, अतः उसका चिल्लाना व्यर्थ है। मैंने आगे उसे बतलाया कि एक बड़े साँप ने उस मेंढक को मुँह में दबा लिया है, इस कारण वह चिल्ला रहा है।

उसने देखा, ऐसा ही था, उसने कहा ‘घड़ी दो घड़ी में साँप मेंढक को निगल जायेगा।’ परन्तु मैंने कहा, ‘मैं अभी उसकी रक्षा करता हूँ।’ मैंने वहाँ जाकर कहा, ‘अरे वीरभद्राप्पा, क्यों तेरे शत्रु को पर्याप्त फल नहीं मिल चुका है, जो उसे मेंढक की और तुझे सर्प की योनि प्राप्त हुई है? अरे! अब तो अपना वैमनस्य छोड़ो। यह बड़ी लज्जाजनक बात है। अब इस ईर्ष्या को त्यागो और शांति से रहो।’

यह सुन कर सर्प ने मेंढक को छोड़ दिया और शीघ्र ही नदी में लुप्त हो गया। यात्री को बड़ा आश्चर्य



हुआ और वह जानना चाहता था कि वीरभद्राप्पा और चैनबसाप्पा कौन थे? और उनके वैमनस्य का कारण क्या था?

मैंने उसको बताया, ‘मेरे निवासस्थान से कुछ दूरी पर एक पवित्र स्थान था, जहाँ महादेव का मंदिर था। मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। वहाँ के निवासी उसका जीर्णोद्धार करना चाहते थे। उन्होंने इस हेतु चंदा एकत्रित किया। परन्तु, कोषाध्यक्ष बने एक धनाढ्य सेठ ने बेईमानी कर दी। लोगों ने पुनः चंदा एकत्रित किया। भगवान् शंकर ने उस धनाढ्य सेठ की स्त्री को स्वप्न दिया और स्त्री ने अपने पति से मंदिर का कार्य पूर्ण करने को कहा; परन्तु उसने फिर भी कार्य पूर्ण नहीं किया।

स्त्री के पिता ने इस कार्य हेतु आभूषण दान किये; परन्तु सेठ ने स्वयं मात्र एक हजार रुपये में वे आभूषण खरीद कर एक बंजर ज़मीन का टुकड़ा उनके नाम कर दिया। वह ज़मीन का टुकड़ा एक निर्धन स्त्री ‘दुबकी’ का था, जो मात्र दो सौ रुपये में उसने गिरवी रखा था। उस धूर्त कृपण ने अपनी स्त्री, ‘दुबकी’ और भगवान् को धोखा दे

दिया। भूमि मंदिर के पुजारी को दी गई। कुछ समय पश्चात् कृपण सेठ के गाँव में बिजली गिरी और पति-पत्नी दोनों की मृत्यु हो गई; और 'दुबकी' ने भी अंतिम साँस छोड़ दी। अगले जन्म में वह कृपण एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ; उसका नाम वीरभद्राप्पा रखा गया। उसकी धर्मपत्नी मंदिर के पुजारी के घर पैदा हुई; उसका नाम 'गौरी' रखा गया। 'दुबकी' पुरुष बन कर मंदिर में सेवक वंश में पैदा हुई; उसका नाम चैनबसाप्पा रखा गया। इस जन्म में भी वीरभद्राप्पा का विवाह गौरी से हुआ। गौरी के भाग्य से पुजारी की ज़मीन बहुत ऊँचे भाव में बिक गई। उसका पति वीरभद्राप्पा उस राशी पर अधिकार करना चाहता था। परन्तु, महादेव ने स्त्री को स्वप्न दिया कि इस राशी पर गौरी का ही अधिकार है; वीरभद्राप्पा का नहीं; कुछ राशी सेवक चैनबसाप्पा की सलाह से मंदिर पर खर्च करो।

स्वप्न गौरी ने सबको सुनाया। इस बात को लेकर वीरभद्राप्पा और चैनबसाप्पा में झगड़ा हो गया। वे एक दूसरे के दुश्मन हो गये। कुछ समय पश्चात् दोनों की मृत्यु हो गई। वीरभद्राप्पा सर्प और चैनबसाप्पा मेंढक बना। चैनबसाप्पा की पुकार सुन कर और अपने पूर्व वचनों को स्मृति करके मैं यहाँ आया और इस तरह से उसकी रक्षा कर मैंने अपना वचन निभाया।

संकट के समय भगवान् दौड़ कर अपने भक्त के

पास जाते हैं। उन्होंने मुझे यहाँ भेज कर चैनबसाप्पा की रक्षा कराई। यह सब ईश्वरीय लीला ही है।”

समुद्र-स्नान से सब तीर्थों एवं पवित्र नदियों में स्नान करने का पुण्य प्राप्त होता है, इसी प्रकार लोगों में यह धार्मिक भावना है कि सत्पुरुष के समागम से अपने धर्म के सभी पवित्र ग्रन्थों के अध्ययन का पुण्य लाभ होता है; फिर भी साई बाबा जैसे अवतारी सत्पुरुष अपनी श्रेष्ठता को स्वीकार न करते हुए अपने लिए सदा 'अल्ला का सेवक' और 'बंदा' जैसे शब्दों का प्रयोग करते थे; "मैं तो केवल निमित्तमात्र हूँ," ऐसा कहते थे। परन्तु, भक्त गण तो जान चुके थे कि वे अवतारी सत्पुरुष हैं एवं त्रिकालदर्शी हैं। संसार के लिए विशेष परिस्थितियों में भी लौकिक जीवन आरम्भ करने वाली इस महान विभूति के अवतार कार्य का उज्ज्वल दीपक जगत् के कोने-कोने में अपने ज्ञान का प्रकाश पहुँचा रहा है... और युगों-युगों तक जगत् को लाभान्वित करेगा।

- राजेन्द्र जसूजा (व्याख्याता)

- संजय तिवारी (व्याख्याता)

१ आराधना नगर,

कोटरा, भोपाल, मध्य प्रदेश.

ई-मेल : rajendrasuja@gmail.com

संचार ध्वनि : (०)९८२७७८१७८२



“इस विश्व में कई संत हैं; परन्तु अपना पिता (गुरु) ही सच्चा पिता (सच्चा गुरु) है। दूसरे चाहे कितने ही मधुर वचन क्यों न कहते हों, परन्तु अपना गुरु-उपदेश कभी नहीं भूलना चाहिए। शुद्ध हृदय से अपने गुरु से प्रेम कर, उनकी शरण जाओ और उन्हें श्रद्धा पूर्वक साष्टांग नमस्कार करो। तभी तुम देखोगे कि तुम्हारे सम्मुख भवसागर का अस्तित्व वैसा ही है, जैसा सूर्य के समक्ष अँधेरे का।... एक चिड़िया अपने बच्चों की जितनी सावधानी से लालन-पालन करती है, उसी प्रकार मेरे गुरु ने मेरा पालन किया। उन्होंने मुझे अपनी शाला में स्थान दिया। कितनी सुंदर थी वह शाला! वहाँ मुझे अपने माता-पिता की भी विस्मृति हो गई। मेरे समस्त अन्य आकर्षण दूर हो गये और मैंने सरलता पूर्वक बंधनों से मुक्ति पाई। मुझे सदा ऐसा ही लगता था कि उनके हृदय से ही चिपके रह कर उनकी ओर निहारा करूँ। यदि उनकी भव्य मूर्ति मेरी दृष्टि में न समाती, तो मैं अपने को नेत्रहीन होना ही अधिक श्रेयस्कर समझता। ऐसी प्रिय थी वह शाला कि वहाँ पहुँच कर कोई भी कभी खाली हाथ नहीं लौटा। मेरी समस्त निधि, घर, सम्पत्ति, माता, पिता या क्या कहूँ, वे ही मेरे सर्वस्व थे। मेरी इंद्रियाँ अपने कर्मों को छोड़ कर मेरे नेत्रों में केंद्रित हो गईं और मेरे नेत्र उन पर। मेरे लिए तो गुरु ऐसे हो चुके थे कि दिन-रात मैं उनके ही ध्यान में निमग्न रहता था। मुझे किसी भी बात की सुध न थी। इस प्रकार ध्यान और चिंतन करते हुए मेरा मन और बुद्धि स्थिर हो गई।” - श्री साई

कई रूप समाये हैं साई रूप में!

“राम साई बोलो, शाम साई बोलो,
नानक साई बोलो, गोविंद साई बोलो,
अल्ला साई बोलो, मौला साई बोलो...”

बाबा को किसी भी नाम से पुकारो, सारे रूप उनके रूप में समाये हुए हैं। सा - यानी साक्षात् और ई यानी ईश्वर - साक्षात् ईश्वर - यानी हमारे साई।

बाबा हिंदू है या यवन या और किसी धर्म के, यह सवाल अलग-अलग धर्म के लोगों को सताया जाता था। श्री साई सत् चरित के अध्याय ७ में हम देखते हैं कि हिंदू और मुसलमान दोनों के त्यौहारों में बाबा उत्साह से भाग लेते थे। हिंदू का त्यौहार रामनवमी में झूला बाँध कर श्री राम का जन्मदिन मनाते थे, साथ ही कथा-कीर्तन भी करवाते थे। दूसरी ओर यवनों को संदल का जुलूस निकालने की अनुज्ञा देते थे। वैसे ही गोपाल काला और ईद भी धूमधाम से मनायी जाती थी। ‘ताजा’ का जुलूस निकलता था। मस्जिद में घंटा - शंखवादन, भजन, अर्घ्य, पादच्यपूजन किया जाता था। फिर कैसे कहा जा सकता है कि वे हिंदू थे या मुसलमान।

बाबा का कोई एक रूप नहीं था। श्री साई सत् चरित में हम पढ़ते हैं कि बाबा कण-कण में समाये हुए हैं। कोयल की कूक में हैं, कल-कल बहते हुए झरनों में हैं। फूलों की खुशबू में हैं। गगन में विहार करने वाले पंखियों में हैं। कुत्ता, बिल्ली सभी जीवों में वास करते हैं। इसके कई उदाहरण हमें श्री साई सत् चरित में पढ़ने को मिलते हैं।

अध्याय १२ में साई की एक अद्भुत लीला दिखाई देती है। एक बार ‘मुले’ नामक व्यक्ति ने बाबा को अपना गुरु मानने से इन्कार किया। वे केवल श्री घोलप जी को ही अपना गुरु मानते थे। जब बाबा की आरती शुरू हुई, तब

अन्य भक्त गण साई की आरती गाने लगे, तो श्री मुले श्री घोलप जी की आरती गाने लगे। क्योंकि, उन्हें गद्दी पर बाबा की जगह श्री घोलप दिखाई देने लगे। उनके अपने गुरु समाधिस्थ होने के बावजूद बाबा के स्थान पर वे दिखाई देने लगे। मस्जिद में उन्हें अपने गुरु के दर्शन होते ही बाबा की महत्ता का एहसास हुआ; क्योंकि बाबा में उनके गुरु घोलप का भी रूप समाया हुआ था।

एक बार एक मामलतदार के साथ उनके ब्राह्मण दोस्त शिर्डी आये। वे रामोपासक थे। बाबा मुस्लिम होने के कारण उन्होंने बाबा को नमन करने से इन्कार कर दिया था। किंतु, मस्जिद में प्रवेश करते ही उन्होंने बाबा के स्थान पर अपने आराध्य दैवत श्री राम के दर्शन किये और क्षण में ही श्री राम की जगह उन्हें पुनः साई दिखाई देने लगे... और उनका अहंकार चूर-चूर हो गया। क्योंकि बाबा में श्री राम का रूप भी समाया हुआ था।

कहते हैं - फ़ानूस बन कर जिसकी हिफ़ाजत दवा करें, वो शमा क्या बुझे जिसे रोशन स्वयं साई करें।

अध्याय २६ में हम देखते हैं कि एक बार बाबा ने पितले को ३ रुपये दिये और कहा कि इसके पहले मैंने तुझे २ रुपये दिये थे। उन पैसों में ये ३ रुपये रख कर रोज़ उनका पूजन करना। चितले सोचते ही रह गये कि मैं तो पहली बार शिर्डी आया; फिर बाबा ने मुझे यह रुपये कब दिये? घर जाकर उन्होंने अपनी माँ से पूछा कि बाबा कौनसे रुपयों की बात कर रहे थे, तब उनकी माँ को याद आया; उन्होंने कहा, “जैसे तुम अब अपने बच्चे को लेकर बाबा के दर्शन करने शिर्डी गये थे, वैसे ही जब तुम छोटे थे तब तुम्हारे पिता तुम्हें लेकर अक्कलकोट गये थे। स्वामी जी के पूजन के पश्चात् तुम्हारे पिता को दो रुपये दिये गये थे; किन्तु प्रसाद के रूप





में मिले उन दो रूपयों का उनके बच्चों ने निष्ठा से पूजन नहीं किया।” इस कहानी ने बाबा की सर्वव्यापकता का, सर्वविद् का, सर्वशक्तिमानता का परिचय दिया।

अध्याय २९ में हम देखते हैं कि स्वार्थी मद्रासी अपनी पत्नी समेत द्रव्यलोभ से बाबा के पास आया था। किन्तु उसकी पत्नी दृढ़ श्रद्धा से बाबा की भक्ति करती थी। बाबा ने उसे जानकीकांत श्री राम के रूप में दर्शन दिये। इसी साई राम के मुखारविंद से शब्द निकलते थे - “अल्ला मालिक”, “सबका मालिक एक है”।

नांदेड के एक वकील श्री पुंडलीकराव अपने मित्रों के साथ गोदावरी के तीर पर राजमहेंद्री में श्री वासुदेवानंद सरस्वती उर्फ टेंबे स्वामी जी से भेंट करने गये। बातचीत के दौरान श्री साई बाबा का नाम निकला। बाबा का नाम सुन कर

स्वामी जी ने उन्हें करबद्ध प्रणाम किया और पुंडलीकराव को एक श्रीफल देकर कहा कि, तुम जाकर मेरे भ्राता श्री साई को प्रणाम कर कहना कि मुझे न भूलें तथा मुझ पर सदा कृपादृष्टि रखें।... पुंडलीकराव जब अन्य मित्रों सहित शिर्डी को रवाना हुए तब यात्रा के बीच में अनवधान से नारियल फोड़ कर खाया गया। पुंडलीकराव को बड़ा दुःख हुआ। पुंडलीकराव की भावना और नारियल के बारे में पहले ही जान चुके श्री साई बाबा बोले, “कोई भी श्रेष्ठ या कनिष्ठ कर्म करते समय अपने को कर्ता न जान कर अभिमान तथा अहंकार से परे होकर ही कार्य करो, तभी तुम्हारी शीघ्रता से प्रगति होगी।”

सांताक्रूज़, मुम्बई के निवासी तथा मुम्बई के उच्च न्यायालय में एडवोकेट श्री बालाराम धुरंधर बाबा की कृपा से श्वास-रोग से मुक्त हो गये।... एक बार गुरुवार के दिन शिर्डी स्थित चावड़ी में आरती के दौरान उन्हें बाबा का मुखमंडल अपने परम इष्ट भगवान् पांडुरंग सरीखा दिखाई दिया। उसके दूसरे दिन काकड़ आरती के समय उन्हें बाबा के मुखमंडल



की प्रभा पुनः भगवान् पांडुरंग के समान दिखाई दी।

... श्री साई सत् चरित में वर्णित इन सत्य घटनाओं से यह साबित होता है कि सभी रूप समाये हैं साई रूप में।

ऐसे सर्वशक्तिमान साई कहते थे - “मी ना देव, ना ईश्वर; मी ना अनल हक्क, ना परमेश्वर; यादे हक्क मी, यादगार बंदा मी, लाचार अल्लाचा.”

बाबा हमें यह सीख देते हैं कि हमें अपने ज्ञान के चक्षु खोल कर लोभ, मद, मत्सर को बाबा की धूनी में डाल देना चाहिए। अपने मन का जुलूस चावड़ी से लेकर मस्जिद की ओर, भक्ति की तरफ़ ले जाना चाहिए।

हमें अपनी जीवन की गाड़ी ‘श्रद्धा’ और ‘सबूरी’ के दो पटरियों पर चलानी है। सब ग्रन्थों का अर्थ है साई।

साई नाथ तेरे हज़ारों हाथ हैं; तू कन्हैया है, तू दुर्गा मैया, सप्तश्रृंगी देवी है, तू शाने मुहम्मद है, तू तो कुदरत है खुदा की साई।

साई! तुममें समाये कई रूप देख कर मैं नतमस्तक होकर कहती हूँ -

**“जहाँ जहाँ सुनू नाम तुम्हारा
झुका वहीं पर शीश है
संसार तुम्हारी श्रद्धा से
भरा हुआ जगदीश है।”**

- श्रीमती अरुणा वि. नायक
सेवा निवृत्त सहायक महाप्रबंधक,
रिज़र्व बैंक, मुम्बई

साई! एक भी तू, अनेक भी तू.. मेरे जीवन का आधार भी तू!!

बाबा! अब तक आपने मुझसे बहुत कुछ लिखवाया। गजलनुमा भजन लिखवाये, अनुवाद करवाया, स्वयं लिखित लेख लिखवाये; किंतु कई दिनों से सोच रहा था कि एक पत्र के रूप में लेख लिखूँ। आज सुबह आपकी पूजा-अर्चना करने के बाद आपकी प्यारी तस्वीर को निहार रहा था, तब जैसे आपने मेरे लिखने के कर्तव्य के प्रति मुझसे आगाह किया। बाबा, आपको शब्दों में बयान करने का साहस किसी में भी नहीं है। श्री साई सत् चरित में परम वंदनीय दाभोलकर जी कहते हैं - मैं तो अपने परम मित्र की जीवनी से भी भली-भाँति परिचित नहीं हूँ और ना ही अपनी प्रकृति से। अवतारों की प्रवृत्ति के वर्णन में वेद भी अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। किसी संत का चरित्र समझने के लिए स्वयं को पहले संत होना नितांत आवश्यक है।

पूरे सागर की स्याही बनाई जाये और आकाश को कागज़ बनाया जाय, तो भी हे साई समर्थ, आपका गुणानुवाद करना मुझ जैसे एक नाचीज़ के लिए सम्भव ही नहीं है। साई! मेरी इस लेखनी में मुझे पूरी तरह सहाय करना। आगे बढ़ूँ, इससे पहले एक बात ज़रूर कहना चाहूँगा कि वे शब्द जो आत्मा को आलोकित करें वे शब्द हीरे-मोती से अधिक कीमती हैं।

बाबा! आपका तो मेरे मन पर एकचक्री अधिकार हो गया है। आपका हर उद्गार एक मंत्र बन गया है। कहाँ से शुरुआत करूँ? मैं तो यही मानता हूँ कि आप सर्वाधार हैं। मेरे लिए तो आप एक भी तू और अनेक भी तू हैं। आप सिद्धेश्वर हैं। आप ही गणपति हैं। यह पूरा संसार साई-वंदना कर रहा है। साई आपकी जय हो!

आप ही निर्धन-निर्बल का सहारा हो। आप ही दीनानाथ हो। आपकी भक्ति, आपके सहारे के बिना मैं अनाथ हूँ। कृपया सहारा देकर मुझे सनाथ कीजिये। मैं आपके द्वार आया हुआ लाचार - बेबस इन्सान हूँ। पूर्ण ब्रह्म भगवान् भी आप हैं। विष्णु पुरुषोत्तम भी आप ही हैं। आप तो निराकार हैं, परन्तु भक्तों के कारण आपने साकार रूप धारण किया। भवसागर में जीवन नैय्या को पार लगाने वाले खेवैया भी तो आप ही हैं।

जो अपने आपको बेसहारा - लाचार समझते हैं, उनके लिए आश्रयदाता आप ही हैं। आप अजन्मा - जगनिर्माता एवं

मृत्युंजय - काल विजेता हैं। सच ही तो कहा है, बाबा!

**“तेरा हाथ जिसने पकड़ा, रहा ना बेसहारा
दरिया में डूब कर भी, उसे मिल गया किनारा
आराम हो या मुश्किल, आशा हो या निराशा
साई दिखा रहा है, अपना ही एक तमाशा
हारा है वो भी जीता, जीता है वो भी हारा”**

साई! ७० साल की उम्र में कई उतार-चढ़ाव आये। गुजरा हुआ कल आप हैं। वर्तमान आप हैं और आने वाला कल भी आप हैं। आपके समक्ष “मैं-तू” का अंतर उचित नहीं है। हाँ, बाबा! जब मैं ७-८ साल का था, तब बड़े भाई साहब के तकिये के पास पहली बार, हाँ, बाबा, पहली बार, आप की छवि देखी। पूछने पर भाई साहब ने बताया कि यह शिर्डी के साई बाबा हैं। ना जाने, क्या कशिश थी आपकी आँखों में, एक ही पल में दिल में उतर गई। आज ७० साल हो गये, बाबा, मेरे दिल में आपके प्रति प्यार आज भी बरकरार है। घर में आपकी प्यारी छवि बसा ली है। हर गुरुवार अभिषेक - पूजा-अर्चना निरंतर होते रहते हैं। इसी कारण मेरा मकान घर बन गया और घर साई मंदिर बन गया है।

संत चूडामणि, अवतारों के अवतार बाबा, संतों के समान गोदावरी नदी भी बड़ी भाग्यशाली है, जिसके तट पर शिर्डी बसी हुई है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम सीता जी संग गोदावरी तट पर आये थे। राम के आगमन ने गोदावरी को पावनता बक्षी। जो गोदावरी राम के समय थी, वैसी आज नहीं है। वक्रत के धारे के संग गोदावरी का भू-भाग बदलता गया। उसमें नया जल आता गया। यही वह नदी है, जिसके तट पर कई सिद्ध पुरुषों ने जन्म लिया। उनमें बाबा, आपका अवतरण अनूठा है। आप ही के कारण शिर्डी तीर्थ क्षेत्र में परिणत हो गई।

बाबा! मेरे हृदय में, मेरे मन में कई अभाव - अवगुण और दोष भरे पडे हैं।

**“नमस्कार साई, सलामें खुदाया
भटकता हुआ मैं, तेरे दर पे आया”**

बस, अब मेरा हाथ पकड़े रहना। जैसा भी हूँ, मेरा

परित्याग मत करना। पारस स्पर्श से लोहा भी कनक बन जाता है; उसी तरह हे साई! मुझ पतित को पावन करके अपने चरण-कमल में जगह दे दीजिये।

मेरे साई! आप पर अनगिनत किताबें लिखी गईं, मगर आपके शताब्दी पर्व पर भी यह कोई नहीं जान सका कि आप किस धर्म के थे! आपके आगे वाणी हार जाती है। आपके आगे तर्क-वितर्क लाचार बन जाते हैं। यद्यपि आप शब्दातीत हैं, फिर भी शब्द बिना आपका वर्णन करना इस दास के लिए असम्भव है।

संत भूमि के आप ज्ञान-दिवाकर हैं। आधि-व्याधि, त्रिविध तापों में जलते लोगों को शीतलता प्रदान करने वाले आप चन्द्र हैं। बाबा, आपने पापी - पुण्यशाली में कभी कोई भेद नहीं किया। आप दिन-रात पापियों की फ़िक्र किया करते हैं।

बाबा! आपके दरबार में हिंदू, मुस्लिम आदि सभी जाति - धर्म के लोग आते हैं। आप सबको प्रेम से गले लगाते हैं। यहाँ तक कि आपका प्रधान सेवक भी कोढ़ी था। जो अहं व इन्द्रियजन्य सुखों का त्याग कर ईश्वर की पनाह में आ जाते हैं और जब उन्हें ईश्वर के साथ अभिन्नता प्राप्त हो जाती है, तब उनकी कोई जाति-पाँति नहीं रह जाती। इसी कोटि में बाबा, आप हैं।

हे करुणासागर! आपने अपने भक्तों के लिए अपार कष्ट सहें। दूसरी तरफ़ आपकी ही कृपा से संततिहीन ने संतति पाई। असाध्य रोग भी मिट गये। हिमालय-सी आपकी ऊँचाई और

सागर-सी आपकी गहराई की कोई भी थाह ना पा सका। जिस तरह हाथी के लिए चींटी का भार शून्य जैसा होता है, उसी तरह आपके आगे जगत् के सभी दुःख वैसे ही हैं। आप थे तो देहधारी, किंतु आपके कर्मों से ईश्वरीयता झलकती थी।

ऐसा कहते हैं कि भगवान् में छः प्रकार के विशेष गुण होते हैं : कीर्ति, श्री, वैराग्य, ज्ञान, ऐश्वर्य और उदारता। बाबा, आपमें ये सभी गुण विद्यमान हैं। हे साई! ब्रह्म के साँचे में शुद्ध आत्मा रूपी द्रव्य ढाला गया और उसमें से ढल कर जो मूर्ति निकली, वही संतों के संत आत्माराम चिर आनंदधाम आप ही हैं।

बाबा, जाने-अनजाने मुझसे कई भूल, कई गुनाह हुए हैं। मेरे मालिक, मैं अपना अहंकार आपके चरणों में रख कर माफ़ी माँगता हूँ।

मुआफ़ करना गुनाह

मेरे ए साई भगवन्,

मुआफ़ करना

तुम्हारा ही नाम लेते-लेते

तुम्हारा ही काम करते-करते

अगर कभी बंद हो जाये

मेरे दिल की धड़कन

मुआफ़ करना।

— साई दास विनय घासवाला

१०/३०२, लाभ रेसिडन्सी,

अटलदरा, वडोदरा - ३९० ०१२, गुजरात.



साई का एक पंछी, मैं...

श्री रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने मनुष्य के कल्याण के लिए जिन शाश्वत सत्यों को अमर वचनों में व्यक्त किया, उनमें से एक है - “बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता”। समस्त संत सान्निध्य और सत्संग हरि कृपा स्वरूप हैं; उनके माध्यम कुछ भी हों, संत सान्निध्य और सत्संग के माध्यम भी असीम हैं। उदाहरण के लिए, यह पत्रिका ‘श्री साई लीला’ भी सत्संग और संत सान्निध्य, अर्थात् साई सान्निध्य का माध्यम है, प्रतिरूप है। हम पर विशेष हरि कृपा है कि हम इस पत्रिका से पाठकों के रूप में जुड़े हैं। इस संदर्भ में मैं विशेष रूप से हरि कृपा पात्र हूँ। प्रतिक्षण साई सान्निध्य इस तथ्य का प्रमाण है। साई संगति में मेरा प्रवेश एक चमत्कार के समान था।

कर्म, भक्ति अथवा ज्ञान के मार्गों में से प्रत्येक व्यक्ति के सत्यानुभव अथवा ईशानुभव का मार्ग बहुधा विधाता द्वारा पूर्वनिर्धारित है। मेरा पूर्वनिर्धारित मार्ग ज्ञान का है, मुख्यतः पुस्तकों के माध्यम से। मेरे लिए जीवन में अन्य मनोकामनाओं की परिणति साधारण रही है। किन्तु, किसी विषय में ज्ञान की मनोकामना उस विषय की उपयुक्त पुस्तकों की अविलम्ब प्राप्ति में सदैव पूर्ण हुई है। और, पुस्तकें इतनी सहजता से, और बहुधा इतने अनापेक्षित सूत्रों से, प्राप्त होती हैं कि जीवन का यह प्रसंग विस्मयकारी है। विषयों में मुझे महापुरुषों व संतों के जीवन चरित व संस्मरण प्रिय हैं। संत चरित तथा संत साहित्य मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं। कालांतर में, पठन के

अतिरिक्त पुस्तक संग्रह भी मेरी रुचियों में शामिल हो गया। यही पुस्तकों का मार्ग मुझे साई बाबा तक ले आया; और वह भी बाबा की ही अनुपम लीला शैली में।

पुस्तकों के सत्संग ने मुझे प्रथम श्री रामकृष्ण परमहंस, और तदुपरांत श्री रमण महर्षि के जीवन वृत्तों व कृतित्वों से अवगत कराया। आधुनिक भारत के इन दो ऋषि-तुल्य संतों ने लोगों के आध्यात्मिक जीवनों को कितनी व्यापकता और गहनता से प्रभावित किया है, यह सर्वविदित है। व्यापकता ऐसी, जो इनके बाद किसी प्रान्त-प्रदेश तक, या पंथ अथवा दीक्षा-प्रणाली से सीमित न रह सकी। गहनता यूँ कि भारत का, और यथार्थ में तो विश्व का भी, आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य इनके बिना अपूर्ण है; और आज का लोक जीवन, परोक्ष अथवा अपरोक्ष से, इनके आध्यात्मिक प्रभाव से ओतप्रोत है, धन्य है।

किन्तु, उस समय तक मुझे यह ज्ञान नहीं था कि आधुनिक भारत के आध्यात्मिक जीवन में क्रांतिकारी प्रभाव के प्रणेता संतों की द्विमूर्ति नहीं, बल्कि त्रिमूर्ति हैं; और इस त्रिमूर्ति में तीसरे, यद्यपि कालक्रमानुसार मध्य में, जो संत हैं वे हैं शिर्डी के साई बाबा। सरल और सरस वाणी में वार्तालाप के माध्यम से भक्तों व आगंतुकों को निःसंशय करने वाले श्री रामकृष्ण परमहंस तथा, बहुधा, मौन आचरण व मौन सत्संग के संत श्री रमण महर्षि से शिर्डी वाले साई बाबा सर्वथा भिन्न थे। साई बाबा अपने व्यक्तित्व से जन-साधारण के सबसे निकट थे। देशज वाणी, साधारण दिनचर्या, जन-भावनाओं का सहज, सोल्लास, आदर-अनुमोदन, आचार-व्यवहार में क्रोध की सीमा तक अनौपचारिकता व साधारण मनुष्य की - सी सहजता, हर काम में गाँव और देश की मिलीजुली संस्कृति के परिवेश के अनुरूप उत्कट प्रतीकात्मकता।...

उस समय, कम से कम मैं, इन तथ्यों से पूर्णतया अनभिज्ञ था। मैं श्री साई बाबा को मात्र एक लोकप्रिय संत के रूप में जानता था, जिनके चित्र आटो रिक्शा, नाई के सैलून, हर तरह की दुकानों, रेस्तोरों व होटलों के काउंटरों, जगह-जगह टंगे कैलेंडरों से लेकर कुछ लोगों के पूजा घरों तक दिख जाते थे। मुझे तब साई बाबा की लोकप्रियता के इस प्रमाण का भी भान नहीं था कि वे ही एकमात्र ऐसे समकालीन संत थे कि जिनकी भक्ति और चमत्कारों के प्रकरण अक्सर फ़िल्मी कथानकों, गीतों व कव्वालियों के भी विषय बन जाया करते हैं। क्योंकि, शायद, साई बाबा सिनेमा हॉल में आगे की पंक्तियों के साधारण दर्शकों के लिए भी उतने ही आकर्षक थे जितने कि पीछे की पंक्तियों के प्रबुद्ध और अभिजात्य जनों के लिए। बाबा के बारे में मेरी जानकारी साधारण जन-जीवन के इन्हीं कुछ पक्षों तक सीमित थी। और इनमें बौद्धिकता की वह

सम्भावनाएँ भी नगण्य प्रतीत होती थीं, जिनका मैं ग्राहक था।

‘श्री साई सत् चरित’ के श्री एन्. वी. गुणाजी कृत अंग्रेजी अनुवाद में, २८वें अध्याय में मैंने यूँ पढ़ा :-

“Sai Baba often said that let His man (devotee) be at any distance, a thousand koss away from Him, he will be drawn to Shirdi like a sparrow with a thread tied to its feet.”

तदुपरांत, इस अध्याय में तीन ऐसी ‘चिड़ियों’ का वर्णन है, जिन्हें साई बाबा शिर्डी ‘खींच’ लाये थे - लाला लक्ष्मीचंद, बुरहानपुर की महिला व मेघा।

‘श्री साई सत् चरित’ किताब मुझे कालांतर में, लगभग इन्हीं ‘चिड़ियों’ के समान, बड़े चमत्कारी ढंग से प्राप्त हुई; और इस अध्याय के पठन के पश्चात् साई कृपा के एक और तथ्य का रहस्य चित्त में उजागर हुआ। यह तथ्य यूँ है कि साई बाबा अपने कृपा पात्रों को पाँव में बंधी डोरी से न सिर्फ वास्तविक या भौगोलिक शिर्डी में ‘खींच’ लाते हैं, बल्कि कभी-कभी, उससे पहले, हृदय में स्थित, लेकिन अब तक अज्ञात ‘शिर्डी’ में भी ‘खींच’ लाते हैं। इस तथ्य का मैं स्वयं साक्षी हूँ, प्रथम दृष्टा हूँ, स्वयं अपने अनुभव से, स्वयं अपने संदर्भ में।...

हृदय की शिर्डी की तरफ प्रस्थान के रूप में, आगे चल कर, ‘श्री साई सत् चरित’ किताब मुझे चमत्कार स्वरूप प्राप्त हुई। पर, उसकी चमत्कारी प्राप्ति की भूमि बनी एक और बड़े चमत्कार से, जो आज भी हृदय में यथावत - चमत्कार स्वरूप - विद्यमान है।

जीवन की उस अवधि में, जब शिर्डी साई बाबा नामक संत से कुछ लेना-देना नहीं था, एक रात मुझे स्वप्न में साई बाबा दिखाई दिये। यह बड़ा अजीब-सा, किन्तु बड़ा साफ़ और स्पष्ट स्वप्न था। मैंने देखा कि एक बड़े-से हॉल-नुमा कक्ष में साई बाबा एक परिचित-से मूर्ति रूप में विद्यमान हैं। साई बाबा किसी पत्थर की शिला जैसी चीज पर आराम से एक पैर को दूसरे पर रख बैठे हैं, मुख पर हलकी-सी मुस्कान लिए। हॉल में, उनके सामने, तरह-तरह के जीव मौजूद हैं... मानव काया और पशु-मुखाकृति वाले या पशु काया और मानव-मुखाकृति से मंडिता। ये जीव विभिन्न मुद्राओं में थे - बैठे, लेटे, जागृत, सुप्त, किन्तु परस्पर पृथक और प्रत्येक अपने में मगन या त्रस्त...

यह स्वप्न इतना जीवंत और ज्वलंत था कि आज भी चित्त में अमिट रूप से अंकित है। और वह कोई भोर का सपना नहीं था। यह रात का, गहरी निद्रा का स्वप्न था। क्योंकि,

भोर होते-होते मैं स्वप्न का सजीव आभास लिए जाग चुका था। यह बाद में समझ पाया कि स्वप्न में आई छवि बाबा की समाधि मंदिर वाली प्रतिमा की थी। इस स्वप्न की चर्चा मैंने पत्नी से की, और बात आई-गई हो गई।

कुछ दिनों के पश्चात्, एक पड़ोसी दंपती ने जब अपनी साईं भक्ति और प्रति वर्ष के अपने शिर्डी यात्रा के नियम की चर्चा पत्नी से की, तो पत्नी ने सहज ही उनसे मेरे स्वप्न का उल्लेख किया। साईं स्वप्न की बात सुन कर वह भक्त दंपती भावविभोर हो उठा, और उस स्वप्न के महत्त्व और स्वप्नदृष्टा होने के मेरे परम सौभाग्य की बात पत्नी को समझायी। उन कृपालु पति-पत्नी ने हमें शिर्डी का प्रसाद और एक छोटी-सी साईं प्रतिमा भी दी। यह प्रतिमा स्वप्न वाली साईं छवि, अथवा समाधि मंदिर वाली साईं प्रतिमा का ही प्रतिरूप थी। साईं बाबा का यँ हमारे घर में प्रवेश हुआ।

साईं स्वप्न के साधारण-से लगने वाले वाक्ये के एक अत्यन्त असाधारण प्रसंग होने की बात पर मैं विस्मित था। उस भक्त दंपती की बातों का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा, और अपनी स्वाभाविक वृत्ति से मुझमें साईं बाबा की जीवनी पढ़ने की इच्छा जागृत हुई। उस भक्त दंपती से मुझे साईं साहित्य की कोई जानकारी नहीं मिली; और वह इंटरनेट का जमाना भी नहीं था कि मैं साईं बाबा पर पुस्तकें खोज और खरीद लाता। किन्तु, इस संदर्भ में वही हुआ, जो मेरा प्रारब्ध है - मेरे लिए इच्छित विषय की पुस्तकों का प्रबंध अनायास ही हो गया; पर इस बार अभूतपूर्व से।

मेरे इन प्रकरणों से बिलकुल अनभिज्ञ, अकस्मात् शिर्डी यात्रा पर गये मेरे एक मित्र ने वहाँ से 'श्री साईं सत् चरित' के उक्त अंग्रेजी अनुवाद की एक प्रति, एक अन्य सहयोगी के माध्यम से, मेरे लिए भेजी, उस पर यँ लिख कर -

From Sai Baba of Shirdi
To Deepak Dube
Through J Kalyan Kumar

इस प्रकार, वस्तुतः साईं कृपा से, 'श्री साईं सत् चरित' से साईं साहित्य में मेरा प्रवेश हुआ। 'श्री साईं सत् चरित' की यह प्रति मेरे पुस्तक संग्रह में प्रविशिष्ट है। लेकिन, साईं साहित्य अध्ययन व संग्रह का यह शुभारम्भ मात्र था। मुझे स्मरण है कि इसके पश्चात्, अपने शहर की प्रमुख पुस्तकों की दुकान में, जहाँ मैं उन दिनों अक्सर जाया करता था, मुझे श्रीयुत एम्. वी. कामथ व श्रीयुत वी. बी. खेर कृत 'Sai Baba of Shirdi

- A Unique Saint' मिली। यह पुस्तक वास्तव में एक शोध अध्ययन है, जिसे दो तटस्थ, किन्तु सहृदय शोधार्थियों ने लिखा है। इसके पश्चात्, शायद इसी पुस्तक में उसके संदर्भित उल्लेख से, मुझे प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक आर्थर ओसबर्न की चर्चित पुस्तक 'The Incredible Sai Baba' का पता चला। मेरे शहर में यह किताब उपलब्ध नहीं थी। मैंने दिल्ली जा रहे अपने एक सहयोगी से यह पुस्तक वहाँ से ले आने का आग्रह किया। उनके पास समय नहीं था; मगर पुस्तक की एक पुरानी-सी प्रति उन्हें आसानी से होटल के निकट की एक किताब की दुकान से मिल गई, और अंततः मुझे प्राप्त हुई। साईं साहित्य की पुस्तकों का सिलसिला मेरे साथ अभी तक अबाधित बना हुआ है।

इस क्रम में एक पुस्तक का यहाँ विशेष उल्लेख करना मैं आवश्यक समझता हूँ। यह पुस्तक है, सुश्री जया वाही कृत 'Sai Baba Is Still Alive'। साईं भक्ति की यह अत्यन्त भावपूर्ण व रोचक पुस्तक है। इस अत्यन्त पठनीय पुस्तक को 'श्री साईं सत् चरित' का समकालीन संस्करण कह देने में मुझे कोई दुविधा नहीं। सचमुच, साईं अब भी जीवित हैं। अपरोक्ष अनुभवों से हृदय में यह आभास सदा विद्यमान है। और, भक्तों को उनके भावुक क्षणों में दर्शन देने की उनकी पद्धति भी पूर्ववत् जारी है। स्मरण होते ही मुझे बाबा के दर्शन हो जाते हैं, इस आभास के साथ कि दर्शन मेरी इच्छा के फलस्वरूप हुआ है। और, दर्शन के माध्यमों की विविधता भी अनोखी है। चित्रों में दर्शन तो सामान्य है, पर कभी-कभी कहीं लिखा हुआ साईं नाम ही दिख कर दर्शन का माध्यम हो जाता है। अक्सर, मन में साईं भाव आते ही, कुछ नहीं तो साईं नाम वाला कोई साइन बोर्ड ही नज़र आ जाता है। कुछ दिनों पहले, नौकरी में स्थानान्तरण के अवसर पर, प्रस्थान से पूर्व, अटैची के लिए जो छोटा ताला पत्नी बाज़ार से खरीद कर लाई, उसकी दप्ती की डिबिया पर साईं बाबा का मुख-मंडल अंकित था!

मुझ पर साईं कृपा जिन अनेक रूपों में फलीभूत हुई, उनमें साहित्य सेवा भी एक है। मुझमें साहित्यानुराग के साथ-साथ रचनात्मकता के अप्रस्फुटित भाव भी विद्यमान थे। सुसंयोग है कि साईं संसर्ग के बाद हिंदी में प्रारंभिक अतुकांत कविता से मैं दोहों, और तत्पश्चात् छंदोबद्ध उर्दू कविता, विशेषकर ग़ज़ल में प्रविष्ट हुआ, और इस क्षेत्र में कुछ गति अर्जित की।

- दीपक दुबे 'दानिश'

८३९, मालवीय नगर, इलाहाबाद.



Shri Gurupournima Festival 2018



The annual Shri Gurupournima festival was held this year too by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi from Thursday, July 26, 2018 to Saturday, July 28, amidst the chanting



Shirdi News

Mohan Yadav

* Public Relations Officer *

Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi)

- Translated from Marathi into English by

Vishwarath Nayar

E-mail : vishwarathnayar@gmail.com

of Shri Sai Baba's name in an enthusiastic and auspicious atmosphere. Lakhs of devout devotees availed the Darshan of the Samadhi of Shri Sai Baba on the main day of Gurupournima.

The Guru-shishya (teacher-student tradition is very ancient. Ashadhi Pournima is celebrated as Gurupournima to express gratitude to our teachers. This Pournima is also known as Vyas worship (day). The tradition of celebrating Gurupournima collectively in Shirdi commenced from the period of Shri Sai Baba's incarnation. Therefore, this day has extraordinary significance. Innumerable devotees with faith in Shri Sai Baba come to Shirdi on Gurupournima every year and take the Darshan of Shri Sai Baba's Samadhi and participate in the festival.

About 30 palkhis (palanquins) arrived in Shirdi from all over Maharashtra and other states for the Gurupournima festival. Arrangement for the accommodation of the padayatris accompanying these palkhis was made in the Shri Sai Dharamshala.

Shri Sai Baba's Kakad Aarati was done on

First Day, Thursday, July 26, 2018



Thursday, July 26, the first day of the festival

at 4.30 a.m. After that at 5 a.m. a Shobhayatra

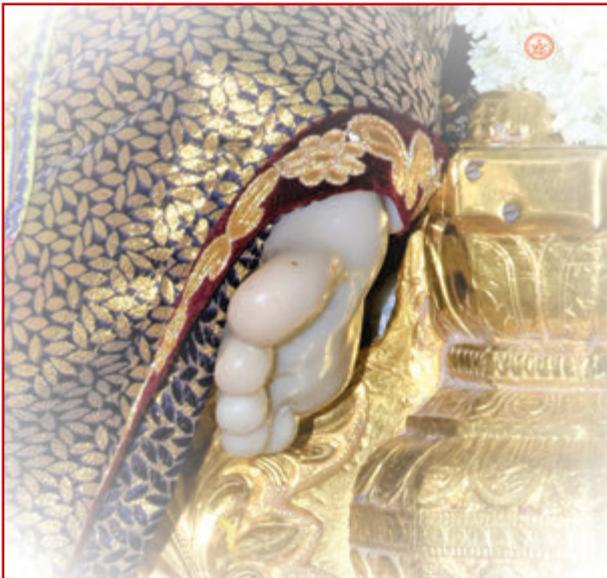


(grand procession) of Shri Sai Baba's Photo, the Shri Sai Sat Charita Grantha (the holy book on Shri Sai Baba) and the Veena was taken out. Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan with the Veena, Advocate Mohan Jaykar, Trustee and Sri Dhananjay Nikam, Deputy Collector with the Shri Sai Baba's Photo and Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee with the holy book Shri Sai Sat Charita participated in the procession. Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collector, Sou. Priya Kadam, Sou. Saraswati Wakchaure, Sou. Smita Jaykar, villagers and Sai devotees were present on the occasion in large numbers.

After the procession reached Dwarkamai, the non-stop reading of the holy book Shri Sai Sat Charita commenced with Adv. Mohan Jaykar, Sansthan's Trustee, reading the first chapter, Sou. Saraswati Wakchaure, reading the second chapter, Sri Ganesh Kawale, reading the third chapter, Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Municipal Council, reading the fourth chapter and Sou. Priya Kadam, reading the fifth chapter.

Shri Sai Baba was given the holy bath at 5.20 a.m. The Padyapooja (worship of the Holy Feet) of Shri Sai Baba in the Samadhi Mandir was done at 6.30 a.m. by Sri Chandrashekhar Kadam, Sansthan's Vice Chairman and his wife Sou. Priya Kadam. Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan and his wife Sou. Nalini Haware availed the Darshan of Shri Sai Baba's Samadhi in the morning.

The Madhyam (mid-day) Aarati was done at 12.30 p.m.



A kirtan programme was presented by H.B.P. Sri Charudatta Govindswamy Aaphale (Pune) was held from 4 p.m. to 6 p.m.

'Bhajan Sandhya' programme by Sri Vishwanath Ojha (Shrirampur) was held on the stage in the Shri Sai Baba Samadhi Shatabdi Mandap beside the Hanuman temple from 7.30 p.m. to 10.30 p.m.

At 9.15 p.m. a grand procession of Shri Sai Baba's Palkhi was taken out through the village. Troupes of various musical instruments like the cymbals, lezims and drums registered their presence in the procession. Also the officers of the Sansthan, employees, villagers and Sai devotees participated in large numbers in the procession. Since the non-stop reading of Shri Sai Sat Chritha was on for the festival, Dwarkamai was kept open throughout the night.

On Friday, July 27, the main day of the festival, Shri Sai Baba's Kakad Aarati was done at 4.30 a.m. After the Aarati, at 5 a.m. the non-stop reading of the holy book Shri Sai Sat Charita, concluded. After that the grand procession of Shri Sai Baba's Photo, the Shri Sai Sat Charita Grantha and the Veena was taken out from Dwarkamai. Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan and Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee with the

Main Day, Friday, July 27, 2018



Shri Sai Baba's Photo, Sri Bipindada Kolhe, Trustee with the Veena and Sou. Yogitai





Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council with the holy book Shri Sai Sat Charita participated in the Shobhayatra. Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Adv. Mohan Jaykar, Trustee, Sri Dhananjay Kadam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Sou. Nalini Haware, Sou. Saraswati Wakchaure, Sou. Smita Jaykar, villagers and Sai devotees participated in large numbers on this occasion.

After the Shobhayatra, at 5.20 a.m. the holy bath of Shri Sai Baba was done and the Aarati 'Shirdi majhe Pandharpur' was done. At 6.30 a.m. the Padyapooja of Shri Sai Baba in the Samadhi Mandir was done by Dr. Suresh

Haware, Sansthan's Chairman and his wife Sou. Nalini Haware.

At 7.30 a.m. the ritual worship of the Flag of the Shri Sai Baba Samadhi Centenary Pillar in the Lendibaug was performed by the Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware and his wife Sou. Nalini Haware and then the Flag was replaced. Sri Chandrashekar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri Bhausaheb Wakchaure, Sri Bipindada Kolhe and Adv. Mohan Jaykar, Trustees and Sou. Yogitaitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Sou. Saraswati Wakchaure and Sou. Smita Jaykar were among the dignitaries present on the occasion.

The Mid-day Aarati was done at 12.30 p.m.

A kirtan programme was presented by H.B.P. Sri Charudatta Govindswamy Aaphale from 4 p.m. to 6 p.m.

At 5 p.m. a grand procession of Shri Sai Baba's golden chariot was taken out through the village. Sai devotees, villagers and musical band troupes participated in this procession in large numbers.

Doop Aarati of Shri Sai Baba was done at





7 p.m.

A flute rendition programme was presented by Pandit Sri Hariprasad Chaurasia (Mumbai) and Pandit Sri Vijay Ghate (Pune) from 7.30 p.m. to 10.30 p.m. on the stage in the Shri Sai Baba Samadhi Centenary Mandap beside the Hanuman temple.

Sri Deepak Kesarkar, Minister of State for Home (Rural), Finance and Planning, Govt. of



Maharashtra availed the Darshan of Shri Sai Baba's Samadhi on the occasion of the main day of the festival. Due to the lunar eclipse on the main day of the festival the Samadhi Mandir was kept closed after the Shej Aarati of Shri Sai Baba.

On Saturday, July 28, the concluding day of the festival, Shri Sai Baba was given the holy bath at 4 a.m. The Chief Executive Officer of the

Concluding Day, Saturday, July 28, 2018



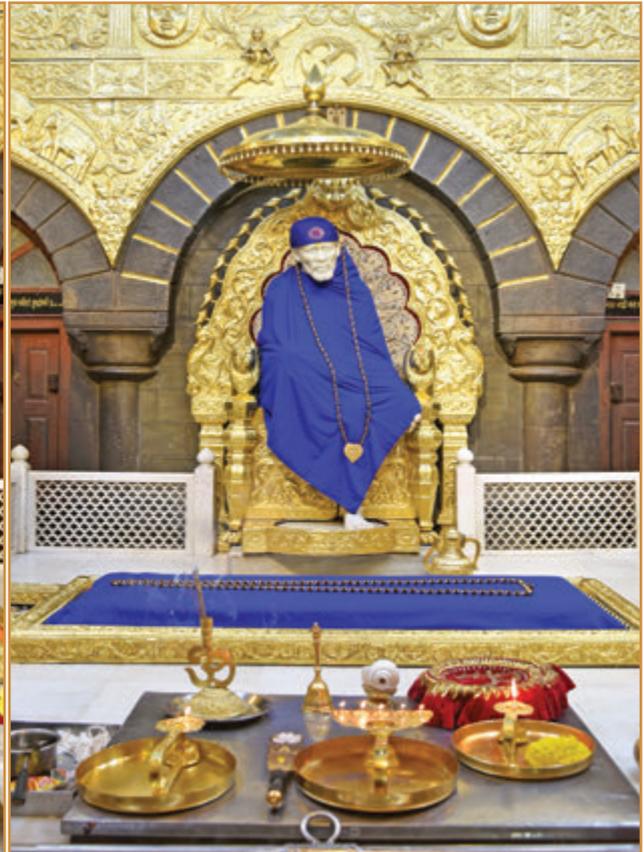


Sansthan Smt. Rubal Agarwal and Sri Prakher Agarwal performed the Padyapooja of Shri Sai Baba at 6 a.m.

At 6.15 a.m. the Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam and his wife Sou. Manali Nikam performed the Rudra Abhishek worship at Gurusthan.

Gopalkala kirtan programme was held at 10.30 a.m.

As per the tradition every year, after the Gopalkala kirtan, the Dahihandi (pot of yoghurt) was broken in the Sai Samadhi temple at 12 noon. Sai devotees, villagers, officers and employees of the Sansthan were present in



large numbers on the occasion. After that the Madhyan Aarati was done at 12.10 p.m.

Shri Sai Baba's Dhoop Aarati was done at 7 p.m. A Sai Bhajan programme was presented from 7.30 p.m. to 9 p.m. by Sri Sudhanshu Lokegaonkar (Shirdi), from 9 p.m. to 9.45 p.m. Sri Anchal Sharma (Raipur) presented a Sai Bhajan programme and Sri Madan Chauhan (Raipur) presented a Sai Bhajan programme from 9.45 p.m. to 10.30 p.m. on the stage in the Shri Sai Baba Samadhi Centenary Mandap beside the Hanuman temple. The audience spontaneously lauded all these programmes. All the artistes, who participated in the programmes





were felicitated on behalf of the Sansthan.

Members of Sairaj Decorators (Mumbai), who did the attractive electrical lighting in the temple and the premises during the festival and philanthropic Sai devotee from Nasik Sri Anand Sonavane, who did the enchanting floral decoration were felicitated on behalf of the Sansthan.

Sai devotees were served free prasad meal in the Shri Sai Prasadalya during all the three days of the festival from the generous donations made by the philanthropic Sai devotees. About 2.5 lakh devout availed the

free prasad meal during the festival. About 3 lakh free bundi packets were distributed to Sai devotees in the Darshan queue. And 2.5 lakh laddoo packets were sold.

First Aid Center facility was provided in the temple premises, Darshan line, in the Shri Sai Baba Samadhi Centenary Mandap beside the Hanuman temple, Sai Ashram and Shri Sai Prasadalya for the convenience of devotees during the festival. Medical teams were stationed in two shifts in the Darshan queue and ambulances were kept in readiness for emergency service in the temple premises, Shri Sai Prasadalya and Sai Ashram.

Deputy Collectors, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Executive Officer in charge Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Superintendent of Police Sri Anand Bhoite, all the administrative officers, departmental heads and employees under the guidance of the Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware, Vice Chairman Sri Chandrashekhar Kadam, Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal and other members of the Board took special efforts for the successful conduct of the festival.



Saturday, July 21, 2018 : Marathi cine actor Sri Sagar Karande with his wife, flanked by Sri Dhananjay Nikam, Deputy Collector of the Sansthan...



Marathi cine actor Sri Sagar Karande with his wife being felicitated by Sri Dhananjay Nikam, Deputy Collector of the Sansthan after the Darshan...



Saturday, August 4, 2018 : Sri Sudhir Mungantiwar, Minister of Finance and Planning, Forests, Govt. of Maharashtra...



Monday, August 6, 2018 : Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan felicitating Sri Gulabrao Patil, Minister of State for Co-operation, Govt. of Maharashtra after the Darshan...



A philanthropic Sai devotee from Delhi offered a golden garland weighing 1500 grammes costing Rs. 41,94,000/- at the Feet of Shri Sai Baba. Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan receiving the garland from the Sai devotee. Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collector of the Sansthan, Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer in charge, Sri Rajendra Jagtap, Head of the Temple department were present on the occasion...



On behalf of the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi the Flag Hoisting on the occasion of Independence Day on August 15, 2018 was done by Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan.

Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee of the Sansthan, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj

Ghode Patil, Deputy Collectors, Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer in charge, Sri Anand Bhoite, Superintendent of Police, all administrative officers, employees and students and teaching staff of the educational complex were present on the occasion.

An impressive parade was presented by the Sansthan's security department, fire and safety, security agencies and students of the educational complex. After that, 17 meritorious students from all schools in Shirdi who ranked 1st, 2nd and 3rd in the X standard examination were awarded the Sri D. M. Sukthankar prize – March 2018 and 9 meritorious students of the Sansthan's educational complex who ranked 1st, 2nd and 3rd in the XII standard examination were awarded the late Lahanubai Amrutrao Gondkar prize by Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan and dignitaries. Similarly the dignitaries felicitated the students of Shri Sai Baba English Medium School, who succeeded in the state level pre-secondary (standards V and VIII) scholarship examinations.

Sri Arpit Soni, philanthropic Sai devotee from Surat donated a fire bike (2-wheeler) costing Rs. 8 lakh to the Sansthan and handed over the keys of that bike to the Sansthan's Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal, Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure and dignitaries. This fire bike was made by Sri Soni, using his own technology. This bike will facilitate easy mobility through crowded and narrow lanes to reach the locations of fire.

Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan and Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee of the Sansthan delivered pertinent speech on the occasion. The programme was anchored by Prof. Rajendra Kohkade, Prof. Vasant Wani, Prof. Vikas Patil and Prof. Sou. Vaishali Deshmukh.



The Reading of Shri Sai Sat Charita in Shravan



The Parayan (reading) function of Shri Sai Sat Charita organized by Shree Saibaba

Sansthan Trust, Shirdi in co-operation with Natya Rasik Manch, Shirdi and the villagers





of Shirdi from Thursday, August 16, 2018 to Thursday, August 23, 2018 concluded in an air of devotion and piety. About 9000 female and 3500 male devotees, totaling 12,500 devotees, participated in the reading.

The reading function is organised every year in the month of Shravan. The Centenary of Shri Sai Baba's Samadhi being celebrated this year, this reading has special importance.



On Thursday, August 16, 2018, in the morning, the Shri Sai Sat Charita Grantha (holy book) was taken out in a chariot in a shobhayatra with the sounding of musical instruments from the Samadhi Mandir via Hanuman temple and Dwarkamai till the Parayan mandap. Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan and Sri Dhananjay Nikam, Deputy Collector carrying the Photo of Shri Sai Baba, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan with the Kalash (holy pitcher) on her head, Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee of the Sansthan carrying the Veena and Sou. Yogitai Shelke, Trustee of the Sansthan and Chairperson of the Shirdi Municipal Council with the Grantha participated in the shobhayatra. Sou. Nalini Haware, Sou. Saraswati Wakchaure, villagers and Sai devotees in large numbers were present on the occasion...

After the shobhayatra reached the Parayan mandap, the Parayan commenced after the dignitaries performed the worship of the Grantha and the Kalash...

Eight chapters of Shri Sai Sat Charita were read daily from 7 a.m. to 11.30 a.m.

As appealed, readers brought their own Grantha, coconut and mat for the Parayan. Desirous devotees registered their names and offered the service of playing the Veena non-stop for two hours.

On August 16, 2018, the first day, Shriram Mahila Bhajani Mandal (Goa) presented a programme of lyrics and devotional songs from 4 p.m. to 6 p.m. and Sri Raviraj Naseri (Mumbai) presented a programme of Sai bhajans from 7.30 p.m. to 10 p.m. on the Parayan mandap stage in front of Shri Sai Prasadalya.

But, on Thursday, August 16, 2018, the news of the demise of the former Prime Minister of India, Sri Atal Bihari Vajpayee came. The Government declared a national mourning for seven days on his passing away and ordered that no cultural programmes should be held during the period. Hence the cultural programmes organised in the further days of the reading function were cancelled.

Under the guidance of Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer and all Trustees, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer in charge, Sri Anand Bhoite, Deputy Superintendent of Police, all administrative officers, all head of departments, office bearers of Natya Rasik Sanch, all villagers and all employees put in efforts for the successful conduct of the Shri Sai Sat Charita Parayan function.



... Do the recitation with a pure heart and devotion, completing it in one day or two days or three days. Sai Narayan will be gratified. Otherwise, complete it easily in a week and you will have immense good fortune on a continuing basis. Sai will fulfil the heart's desire and the fear of the worldly existence will be destroyed. Begin the recitation on a Thursday, in the early morning after a bath. Sit on your asan (seat for prayer), after quickly completing your usual routine... During the seven days, read the first eight chapters on the first day, then the next eight on the second day, followed by next seven on the third day. Then eight, six, eight and seven chapters on the following four days, and only 'Avatarnika' on the eighth day...

- Shri Sai Sat Charita



Wednesday, August 22, 2018 : The Sarsanchalak of Rashtriya Swayamsevak Sangh Sri Mohan Bhagwat with the Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware, Vice Chairman Sri Chandrashekhar Kadam, Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal, Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure, Member of Parliament Sri Sadashiv Lokhande, Legislator Sou. Snehalatatai Kolhe, Deputy Collectors Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil...



The Sarsanchalak of Rashtriya Swayamsevak Sangh Sri Mohan Bhagwat was felicitated by Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer and Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee after the Darshan; flanked by Sri Sadashiv Lokhande, Member of Parliament, Sou. Snehalatatai Kolhe, Legislator and Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors of the Sansthan...

Remarks by Sri Mohan Bhagwat, the Sarsanchalak of Rashtriya Swayamsevak Sangh in the Remarks book - "It is very heartening that by being in the center of social life, the Shree Saibaba Sansthan, Shirdi has, through service, gradually started touching all aspects of concern of the common social life. Similarly, the practical following of Shri Sai Baba's message of 'Shraddha, Saburi and Sabka Malik Ek' enhances devotion and service through experiences encompassing the broad social spectrum. Hearty congratulations to all the Trustees and volunteers and best wishes for the future."



Wednesday, August 22, 2018 : Sri Haribhau Bagade, Speaker of Maharashtra State Legislative Assembly was felicitated by Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee, Sou. Shalinitai Vikhe Patil, Chairperson of Ahmednagar Zilla Parishad and Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors...

Sri Haribhau Bagade, Speaker of Maharashtra State Legislative Assembly was felicitated by Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan and Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee; flanked by Sou. Shalinitai Vikhe Patil, Chairperson of Ahmednagar Zilla Parishad and Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors...



The worship of the 17 vehicles purchased by the Sansthan - fifteen 51-seater buses of Eicher company costing Rs. 22,18,894 each and two cars of the Bolero class of Mahindra company costing Rs. 7,62,912 each, was performed by Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan and Sou. Nalini Haware, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee, Sou. Yogitaitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors and Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer in charge...





Sansthan's Rs. 5 crores Aid to the Flood-affected in Kerala

On behalf of the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, the Sansthan's Managing Committee decided at its meeting to contribute Rs. 5 crores fund for the flood-affected in Kerala.

Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri Bhasaheb Wakchaure, Adv. Mohan Jaykar and Sri Bipindada Kolhe,

Trustees, Sou. Yogitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors and Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer in charge were present at the meeting, presided by Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan.

Informing about this decision at the meeting, Dr. Haware stated that 'floods caused by incessant rains have caused havoc in Kerala. More than 325 lives were lost in these floods. Several villages have been devastated. Lakhs of residents have been rendered homeless. Life of people in that region has been severely shattered. This natural calamity being very grim, understanding that it is our national duty to help the disaster-affected, the Sansthan's Managing Committee decided to contribute Rs. 5 crores on behalf of the people of Shirdi to the disaster-affected in Kerala. After seeking the approval of the Law and Judiciary department of Maharashtra State, the cheque for the aid will be handed over to Sri Devendra Fadnavis, Chief Minister of Maharashtra State.'



Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri Bipindada Kolhe and Sri Bhasaheb Wakchaure, Trustees, Sou. Yogitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors and Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer in charge handing over the cheque of Rs. 75 lakh on behalf of the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi to Mahant Ramgiri Maharaj, Sarala Bet for the 171st Akhand Harinam Saptah of Sadguru Sri Gagangiriji Maharaj...

“2nd Green Revolution Possible with Zero - budget Organic Farming,” Dr. Rajeev Kumar, Vice Chairman, NITI Ayog

“Padma Sri awardee Sri Subhash Palekar is creating awareness among farmers all over the country through zero - budget organic (spiritual) farming training camps. There being a need for a 2nd green revolution in the agricultural sector, this revolution is possible through zero - budget organic farming,” expressed Dr. Rajeev Kumar, Vice Chairman of NITI Ayog.

The zero - budget organic farming training camp organised by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, on the occasion of the Shri Sai Baba Samadhi Centenary Mahotsav was inaugurated by Dr. Rajeev Kumar, Vice

Chairman of NITI Ayog. Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan presided at the function. Padma Sri awardee Sri Subhash Palekar, the mentor and renowned speaker at the camp, Sri T. Vijaykumar, agriculture advisor from Andhra Pradesh, Sou. Snehalatatai Kolhe, Legislator, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee, Sou. Yogitaitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sou. Nalini Haware, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy





Executive Officer in charge and farmers in large numbers were present on the occasion.

Dr. Rajeev Kumar stated on the occasion that 'the nation needs a 2nd green revolution; the question is how is it to be done; zero - budget farming is the best alternative for that. This subject is closely linked to the environment. We will have to make changes in the traditional methods. The objective of the Prime Minister of the nation, Sri Narendra Modi, is to double the income of the farmers. This objective can be accomplished through Subhashji Palekar's zero - budget organic farming. Farmers in several states having started this zero - budget organic farming, this revolution in farming is commencing in Shirdi. Today the use of chemical fertilisers causing immense damage to farms in Punjab, it is also damaging human lives. The consumption of toxic food is resulting in an increasing incidence of cancer ailments. 3 1/2 to 4 crore devotees come to Shirdi annually for the Darshan of Shri Sai Baba, informative pamphlets should be distributed to them to let them know about the zero - budget organic farming.'

Informing about the zero - budget organic farming Padma Sri awardee Sri Subhash Palekar stated that 'the fertility of agricultural lands is reducing due to the use of chemical fertilisers and pesticides in the present day traditional farming. Ailments like cancer and diabetes are on the rise. There is a need to provide proper guidance about this by agricultural scientists. We have triggered a people's movement about organic farming by creating awareness among farmers about zero - budget organic farming in the states of Andhra Pradesh, Madhya Pradesh, Himachal Pradesh, Karnataka and Meghalaya.



About 5 lakh farmers in Andhra Pradesh having participated in this, there will be zero - budget organic farming in the whole state in the coming 3 years. For this the state government too has participated in this movement there. Discussion about this movement has taken place in the meeting of NITI Ayog. We do not want loan waiver, we need freedom from loans. In zero - budget organic farming the cost of production being nil, the income will double. By not availing a loan, the need for repaying will not arise at all. This is the only alternative to stop the suicide of farmers'.

Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, in his presidential address stated that 'farmers from the nook and corner of the whole country having come to the camp organised on the occasion of the Shri Sai Baba Samadhi Centenary Mahotsav, the number of the youth among them is impressive. The life of farmers is very harsh. With Subhashji Palekar having started the historical work through zero - budget organic farming, if the cost of farming through organic farming is nil, there will be no loss. Hence there is a need to encourage this movement. Therefore, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi will organize zero - budget organic farming training camp every year. With Sri Chandrakantdada Patil, the Revenue, Agriculture and PWD Minister expected to visit this camp, this movement is certain to get encouragement from the state government through his visit. With more than the expected number of farmers attending the camp, nearly 5500 farmers have participated. All these delegates will be provided all due facilities by the Shree Saibaba Sansthan Trust Shirdi.

Pertinent address were delivered by Sri T. Vijaykumar, agriculture advisor from Andhra Pradesh, Sou. Snehalatai Kolhe, Legislator and Sou. Vinita Katkade.

Sri Madhavrao Deshmukh delivered the introductory address at the function and the vote of thanks was presented by Sri Chandrashekhar

Kadam, Vice Chairman of the Sansthan.

Sri Ashutosh Kale, Chairman of the Kopergaon Sugar Factory, Sri Ashok Rohmare and Sri Walmikrao Katkade were among the dignitaries present at the programme.



“Organic Farming a Significant Alternative for All-round Development of Farming,” Sri Chandrakant Patil, Minister of Revenue, Agriculture, Relief and Rehabilitation, PWD, Govt. of Maharashtra

“Zero - budget organic farming and toxic-free farming are significant alternatives to

resolve the day by day increasing issues in the agricultural sector and reducing the escalating

cost in farming,” expressed Sri Chandrakant Patil, State Minister of Revenue, Agriculture, Relief and Rehabilitation, Public Works Department.

Sri Patil was addressing at the ‘zero - budget organic (spiritual) farming and toxic-free farming’ training camp organised by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Sri Subhash Palekar, Padma Sri awardee, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors and Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer in charge graced the occasion.

Sri Patil, the Revenue Minister stated that ‘Dr. Suresh Haware informed me about the camp and requested me to be present. Today morning Dr. Suresh Haware, Padma Sri awardee Sri Subhash Palekar and me together discussed and understood the subject of zero - budget organic farming. I got to see the passion of Padma Sri awardee Sri Subhash Palekar (about this).

Farming being an important centre - point of development, is today eclipsed with various issues. The government is committed to resolving these issues. It is essential to create maximum employment in farming sector. The state government is committed to this. Farmers in various places in the country are doing innovative experiments. This is a matter of pride from the viewpoint of the nation and the state. It is necessary to improve the reputation of the

Agriculture department, officers and employees of the Agriculture department should pay minute attention to provide latest information about the various schemes of the Agriculture department and to reach benefits to the farmers. The state government is making effort to provide various training to the officers for this.

Creating a liking for farming among the youth, there is a need for youth to shift to farming. Today the fertility of the land is deteriorating due to the huge expenditure for various chemical fertilisers and medicines in farming. Therefore organic farming is the best alternative for getting maximum output with minimum expenses and to retain the fertility of the land. Padma Sri awardee Sri Subhash Palekar is working on this as an advisor in five states. With the spread of zero - budget organic farming, farmers will become debt-free. Organizing a meeting with the Chief Minister of the state, a discussion on zero - budget farming will be held. The government having implemented various agricultural schemes in the last four years, farmers have availed these schemes. Being a farmer myself, I am aware of the problems of the farmers. Today some districts in Maharashtra are facing scarcity.’ Stating that order has been issued to conduct the panchnama of the harvest in these places, he stressed that the state government is committed to the all-round development of the farmers.

Sri Madhavrao Deshmukh, Walmikrao Katkade and other dignitaries too were present on the occasion.



Sri Prashant Srivastav, Sai devotee from Noida having donated a silver throne, a photo frame and a slab weighing 21.502 kgs. costing Rs. 7,74,072/-, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan performed the ritual worship of these items. Of these the throne and photo frame will be used in the Samadhi Mandir to place the photo of Shri Sai Baba and the slab will be used to keep the Paduka and the Satka in the palanquin that is taken out every Thursday.



Messrs. Gem Enviro Management Pvt. Ltd., Delhi, donated 5 units of Pet Bottle Reverse Machines each costing Rs. 6.5 lakhs for keeping the premises of the Sansthan free of plastic waste. Sri Dilip Gandhi, Member of Parliament and Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan inaugurating one of those machines as a representative (of all the machines)... Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee, Smt. Nilima Dwivedi, Vice Chairperson of Messrs. Gem Enviro Management Pvt. Ltd., Sri Sachin Sharma, Director and Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors graced the occasion.



Friday, September 7, 2018 : Smt. Pankaja Gopinath Munde, Minister of Rural Development and Women and Child Development, Maharashtra State with Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee, Sou. Snehalatatai Kolhe, Legislator and other dignitaries...



Smt. Pankaja Gopinath Munde, Minister of Rural Development and Women and Child Development, Maharashtra State, being felicitated after the Darshan on behalf of the Sansthan by Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Bhausahab Wakchaure, Trustee and Sou. Snehalatatai Kolhe, Legislator...



On the occasion of the completion of 100 years of the scripting of Shri Sai Nath Stavanmanjari at the collective reading programme of the reading of Shri Sai Nath Stavanmanjari organized by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, in the Shri Sai Baba Samadhi Centenary mandap beside the Hanuman temple in Shirdi, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan, Sou. Yogitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council... with Swami Kashikanandji Maharaj, Mahant of Sant Gnyaneshwar Maharaj Ashram in Nimgaon, H.B.P. Sri Vikram Nandedkar, a representative from the Dasganu Pratishthan Samadhi Place, Gorate and Sri Sunil Garudkar, a representative from the birthplace of the saint poet Dasganu Maharaj in Akolner, reading... Sri Suryabhan Game, Administrative Officer of the Sansthan, employees and villagers in large numbers were present on the occasion.





Saturday, September 15, 2018: Sri Dattu Bhoknal Olympic Gold medalist...

... How could there be birth or death for Sai, Who is Parabrahma Himself! Knowing that Brahma is Truth and the world a mirage, how could He have body consciousness!... Sai Samartha abandoned His body as per His own will and burnt the body in the Yoga Agni (fire). He became one with unseen, but remained eternally in the hearts of the devotees...

- Shri Sai Sat Charita -



The cheque of Rs. 5 crores for the aid to the flood affected people in Kerala was recently handed over to the Chief Minister of Maharashtra, Sri Devendra Fadnis by Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan and Prof. Ram Shinde, Minister of Water Conservation and Guardian Minister of Ahmednagar district. Sri Madan Yerawar, Minister of State for PWD, Sri D. K. Jain, Chief Secretary of Maharashtra, Sri Bhushan Gagrani, Principal Secretary at the Chief Minister's Office and the Sansthan's Chief Executive Officer, Smt. Rubal Agarwal were present on the occasion.



Sunday, September 30, 2018 : Sri Devendra Fadnavis, Chief Minister of Maharashtra, with Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri Dilip Gandhi, Member of Parliament, Sri Bhausaheb Wakchaure and Sri Bipindada Kolhe, Trustees, Sou. Snehalatatai Kolhe, Legislator, Sri Rahul Dwivedi, Collector, Sri Vishwajeet Mane, Chief Executive Officer of district council...



Sri Devendra Fadnavis, Chief Minister of Maharashtra, being felicitated after the Darshan on behalf of the Sansthan by Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri Bhausaheb Wakchaure and Sri Bipindada Kolhe, Trustees...

श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव - २०१८ मुख्य दिन (शुक्रवार, दिनांक २७.७.२०१८)



संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे व उनकी सुविद्य पत्नी सौ. नलिनी हावरे के हाथों श्री साईं बाबा की विधिवत् पादपूजा...



मुख्य दिन श्री साईं की तस्वीर (संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम व विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाकचौरे), वीणा (विश्वस्त श्री बिपीनदादा कोल्हे), 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके) की शोभायात्रा द्वारकामाई से वापस समाधि मंदिर की ओर; साथ में अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त अंड. मोहन जयकर, श्री सचिन तांबे, उप जिलाधिकारी श्री धनंजय निकम व श्री मनोज घोडे पाटिल, सौ. नलिनी हावरे, सौ. सरस्वती वाकचौरे, सौ. स्मिता जयकर, ग्रामवासी और साईं भक्त...



श्री गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे व उनकी सुविद्य पत्नी सौ. नलिनी हावरे के हाथों लेंडीबाग में श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी स्तम्भ के ध्वज का विधिवत् पूजन करने के बाद ध्वज बदला गया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाकचौरे, श्री बिपीनदादा कोल्हे, अंड. मोहन जयकर, विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके, उप जिलाधिकारी श्री धनंजय निकम व श्री मनोज घोडे पाटिल, सौ. सरस्वती वाकचौरे, सौ. स्मिता जयकर आदि मान्यवर उपस्थित थे।...

श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव - २०१८ समापन दिन (शनिवार, दिनांक २८.७.२०१८)



संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल और श्री प्रखर अग्रवाल के हाथों श्री साई बाबा की विधिवत् पादपूजा...



संस्थान के उप जिलाधिकारी श्री धनंजय निकम व सौ. मनाली निकम के हाथों गुरुस्थान में रुद्राभिषेक...



श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा सॅप प्रिंट सोल्युशन्स प्रा. लि., २८, लक्ष्मी इंडस्ट्रियल इस्टेट, एस. एन. पथ, लोअर परेल (प.), मुम्बई - ४०० ०१३ में मुद्रित और साई निकेतन, ८०४ बी, डा. आम्बेडकर रोड, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। * सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी * कार्यकारी सम्पादक : विद्याधर ताठे